RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 मार्च 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 मार्च-01 अप्रैल 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 24
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

अभिमोक्षम

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धुकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

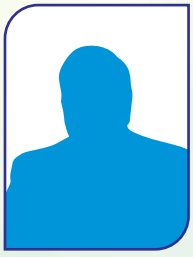

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

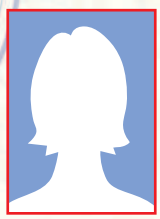
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्रीमती संतोषदेवी मोदी
भिलाई
MID No. 135692

श्री कमलजी बैद
मुंबई
MID No. 141022

चतुर्थ चरण

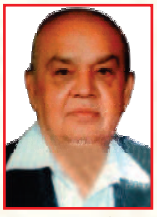
श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा- गुंडरदेही * श्रीमती मनोरमा देवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री विजय कुमार जी गोलछा (कमला देवी गोलछा)-बीकानेर * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्रीमती गुलाब देवी भंसाली-गंगाशहर * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव

महत्तम महोत्सव अब है महत्तम 'शिखर'

व्यक्ति, श्रावक, साधक ऐसे ही महत्तम नहीं बन जाता। इसके लिए महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेनी होती है। उनके जीवन के संस्मरण रूपी फूलों से खुशबू लेनी होती है, जो महापुरुष अपनी प्रज्ञा से सभी को निष्पृह भाव से प्रदान करते हैं। ऊर्जा लेनी होती है महापुरुषों की संयम साधना से, तब जाकर व्यक्ति महत्तम बन शिखर आरूढ़ हो सकता है।

शिखर पर आरूढ़ होने के लिए नींव बनना अवश्यंभावी है और महत्तम शिखर की नींव है इसके नौ बिंदु व मंजिल **'शिखर'** है आध्यात्मिक उत्थान से सर्वांगीण विकास। हम सभी ने 13 जुलाई 2022 से अब तक आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव को 'महत्तम महोत्सव' के रूप में मनाया है। अब समय आ गया है **'शिखर'** में प्रवेश करने का। तो हम सभी मिलकर **21 फरवरी 2024 से 09 फरवरी 2025 तक** आचार्य श्री रामेश के 50वें दीक्षा वर्ष को **'महत्तम शिखर'** के रूप में अपने जीवन का अंग बनाएँगे।

इस महत्तम शिखर में हमको साधना के शिखर पुरुष, चेतना के पवित्र प्रवाह, अनुपम, अद्वितीय, अप्रतिम युगपुरुष की स्वर्णिम संयम यात्रा से रूबरू होकर दूसरों को भी इससे जोड़ना है और यही **'शिखर'** आरोहण है। इन महापुरुष का जीवन बोलता है, उनकी साधना की खुशबू, अदम्य पुरुषार्थ की झलक चारों ओर फैली हुई है।

रूबरू होना व करना – कनेक्टिविटी

9 बिंदुओं का मनन कर अपने आपको जोड़ना। जो नहीं जुड़े हैं उनको जोड़ने का लक्ष्य कर सफलता पाना। इससे स्वयं पुण्यवानी बाँधकर दूसरों को भी पुण्यवानी का बंध होना निश्चित है।

मार्ग सरल भी है तो थोड़ा कठिन भी

सरल इसलिए कि केवल प्रभावना कर प्रेरित करना है और थोड़ा कठिन इसलिए कि अपने साथ-साथ ऐसे लोगों के भी कदमों को गति देना है, जो उन संयमशील युगपुरुष के उत्कृष्ट संयमी जीवन, विचारों एवं व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर 'शिखर' पर आरूढ़ होना चाहते हैं। यह मत देखो कि कौन क्या कर रहा है। यह देखो कि मैं क्या कर रहा हूँ। समय है उत्साह, उल्लास, श्रद्धा, समर्पणा, जिम्मेदारी एवं वात्सल्यता से महत्तम शिखर मनाने का।

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु संथारा साधिका कस्तूर बाई मोदी

जन्म स्थान	:	बानसेन, जि. चित्तौड़गढ़ (राज.)
मूल निवासी	:	भदेसर, जि. चित्तौड़गढ़ (राज.)
आयु	:	95 वर्ष
धार्मिक अध्ययन	:	सामायिक सूत्र एवं स्तवन आदि
तपाराधना	:	नवपद ओली, बारह, ग्यारह, नौ एवं अनेक अठाइयाँ

पारिवारिक परिचय

ससुर जी-सासु जी	:	स्व. श्री पन्नालाल जी-स्व. श्रीमती टीपू बाई मोदी
पिता जी-माता जी	:	स्व. श्री डालचंद जी-स्व. श्रीमती पानी बाई लोढ़ा, बानसेन
पति	:	स्व. श्री शांतिलाल जी मोदी
पुत्र-पुत्रवधू	:	मनोहरलाल जी-स्व. श्रीमती मुन्ना देवी, कन्हैयालाल जी-सुमन देवी, हिम्मतलाल जी-प्रीतम बाला, स्व. श्री राज कुमार जी-शीला देवी, स्व. श्री विजय कुमार जी-मंजू देवी, अभय कुमार जी-सीमा देवी, संजय कुमार जी-विजयलक्ष्मी जी, नरेंद्र कुमार जी मोदी
पुत्रियाँ-दामाद	:	कमला बाई-मदनलाल जी चंडालिया, लीला देवी-हिम्मतलाल जी मुरड़िया
पौत्र-पौत्रियाँ	:	अनिल, तेज सिंह, आशीष, मनोज, संदीप, दीपक, विमल, विपुल, रौनक, नमन, आयुष, अनिता, रिंकेश, खुशबू, साक्षी, पलक, देशना
दोहित्र-दोहित्रियाँ	:	कमल, विनोद, चेतन, तारा, शिल्पा, समता
बहिनें	:	स्व. श्रीमती कंचन बाई, श्रीमती लहर बाई
परिवार से दीक्षित	:	साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय सुपुत्री)

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सायली जी बाफणा

जन्म स्थान	:	औरंगाबाद (महा.)
मूल निवासी	:	निफाड़ (महा.)
जन्म तिथि	:	26 मार्च, 1996
वैराग्यकाल	:	लगभग साढ़े 5 साल
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम.
धार्मिक अध्ययन	:	पुच्छिंसु णं, श्री दशवैकालिक सूत्र एवं श्री उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, गति-आगति, भगवती सूत्र एवं प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन सिद्धांत भूषण, जैन सिद्धांत कोविद
पदयात्रा	:	लगभग 500 किमी.
तपाराधना	:	नौ एवं तेला
संभावित दीक्षा तिथि	:	26 अप्रैल 2024

पारिवारिक परिचय

दादा जी-दादी जी	:	स्व. श्री जवरीलाल जी-पाना बाई बाफणा स्व. श्री नेमीचंद जी-विमल बाई बाफणा
पिता जी-माता जी	:	विजय कुमार जी-सुनीता जी बाफणा
चाचा जी-चाची जी	:	दिलीप जी-मधुबाला जी, महेश जी-हेमलता जी, स्व. संतोष जी-ममता जी बाफणा
भाई, बहिन	:	शुभम, श्रेयांस, वर्धमान, ऋषभ, साहिल, वेदिका, स्नेहा बाफणा
भुआ जी-फूफा जी	:	सुवर्णा जी-राजेंद्र जी भंसाली, रूई, मनीषा जी-सुनील जी नाहटा, घोटी, चंदा जी-मनोज जी बुरड़, नासिक, विनोद जी-वंदा जी बरड़िया, नासिक, सीमा जी-अलकेश जी कर्नावट, नासिक
नाना जी-नानी जी	:	स्व. श्री अशोक जी-कंचन बाई साँखला, औरंगाबाद
मामा जी-मामी जी	:	महावीर जी-दिपाली जी साँखला
मौसी जी-मौसा जी	:	सुरेखा जी-भागचंद जी पींचा, पुणे, मनीषा जी-संतोष जी ललवाणी, पुणे, अंजू जी, राखी जी साँखला, औरंगाबाद

// जय गुरु नाना // // जय महावीर // // जय गुरु राम //

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

– साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए –

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

- कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं।
- छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के स्कूल के खाते में प्रदान की जाएगी।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि श्रीसंघ की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

Please Scan

फॉर्म के लिए यहाँ स्केन करें।

संपर्क सूत्र : 6375633109

तीनों इकाइयों के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं स्थानीय अध्यक्ष/मंत्री से करबद्ध निवेदन है कि अपने क्षेत्र में समता छात्रवृत्ति की प्रभावना करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हो सकें।

फॉर्म भरकर हार्डकॉपी पोस्ट या कूरियर द्वारा निम्न पते पर भेजें–

प्रधान कार्यालय : 'समता भवन', आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर, 334401 (राज.)

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

राम चमकते भानु समाना

अक्षय तृतीया

महत्तम महोत्सव
मेरा महोत्सव

MAY
2024
10

अक्षय तृतीया है यह पर्व महान,
पारणा करते हैं तपस्वी धन्यवान।
3100 एकासन करें हम भी समर्पण,
भेंट यह गुरुचरणों में करें हम अर्पण।।

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ. भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह..... 10
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला..... 14
संस्कार सौरभ : व्यसनमुक्ति..... 16
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 17
गुरुचरण विहार..... 18
विविध समाचार..... 31
पक्खी की टीप..... 35
विविध भेंट मार्फत..... 42
विनम्र श्रद्धांजलि..... 48
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 50
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ..... 54
विहार सूची..... 58

संस्कार

सुविचार

खोद के खदान, मिट्टी एक-सी निकाली सारी।
भाजन बनाना कैसा, कुंभकार हाथ है।।
स्वर्ण खंड नथफूल, हार व कंगन कैसा।
बनेगा आधार यह, स्वर्णकार हाथ है।।
एक ही पाषाण खंड, जड़ना पाखाने बीच।
अथवा पूजाना उसे, कारीगर हाथ है।।
वैसे ही संतति मुनि-गौतम बनाना कैसी।
जननी के हाथ सब, सच-सच बात है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

कैसी हो नेता की सोच

चिंतन

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

कुछ ही लोग महत्त्वपूर्ण हुआ करते हैं, किंतु कुछ ही व्यक्ति सब कुछ नहीं होते। यह निश्चित है कि नेतृत्व की क्षमता कुछ ही लोगों में पाई जाती है। सफल नेताओं की संख्या तो और भी कम मिलेगी। नेतृत्वकर्ता को जनता की आवाज भी सुननी चाहिए। वह यदि कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित हो जाए तो उससे बहुत बड़ी हानि की भी संभावना बनी रहती है। किसी भी विषय का सर्वे करना हो तो सभी वर्ग के व्यक्तियों को उसमें शामिल करना जरूरी है। यानी हर वर्ग के सदस्यों के विचारों को जानना जरूरी होता है। किसी वर्ग के विचारों को सुनकर किया गया सर्वे, सर्वे नहीं माना जा सकता। वह किसी एक वर्ग विशेष का विचार हो सकता है, सर्वे नहीं। सर्वे में अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, युवा-बुजुर्ग, व्यापारी-किसान आदि सभी वर्गों के मत जाने जाते हैं। उसके आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। नेतृत्व को भी किसी विषय में निर्णय लेना हो तो सर्वत्र अपनी दृष्टि को प्रसारित करना चाहिए। अनेक स्थलों पर, अनेक व्यक्तियों के मुख से जो सुना जा रहा है, उसमें वर्तमान नेतृत्व वर्ग पर विश्वास कम, असंतोष ज्यादा श्रुतिगत हो रहा है। इसमें कारण कुछ भी रहे हों, किंतु चिंतन के लिए विषय तो बनता ही है। यद्यपि जहाँ पक्ष-विपक्ष होता है, वहाँ आलोचनाएँ न हों, यह संभव ही नहीं है। आलोचना होना ही किसी की सफलता या असफलता का हेतु नहीं है। उसमें भी देखना चाहिए कि आलोचना करने वाला कौन है? उसका स्वयं का नेचर कैसा है? कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो आलोचना में रत रहते हैं, उन्हें कोई विषय मिले फ्श न मिले, वे विषय बना लिया करते हैं। आलोचना करने वाला किस वर्ग या पक्ष का है, उसके आधार पर ही जाना सकता है कि तथ्य क्या है? नेतृत्व को तथ्य तक पहुँचने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। न तो उसे आलोचना में बने रहने का ही लक्ष्य रखना चाहिए और न ही आलोचना से पस्त ही होना चाहिए। वह स्वयं आलोचक न हो। उसे अपनी दृष्टि तथ्यों पर केंद्रित रखनी चाहिए। कान पूरे खुले नहीं तो पूरे बंद भी नहीं रखने चाहिए। यदि सामान्य वर्ग में वस्तुत: असंतोष व्याप्त हो रहा हो तो उस पर उसका ध्यान अवश्य जाना चाहिए।

फाल्गुन शुक्ल 4, शनिवार, 12.03.2016, साभार- आरोह

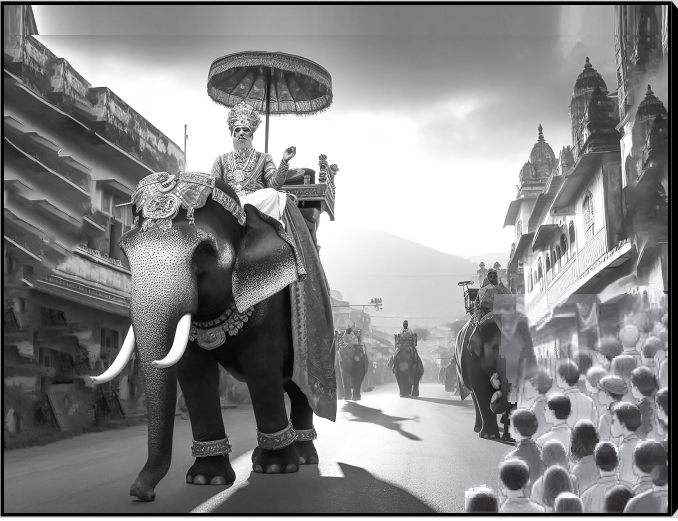

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

कुण्डिनपुर में

28-29 फरवरी 2024 अंक से आगे....

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

मनुष्य के पतन का सबसे बड़ा कारण अभिमान है। अभिमान के कारण मनुष्य का जितना अधिक पतन होता है उतना पतन किसी और कारण से शायद ही होता हो। अभिमान के वश हुआ मनुष्य पतित से भी पतित कार्य करता जाता है, फिर भी वह उस पतित कार्य को अपने गौरव का कारण मानता है। उस पतित कार्य पर भी उसे गर्व होता है।

धन, राज्य अथवा बल से पुष्ट अभिमान तो मनुष्य को पतन की चरम सीमा तक पहुँचा देता है। ऐसे अभिमान से भरा हआ व्यक्ति धन, राज्य अथवा बल का अधिक से अधिक उपयोग अपना अभिमान बढ़ाने में ही करता है। उसमें से सरलता, सहिष्णुता और नम्रता निकल जाती है। वह अभिमान में पड़कर असरलता, कठोरता और असहिष्णुता का व्यवहार करने लगता है। उसमें एक प्रकार की विक्षिप्तता आ जाती है, जो उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है। गर्वोन्मत्त व्यक्ति उस कार्य में आगे बढ़ता ही जाता है, जिसके लिए उसने गर्वपूर्वक विचार किया हो। ऐसा करने में फिर चाहे उसे धर्म, न्याय और सत्य को पददलित करना पड़े, तब भी वह पीछे नहीं हटेगा, किंतु इन्हें पददलित करता हुआ बढ़ता ही जाएगा। उस कार्य के परिणाम पर विचार करने की बुद्धि तो उसमें रहती ही नहीं है। उसमें केवल अपनी बात, अपने सम्मान और अपनी कीर्ति रक्षा की ही बुद्धि रहती है। वह पहाड़ जैसे बड़े, दूध जैसे उज्ज्वल और सूर्य जैसे प्रत्यक्ष सत्य, न्याय और धर्म की भी हत्या कर डालता है, रुकता नहीं है। वह जब भी रुकता है अपने से बड़ी शक्ति की टक्कर से पिछड़कर ही। फिर वह शक्ति राजसी, तामसी अथवा सात्विक कैसी भी क्यों न हो, परंतु उसका अभिमान तो तभी उतरता है जब वह किसी बड़ी शक्ति से टकराकर गिरता है। अपने से बड़ी शक्ति से टकराकर गिरने के पश्चात् वह अभिमानी व्यक्ति वैसा ही बन जाता है जैसी शक्ति की टक्कर से उसका अभिमान उतरा है। यदि वह सात्विक शक्ति की टक्कर से गिरता है यानी क्षमा, दया, सहिष्णुता के संघर्ष या इनके उपदेश से उसका अभिमान उतरता है, तब तो वह भी क्षमाशील, दयालु और सहिष्णु बन जाता है। फिर उसमें से अभिमान सदा के लिए नष्ट हो जाता है। यह बात कतिपय उदाहरणों पर दृष्टि डालने से अधिक पुष्ट हो जाती है। अर्जुन माली सुदर्शन सेठ की सात्विक शक्ति से टकराकर गिरा था। परिणामत: वह स्वयं भी सात्विक प्रकृति का बन गया। परदेशी राजा भी केशीश्रमण की सात्विक शक्ति के उपदेश से टकराकर गिरा और सात्विक प्रकृति का बन गया। चंडकौशिक सर्प भी भगवान महावीर की सात्विक प्रकृति के संघर्ष से सात्विक प्रकृति का बन गया। सात्विक शक्ति से टकराकर गिरने वाला अभिमानी सात्विक प्रकृति का ही बन जाता है। इसी प्रकार राजसी और तामसी शक्ति से टकराकर गिरने वाला राजसी और तामसी

प्रकृति का बन जाता है। दुर्योधन पांडवों की राजसी शक्ति से टकराकर कई बार गिरा, परंतु वह अधिकाधिक राजसी प्रकृति का ही बनता गया और अंत में उसका नाश ही हुआ। तामसी प्रकृति से टकराकर गिरने पर तामसी प्रकृति के बनने के उदाहरण तो प्राय: देखने में आया ही करते हैं।

तात्पर्य यह है कि किसी बड़ी शक्ति से टकराकर गिरने पर अभिमानी का गर्व तो टूट जाता है, परंतु एक शक्ति ऐसी होती है कि जिससे टकराकर गिरने पर आत्मा कल्याण की ओर अग्रसर हो जाती है और दूसरी शक्ति ऐसी होती है कि जिससे टकराकर गिरने पर आत्मा अवनति की ओर अधिक बढ़ जाती है। फिर उसका अभिमान क्रोध, प्रतिहिंसा आदि में परिणत हो जाता है।

शिशुपाल और रुक्म दोनों ही अभिमानी थे। अभिमान के वश होकर दोनों ने ही किसी की हितशिक्षा नहीं मानी। दोनों गर्वोन्मत्त होकर सत्य, न्याय और धर्म को पददलित करते हुए बढ़ते जा रहे हैं। देखना है कि दोनों किसी महाशक्ति से टकराकर गिरते हैं और फिर भविष्य कैसा बनता है?

सरसत भाट जैसे ही शिशुपाल को टीका चढ़ाकर लौटा, वैसे ही रुक्म ने विवाह संबंधी समस्त तैयारी प्रारंभ कर दी। उसने सारे नगर को भली-भाँति सजवाया। बाजार, मार्ग, उद्यान आदि के सौंदर्य में वृद्धि कराई। बारात और आमंत्रित राजाओं के ठहरने के लिए अनेक महल सजवाए तथा कई नए महल बनवाए। सब स्थानों पर खान-पान की सामग्री रखकर सेवक नियुक्त कर दिए गए। यह सब करने के साथ ही उसने युद्ध की भी तैयारी कराई। जिन सैनिकों को युद्ध शिक्षा मिली, उनका मान-सम्मान करके उन्हें संतुष्ट किया और भविष्य के विषय में भी आशा बँधाई गई।

एक ओर तो रुक्म विवाह की तैयारी में लगा है, दूसरी ओर महाराज भीम दर्शक की भाँति सब देख-सुन रहे हैं और तीसरी तरफ रुक्मिणी कृष्णानुरागिनी बनकर अपना अनुराग पूरा करने का विचार कर रही है। महाराज भीम का साथी उनका चतुर और बुद्धिमान मंत्री है। रुक्मिणी का साथ देने वाली महाराज भीम की बहिन है, जो बुद्धिमती है और रुक्म का साथ देने वाली उसकी अदूरदर्शी माता है। महाराज भीम रुक्मिणी का विवाह कृष्ण के साथ होने के पक्षपाती होते हुए भी रुक्मिणी के विवाह संबंधी कार्य अथवा विचार में कोई भाग नहीं लेते, न उन्हें अपनी इच्छा पूरी होने का कोई प्रत्यक्ष कारण ही दिखाई देता है। इसलिए भीम के विषय में किसी प्रकार का परिणाम देखने की आवश्यकता नहीं रहती। परिणाम तो रुक्मिणी और रुक्म के परस्पर विरोधी विचारों का, देखना है कि किसका विचार सफल होता है और किसका निष्फल।

रुक्म विवाह संबंधी तैयारी तो कर चुका था, परंतु उसके मन में शिशुपाल की ओर से संदेह था कि कहीं शिशुपाल कृष्ण से भय न खा जाए अथवा किसी के बहकावे में न आ जाए। इस संदेह के कारण उसने रुक्मिणी को तेल नहीं चढ़वाया था और चंदेरी में अपने गुप्तचर नियुक्त कर रखे थे कि वे चंदेरी से बारात विदा होते ही खबर दें। उसका विचार था कि बारात की चढ़ाई की खबर मिल जाने पर ही रुक्मिणी को तेल चढ़ाया जाए। पहले तेल चढ़ा देने पर यदि शिशुपाल नहीं आया तो मेरे लिए बड़ी लज्जा की बात होगी।

रुक्म को चंदेरी में नियुक्त गुप्तचरों की तरफ से धावक द्वारा यह समाचार मिला कि शिशुपाल बारात लेकर कुण्डिनपुर की ओर प्रस्थान कर चुका है और बारात में ऐसे-ऐसे इतने मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि हैं। यह समाचार पाकर रुक्म को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसका संदेह मिट गया। उसने आज्ञा दी कि राजमहल में मंगलाचार किया जाए और रुक्मिणी को तेल चढ़ाया जाए। रुक्म की आज्ञानुसार रुक्म की माता राजमहल में मंगलगान कराने लगी। उसने रुक्मिणी को तेल चढ़ाने के लिए सुहागिन स्त्रियों को बुलवाया और रुक्मिणी की सखियों को आज्ञा दी कि रुक्मिणी का शृंगार करवाकर ले आओ, जिससे उसे तेल चढ़ाया जाए।

रुक्मिणी की सखियाँ प्रसन्न होती हुई रुक्मिणी

के पास गई। वे खिन्न रुक्मिणी से कहने लगी- ''सखी! शुभ समय में तुम उदास क्यों बैठी हो? तुम्हारे लिए तो चंदेरीराज महाराज शिशुपाल बारात लेकर आ रहे हैं और तुम मलिन वस्त्र पहने बैठी हो! चलो, महारानी तुम्हें बुला रही हैं। आज तुम्हें तेल चढ़ाने का दिन है। दो-चार दिन में बारात भी आ जाएगी। आओ, तुम्हारा शृंगार कर दें। विलंब मत करो, विलंब होने पर शुभ मुहूर्त्त बीत जाएगा।''

सखियों की बात सुनकर भी रुक्मिणी वैसी ही गंभीर बनी रही। उसने गंभीरतापूर्वक सखियों से कहा- ''सखियो! तुम जाओ और उसे तेल चढ़ाओ, जिससे विवाह करने के लिए शिशुपाल बारात सजाकर आ रहा है। मुझे न तो शृंगार ही सजवाना है और ना ही तेल चढ़वाना है।''

सखियाँ- ''महारानी जी आपके लिए बैठी हैं, सुहागिनें तेल चढ़ाने के लिए मंगलगान कर रही हैं। बारात मार्ग में है। नगर में विवाह की धूम मच रही है और जिसका विवाह है, वह इस प्रकार उत्तर दे रही है। शिशुपाल और किसके लिए बारात सजाकर आएँगे? वे तो तुम्हारे लिए ही आ रहे हैं। इसलिए उठो, देर मत करो। मंगल कार्य के समय इस प्रकार की आनाकानी अच्छी नहीं होती।''

रुक्मिणी- ''बस सखियो! इस विषय में मुझसे कुछ और न कहो। मुझे न तो शिशुपाल के साथ विवाह करना है और न ही तेल चढ़वाना है। मेरा विवाह जिसके साथ होना था, उसके साथ हो चुका। अब दूसरे के साथ कदापि नहीं हो सकता। तुम जाकर माता से भी ऐसा ही कह दो।''

सखियाँ- ''बहन रुक्मिणी! तुम यह क्या कह रही हो, जरा विचारो। बड़े पुण्यव्रत के प्रताप से शिशुपाल जैसा वीर, पराक्रमी, वैभवशाली और सुंदर पति प्राप्त हो सकता है। तुम्हें ऐसे पति की पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, लेकिन तुम्हारी बातों से जान पड़ता है कि तुम्हारे भाग्य में कुछ और ही लिखा है। इसी कारण तुम इस प्राप्त सुअवसर को ठुकरा रही हो।''

रुक्मिणी- ''सखियो! तुम लोगों का अधिक वाद-विवाद में पड़ना ठीक नहीं। मेरा विवाह कृष्ण के साथ हो चुका है। अब इस जन्म में तो विवाह किसी दूसरे के साथ नहीं हो सकता। मेरा भाग्य कैसा है, इसे मैं ही जानती हूँ। मेरे भाग्य की बात तुम लोग नहीं जान सकतीं।''

रुक्मिणी की सखियाँ निराश होकर लौट गई। उन्होंने रुक्मिणी का उत्तर रुक्मिणी की माता को सुनाकर कहा कि रुक्मिणी कृष्ण को अपना पति बना चुकी है। इसलिए अब वह शिशुपाल के साथ विवाह करने को तैयार नहीं है और न ही वह तेल चढ़वाने के लिए आ रही है। रुक्मिणी की सखियों द्वारा रुक्मिणी का उत्तर सुनकर रुक्मिणी की माता को बहुत दुःख हुआ। उसने एकत्रित सुहागिनों को यह कहकर विदा कर दिया कि रुक्मिणी का स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं है। इसलिए आज रुक्मिणी को तेल नहीं चढ़ाया जा सकेगा।

रुक्मिणी की माता को रुक्मिणी के उत्तर से बहुत चिंता हुई। उसे इस बात की आशंका ने कंपा दिया कि यदि रुक्मिणी ने अपना विचार नहीं बदला तो क्या परिणाम होगा? मैंने पति की बात से असहमत होकर पुत्र की बात का समर्थन किया, परंतु क्या पता था कि पुत्री के हृदय में कुछ और ही है। यदि रुक्मिणी अपने विचार पर दृढ़ रही तो और जो कुछ होगा वह तो होगा ही, लेकिन मैं पति को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहूँगी। इस प्रकार भविष्य की चिंता से व्याकुल रुक्मिणी की माता रुक्मिणी के पास आई। उसने देखा कि रुक्मिणी विचारमग्न बैठी है। वह प्यार जताती हुई रुक्मिणी से कहने लगी- ''पुत्री! तुझे क्या हुआ है? कहीं विवाह जैसे शुभ कार्य के मुहूर्त्त के समय में भी इस प्रकार उदास होकर बैठा जाता है? सारे नगर में तो आनंद हो रहा है, सब लोग हर्षित हैं और तू इस प्रकार उदास है। मैं तेरी अशुभचिंतिका तो हूँ नहीं, न तेरा भाई रुक्म ही तेरा अशुभचिंतक है। हमने तेरे सुख के

लिए विरोध सहा और शिशुपाल जैसे पुरुष के साथ तेरा विवाह संबंध स्थापित किया, फिर तू क्या विचार कर इस तरह रूठी है? आज सारे संसार में ढूँढ़ने पर भी शिशुपाल जैसा पुरुष नहीं मिल सकता। वह सुंदर है, युवा है, बलवान है, वीर है, राज्य वैभव संपन्न है। 99 राजा उसके अधीन हैं और महाराज जरासंध उनसे मित्रता रखते हैं। ऐसा पुरुष कोई साधारण पुरुष है? ऐसे पुरुष के साथ विवाह करने की इच्छा कौन कन्या न रखेगी? अनेक राजकुमारियाँ उनसे अपना पाणिग्रहण करने की प्रार्थना करती हैं। फिर भी उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त नहीं होता, जो सौभाग्य रुक्म की कृपा से तुझे बिना श्रम के ही प्राप्त हो रहा है। शिशुपाल तेरे साथ विवाह करना कदापि पसंद नहीं करते, यदि रुक्म की उनसे मित्रता नहीं होती। रुक्म से मित्रता का संबंध होने से ही उन्होंने यह विवाह स्वीकार किया है। तुझे रुक्म का अत्यंत आभार मानना चाहिए, लेकिन तूने सखियों को जो उत्तर दिया, उससे तो जान पड़ता है कि तू रुक्म के सम्मान और परिश्रम को मिट्टी में मिलाना चाहती है। क्या तुझे ऐसा करना उचित है? उठ चल, इस शुभ मुहूर्त्त में सुहागिनों से तेल चढ़वा ले, तू नहीं आई इससे मैंने सुहागिनों को विदा कर दिया है, परंतु कोई हर्ज नहीं, मैं उन्हें अभी बुलवाए देती हूँ।''

रुक्मिणी की माता तो समझ रही थी कि मेरी बातों का रुक्मिणी के हृदय पर अनुकूल प्रभाव पड़ रहा होगा, परंतु रुक्मिणी को माता की बातें शूल की तरह चुभ रही थी। वह सोच रही थी कि यदि माता ऐसी बातें न कहे तो अच्छा। माता की बात समाप्त होने पर रुक्मिणी कहने लगी- ''माता! मेरा विवाह हो चुका। अब मेरा विवाह नहीं हो सकता। आर्यपुत्री का विवाह एक ही बार होता है, एक बार से अधिक नहीं होता। मैं शिशुपाल की निंदा नहीं करती। वह जैसा आप कहती हैं, वैसा ही होगा, परंतु मेरे लिए तो वह किसी काम का नहीं है। मैंने जिसे अपना पति बनाया है, उससे बढ़कर सुंदर, वीर, पराक्रमी तथा ऋद्धि-समृद्ध कोई पुरुष है ही नहीं और कदाचित् हो भी तो मैं ऐसा मानने को तैयार नहीं। खेद की बात तो यह है कि आप माता होकर और मेरा उत्तर सुनकर भी मुझसे शिशुपाल के साथ विवाह करने का आग्रह कर रही हैं। आश्चर्य है कि आप अपनी पुत्री को व्यभिचार सिखाना चाहती हैं। आप भाई के लिए कहती हैं कि भाई ने मेरे ऊपर उपकार किया है, परंतु मैं ऐसा नहीं समझती। भाई ने अपना स्वार्थ देखा है, न कि मुझ पर कृपा की है। भाई को उचित तो यह था कि वह पिता की बात का विरोध नहीं करके मेरी इच्छा जानने की चेष्टा करता, परंतु उसने स्वार्थ और हठ के वश मेरी इच्छा के विरुद्ध दूसरे के यहाँ टीका भेज दिया। ऐसी दशा में भाई का मुझ पर क्या उपकार है? आपने भी तो मेरे साथ होने वाले अन्याय का प्रतिकार करने के बदले भाई का साथ दिया है। अब आप मुझसे भाई की और आपकी बात रखने को कहती हैं। मुझसे यह कैसे हो सकता है कि आपकी बात रखने के लिए मैं धर्म और अपने जीवन को नष्ट कर डालूँ? इस भव में मुझसे आपकी इच्छानुसार कार्य नहीं होगा। मैं अपना यह शरीर अग्नि को तो अर्पण कर सकती हूँ, परंतु श्रीकृष्ण के सिवाय दूसरे पुरुष को अर्पण नहीं कर सकती। आप चाहें मेरी निंदा करें या प्रशंसा। मैं उस मार्ग को कदापि नहीं त्याग सकती, जो धर्म तथा न्याय द्वारा अनुमोदित एवं अनेक आर्य कन्याओं द्वारा आचरित है और जिस पर मुझे विश्वास है। आप शिशुपाल को सूचित कर दीजिए कि यदि वह मुझे पाने की आशा से आया है तो चुपचाप लौट जाए। उसे मैं तो क्या मेरी परछाई भी नहीं मिल सकती।''

रुक्मिणी को जो कुछ कहना था, उसने माता से स्पष्ट कह दिया, लेकिन माता रुक्मिणी के उत्तर में तर्क करके रुक्मिणी को समझाने की चेष्टा करते हुए फिर कहने लगी- ''पुत्री! मैं तुझे दूसरा पति बनाने को कब कह रही हूँ और ऐसा कह भी कैसे सकती हूँ? अभी तेरा विवाह कहाँ हुआ है, जो तू कहती है कि मेरा विवाह हो चुका है?''

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

28-29 फरवरी 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मतिज्ञान

प्र.2443 जातिस्मरण ज्ञान का क्या अर्थ है?

उत्तर 'जाति' शब्द का अर्थ जन्म है। जातिस्मरण यानी जन्म का स्मरण। स्मरण अतीत का ही होता है। अत: पूर्वजन्म के स्मरण को जातिस्मरण ज्ञान कहते हैं।

प्र.2444 जातिस्मरण ज्ञान को संज्ञी ज्ञान क्यों कहते हैं?

उत्तर यह ज्ञान पर्याप्त संज्ञी जीवों को ही उत्पन्न होता है और अतीत के भी लगातार जितने संज्ञी के भव हो, उसे ही देखता है, असंज्ञी के नहीं। इसलिए जातिस्मरण ज्ञान को 'संज्ञी ज्ञान' भी कहते हैं।

प्र.2445 जातिस्मरण ज्ञान से पिछले कितने भव देख सकता है?

उत्तर श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र के 18वें पद में पर्याप्त और संज्ञी दोनों की कायस्थिति उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागरोपम झाझेरी बताई है, किंतु 'कर्मग्रंथ वृत्ति' और 'श्री आचारांगसूत्र की वृत्ति' में संख्यात भव देखना लिखा है। इस आधार से जातिस्मरण ज्ञान से अतीत के 900 भव देखने की धारणा है।

प्र.2446 जातिस्मरण ज्ञान किस ज्ञान के अंतर्गत है?

उत्तर जातिस्मरण ज्ञान धारणा मतिज्ञान के स्मृति भेद के अंतर्गत है। इस ज्ञान से पर्याप्त संज्ञी जीवों को पूर्वभव के शब्दादि रूपी-अरूपी यावत् 14 पूर्व का ज्ञान स्मरण में आ सकता है।

प्र.2447 अवग्रह के कितने भेद हैं?

उत्तर अवग्रह के दो भेद हैं - अर्थावग्रह और व्यंजनावग्रह।

प्र.2448 अर्थावग्रह पहले होता है या व्यंजनावग्रह?

उत्तर व्यंजनावग्रह पहले होता है। उसके बाद एक समय का अर्थावग्रह होता है।

प्र.2449 व्यंजनावग्रह शब्द का संधि विच्छेद करके उसकी परिभाषा लिखिए।

उत्तर व्यंजन = संबंध और अवग्रह = बोध। इंद्रिय व पुद्गल के संबंध को व्यंजनावग्रह कहते हैं।

प्र.2450 क्या व्यंजनावग्रह के पश्चात् वस्तु की आवश्यकता रहती है?

उत्तर नहीं, व्यंजनावग्रह के पश्चात् वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती है, क्योंकि इंद्रिय का पुद्गल से संबंध हो चुका है।

प्र.2451 व्यंजनावग्रह कितनी इंद्रियों से होता है?

उत्तर चक्षु इंद्रिय को छोड़कर शेष चार इंद्रियों से व्यंजनावग्रह होता है। अतः इसके कुल चार भेद हैं। मन का भी व्यंजनावग्रह नहीं होता है।

प्र.2452 चक्षु इंद्रिय और मन का व्यंजनावग्रह क्यों नहीं होता है?

उत्तर दर्पण वस्तु को स्पर्श नहीं करता है, उसी प्रकार चक्षु इंद्रिय और मन भी वस्तु को स्पर्श नहीं करते हैं, यानी उस वस्तु के पुद्गलों को ग्रहण नहीं करते हैं, किंतु उसके स्वरूप को जान लेते हैं। जैसे- समुद्र देखने वाला समुद्र के पुद्गलों को ग्रहण नहीं करता है। अतः चक्षु इंद्रिय का व्यंजनावग्रह नहीं होता है। इसी प्रकार मन का भी समझना चाहिए। इन दोनों का प्रथम समय में अर्थावग्रह ही होता है।

प्र.2453 नए शिकोरे के दृष्टांत से श्रोतेंद्रिय के व्यंजनावग्रह का वर्णन कीजिए।

उत्तर नया शिकोरा जल बिंदु को स्पर्श मात्र से ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार श्रोतेंद्रिय भी भाषा के पुद्गलों को शीघ्र ग्रहण कर लेती है।

प्र.2454 क्या एक समय प्रविष्ट भाषा के पुद्गलों से व्यंजनावग्रह का कार्य हो जाता है?

उत्तर नहीं, असंख्य समय प्रविष्ट पुद्गलों से श्रोतेंद्रिय भर जाती है तब इसका कार्य पूर्ण होता है। जैसे- शिकोरा भर जाने के बाद जल बहने में मात्र एक समय लगता है, उसी प्रकार श्रोतेंद्रिय का व्यंजनावग्रह पूर्ण होने के पश्चात् एक समय का अर्थावग्रह होता है। इसी प्रकार घ्राण इंद्रिय, रसन इंद्रिय और स्पर्श इंद्रिय का जानना चाहिए, किंतु ये तीनों इंद्रियाँ श्रोतेंद्रिय जितनी पटु (कुशल) नहीं हैं। इसलिए शीघ्रता से पुद्गलों को ग्रहण नहीं करती हैं।

प्र. 2455 श्रोतेंद्रिय भाषा के पुद्गलों को शीघ्र ग्रहण क्यों करती है?

उत्तर श्रोतेंद्रिय के पुद्गल बहुत कुशल होते हैं एवं भाषा के पुद्गल भी बहुत सूक्ष्म (छोटे) और भावुक (कोमल) होते हैं इसलिए श्रोतेंद्रिय भाषा के पुद्गलों को शीघ्र ग्रहण कर लेती है।

प्र. 2456 घ्राणेंद्रिय, रसनेंद्रिय व स्पर्शेंद्रिय पुद्गलों को शीघ्र ग्रहण क्यों नहीं करती हैं?

उत्तर
1. ये तीनों इंद्रियाँ श्रोतेंद्रिय जितनी कुशल नहीं हैं, उत्तरोत्तर मंद हैं।
2. इनके पुद्गल क्रमशः बादर और मंद कोमल हैं। जैसे- अग्नि के स्पर्श मात्र से लोहा और अग्नि एकमेक नहीं होते हैं, उसी प्रकार इन तीनों इंद्रियों का भी व्यंजनावग्रह (पुद्गलों से संबंध) श्रोतेंद्रिय जितना शीघ्र नहीं होता है।

प्र. 2457 व्यंजनावग्रह की स्थिति कितनी है?

उत्तर व्यंजनावग्रह की जघन्य स्थिति आवलिका के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व श्वासोच्छ्वास है।

प्र. 2458 व्यंजनावग्रह की उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से है?

उत्तर मंद क्षयोपशम अथवा दूरी से आए हुए पुद्गलों की अपेक्षा उत्कृष्ट स्थिति जानना चाहिए।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

व्यसनमुक्ति : संस्कार जागरण में मुख्य आयाम

-हर्षिता जैन, सूरतगढ़

व्यसन शब्द अग्रेंजी के 'एडिक्ट' शब्द का हिंदी रूपांतरण है, जिससे शारीरिक निर्भरता की स्थिति प्रकट होती है। व्यसन का अभिप्राय शरीर संचालन के लिए मादक पदार्थ का नियमित प्रयोग करना है, अन्यथा शरीर के संचालन में बाधा उत्पन्न होती है। व्यसन न केवल एक विचलित व्यवहार है अपितु एक गंभीर सामाजिक समस्या भी है। तनावों, विषादों, चिंताओं और कुंठाओं से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति कई बार असामाजिक मार्ग अपनाकर नशे की ओर बढ़ने लगता है, जो कि मात्र कुछ समय के लिए उसे आराम महसूस कराते हैं। किसी प्रकार का नशा न केवल व्यक्ति की कार्यक्षमता को घटाता है अपितु यह समाज और राष्ट्र दोनों के लिए हानिकारक है। नशीले पदार्थों की प्राप्ति हेतु व्यक्ति चोरी एवं अपराध क्रियाओं को अंजाम देने लगता है। व्यसन विभिन्न बीमारियों को आमंत्रण देने के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तस्करी, आतंकवाद और देशद्रोह को बढ़ावा देता है। सामाजिक दृष्टि से जुआ, वेश्वावृत्ति, आंतकवाद, डकैती, मारपीट, दंगा, अनुशासनहीन जैसी सामाजिक समस्याओं का मुख्य कारण व्यसन ही है। व्यसनी व्यक्ति दीर्घकालीन नशे की स्थिति में उन्मत्त रहता है तथा नशीले पदार्थों पर मानसिक एवं शारीरिक तौर पर पूर्ण आश्रित हो जाता है। इसके हानिकारक प्रभाव केवल व्यक्ति ही नहीं अपितु परिवार, समाज व राष्ट्र को भुगतने पड़ते हैं।

कहते हैं न कि एक से कुछ नहीं होता, लेकिन एक सही निर्णय पूरी जिंदगी बदल देता है। हम कभी टेंशन कम करने के लिए तो कभी गम भूलाने के लिए, कभी शौक में तो कभी दोस्तों के साथ मर्दानगी दिखाने के लिए बीड़ी, सिगरेट, शराब, गांजा पीने की शुरूआत करते हैं। ये शौक कब हमारी आदत बन जाते हैं हमें पता ही नहीं चलता। अपनी बात को एक कहानी के माध्यम से समझाने की कोशिश कर रही हूँ।

एक लड़का अपनी पढ़ाई को लेकर बहुत ही दृढ़ निश्चयी था। एक दिन उसके दोस्तों ने उसे शाम की पार्टी में बुलाया। लड़के ने मना कर दिया, पर उसके दोस्त नहीं माने और उसे जबरदस्ती वहाँ जाना पड़ा। वहाँ जाने पर शराब पीने के लिए मजबूर करते हुए कहा कि एक बार पीने से कुछ नहीं होता। उस लड़के ने शराब पी ली। फिर दोस्तों ने उसे हर महीने पार्टी में बुलाना शुरू कर दिया। अब लड़का शौक से जाने लगा और धीरे-धीरे शराब पीना उसकी आदत व मजबूरी बन गई।

नशेड़ी को जब तक कुछ महसूस होता है तब तक वह नशे की गिरफ्त में आ जाता है। लगभग लोग यह जानते ही हुए नशे के चंगुल में फंस जाते हैं कि नशा नाश का द्वार है, जानलेवा है। हमारे देश में बहुत से नशामुक्ति केंद्र हैं, जहाँ नशे से निजात मिल सकती है।

परम पूज्य आचार्य श्री रामेश फरमाते हैं कि जिसके पास इंद्रियों का संयम होगा वह अनर्थदंड से बचेगा। अत: इंद्रियों पर लगाम आवश्यक है। जैसी संगत वैसी रंगत होते देर नहीं लगती। आचार्य श्री रामेश व्यसनमुक्ति का डंका पूरे देश में बजा रहे हैं। आइए, आप और हम भी इस मुहीम से लोगों का जीवन सुधारें।

एक पल का नशा, जीवनभर सजा ही सजा।
क्यों होते हो बदनाम, बंद करो नशे का पान।।

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- ❈ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की विशेष आज्ञा से भदेसर में संथारा साधिका मुमुक्षु कस्तूर बाई मोदी की भव्य जैन भागवती दीक्षा 11 मार्च को संपन्न। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा.। संथारा अनुमोदनार्थ श्रद्धालु ग्रहण कर रहे अनेक प्रत्याख्यान।
- ❈ होली चातुर्मासार्थ आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का सान्निध्यवर्ती संतों सहित मंगलवाड़ चौराहा में भव्य मंगल प्रवेश। होली चातुर्मास के अवसर पर आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के श्रीमुख से आगामी विभिन्न चातुर्मासों की घोषणा आगारों सहित संभावित। देशभर के अनेक संघों ने गुरुचरणों में अपनी विनतियाँ प्रस्तुत कीं। अब हर एक संघ टकटकी लगाए सौभाग्य प्राप्ति हेतु आशान्वित।
- ❈ आचार्य श्री रामेश की अनुपम कृति '**नो शॉर्टकट प्लीज!**' पर नई दिल्ली में संपन्न विश्व पुस्तक मेले में चर्चा का आयोजन। पुस्तक की विषयवस्तु से अनेक जिज्ञासु लाभान्वित।
- ❈ 26 अप्रैल को भदेसर में मुमुक्षु सायली जी बाफना, निफाड़ की जैन भागवती दीक्षा संभावित।
- ❈ मेवाड़ के अनेक स्थानों से सैकड़ों गुरुभक्तों ने पैदल यात्रा कर गुरुचरणों में विनतियाँ प्रस्तुत कीं।
- ❈ व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के अंतर्गत मालवा एवं मेवाड़ सहित अनेक स्थानों, शिक्षण संस्थानों में कार्यक्रमों के आयोजन। सैकड़ों बच्चों ने लिया व्यनसमुक्ति का संकल्प।
- ❈ आचार्य श्री रामेश का 32वाँ युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर का 5वाँ उपाध्याय पदारोहण दिवस देशभर में अत्यंत श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेकानेक तपों से श्रद्धालुओं ने अपना जीवन धन्य बनाया।
- ❈ दिगंबर जैन समाज के भैरूलाल जी बसंतीलाल जी बलाला, पूर्व विधायक ललित जी ओस्तवाल आदि संघ प्रमुखों ने गुरुचरणों में उपस्थित हो दर्शन-सेवा के लाभ के साथ मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- ❈ श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति के तत्त्वावधान में केसरिया कार्यशाला के अंतर्गत आचार्य की आठ संपदाओं पर आधारित ज्ञानार्जन से महिला शक्ति लाभान्वित।
- ❈ 10 मई से 26 मई 2024 को चित्तौड़गढ़ में 'अभिमोक्षम्' शिविर का आयोजन, जिसमें 9 वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित बालक-बालिकाएँ भाग ले सकते हैं।

जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है - आचार्य श्री रामेश

मान-सम्मान से नहीं आत्मा से प्रेम करें - उपाध्याय प्रवर

गुरुचरण विहार

आगमज्ञाता राम गुरुवर, जीवन महत्तम महोत्सव है।
बहुश्रुत, वाचनाचार्य राजेश मुनि जी म.सा. की शरण उत्सव है।।
मन को प्रसन्नता दे जिनका दर्शन, मन में चेतना जगाए जिनका दर्शन।
मन को सुख-शांति दें जिनके वचन,
ऐसे महान आध्यात्मिक गुरु रामेश को कोटि-कोटि वंदन।।

निकुंभ, चिकारड़ा, मोरवन, मंगलवाड़ चौराहा।

जन-जन में नैतिकता, ईमानदारी, सच्चाई, सदाचार, व्यसनमुक्ति का अलख जगाने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा शौर्य की भूमि मेवाड़ में प्रभावी विचरण के साथ धर्म एवं अध्यात्म की अद्भुत जागरणा कर रहे हैं। सामायिक, स्वाध्याय, संवर, दया, एकासन, उपवास, बेला, तेला आदि के साथ जीवन निर्माणकारी प्रवचनों की धूम लगी हुई है। स्कूलों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम निरंतर हो रहे हैं। आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु मेवाड़-मालवा सहित देश के अनेक क्षेत्रों से निरंतर विनतियों का दौर चल रहा है। चातुर्मास के लिए किस संघ का सौभाग्य खिलेगा यह भावी के गर्भ में है। सभी की उत्सुकता व आशा भरी नजरें लगी हुई हैं। मंगलवाड़ संघ को होली चातुर्मास का पावन प्रसंग प्राप्त हुआ है। **26 अप्रैल** को **भदेसर** में **मुमुक्षु सायली जी बाफना** सुपुत्री श्री विजय जी बाफना, निफाड़ की जैन भागवती दीक्षा संभावित है। मेवाड़ क्षेत्र धर्म एवं रामराज रंग में रंगा हुआ है।

जान-बूझकर नहीं मारें त्रस जीवों को

01 मार्च 2024, समता भवन, निकुंभ। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में सभी प्रभु एवं गुरुभक्ति में लीन हो गए। समता भवन में विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया, जिसमें गुरुभक्त श्रावक-श्राविकाओं के मध्य सूर्य-चंद्रमा एवं तारागण सम विराजित आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर सहित धवल वेशधारी चारित्रात्माओं की उपस्थिति से अद्भुत दृश्य परिलक्षित हो रहा था। प्रवचन सभा में साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य एवं मधुर वाणी में भगवान महावीर के अमृतकणों से पावन करते हुए **धम्म सद्धा चालीसा** की पंक्तियों के साथ फरमाया कि-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''ऐसा माना जाता है कि गंगाजल में कीड़े नहीं पड़ते। गंगा को पवित्र माना गया है। बहुत से लोग गंगा में अस्थियाँ विसर्जित करते हैं, उसके बावजूद भी गंगा निर्मल मन की तरह बहती है। वैसे ही ज्ञान की गंगा यदि मनुष्य के मन में प्रवाहित होती रहती है तो उसका मन शुद्ध होता हुआ चला जाता है। हम धर्माराधना करते हैं, किंतु उसका मूल्य क्या है उसकी पहचान नहीं है। एक नवकारसी भी बहुत लाभ देने वाली होती है। मगध सम्राट श्रेणिक यदि एक नवकारसी भी कर लेता तो उसके नरक का बंधन दूर हो सकता था, किंतु वह एक नवकारसी करने में समर्थ नहीं हुआ। भगवान से पूछा गया- एक श्रावक जिसने अहिंसा व्रत को स्वीकार कर रखा है, उससे पृथ्वीकाय का आरंभ-समारंभ करते हुए यदि त्रसकाय के जीवों का आरंभ-समारंभ हो जाए तो क्या उसका व्रत टूटेगा? श्रावक की प्रतिज्ञा है कि जान-बूझकर नहीं मारने का प्रत्याख्यान करके त्रस जीवों को जान-बूझकर नहीं मारना, किंतु पृथ्वीकाय का आरंभ-समारंभ करते हुए नहीं जान रहा है कि इसके नीचे त्रसकाय जीव होगा और उनकी विराधना हो जाए तो ऐसा होना व्रत भंग नहीं है, क्योंकि इन जीवों को मारने की दृष्टि नहीं है। हमारी दृष्टि ऐसी बननी चाहिए कि किसी जीव की विराधना नहीं हो और यदि मुझे जीवन रक्षा के लिए किसी जीव की विराधना करनी पड़ रही है तो उसकी लाचारी और विवशता का बोध होना चाहिए। इसे ही विवेक की संज्ञा दी गई है।''

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मात्र अपने परिवार का कल्याण नहीं अपितु दूसरे के परिवार के कल्याण की भी भावना होनी चाहिए। दुनिया का कोई भी जीव मेरे कारण दु:खी ना हो। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। सामूहिक एकासन का आयोजन किया गया।

सावधानी हटी, दुर्घटना घटी

02 मार्च 2024। प्रात: मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरु गुणगान किया गया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''तीर्थंकर देव चार तीर्थ की स्थापना करते हैं- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। साधु-साध्वी के जीवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी श्रावक-श्राविकाओं पर है। जो जीव अजीव को नहीं जानता वह स्वयं की रक्षा कैसे करेगा? नौ तत्त्वों का यदि ज्ञान नहीं होगा तो साधु जीवन की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो पाएँगे। निर्ग्रंथ श्रमण को ग्रंथि हटाना जरूरी है। वह सोच ले कि मेरा कुछ भी नहीं है। एक निर्ग्रंथ को किसी प्रकार की कोई पकड़ नहीं होनी चाहिए। यदि किसी ने कोई गाली दी तो उसे पकड़कर नहीं रखे। वह ऐसा नहीं सोचे कि इसका तो मैं बदला लेकर रहूँगा। श्रमण श्रमशील होता है। समभाव से श्रमण होता है। समभाव में आगे बढ़ना है। आधा कर्म आहार करेंगे तो समभाव नहीं आएगा। जो आहार साधु के लिए बनाया जाता है वह आहार साधु ग्रहण करेगा तो आधा कर्म आहार होगा। खाना बनाते समय मन में ये भाव नहीं आना चाहिए कि म.सा. आए हैं तो ज्यादा बना लूँ। साधु के लिए बनाया हुआ आहार साधु ग्रहण करेगा तो उसका मन समभाव में नहीं लगेगा। शुद्ध आहार बहराने से ज्यादा लाभ होता है। सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना है। किसी भी जीव की विराधना नहीं होनी चाहिए। सारे जीव मेरी आत्मा के समान हैं। मैं किसी जीव का वध क्यों करूँ!**

साधु-साध्वी वर्ग को विशेष सावधानी रखनी चाहिए। सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।''

श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब हम प्रसन्न रहते हैं तो धर्म-ध्यान में हमारी रुचि बनी रहती है। इंद्रियों का सुख आत्मा का सुख नहीं है। इंद्रियों का रस थोड़े समय का सुख है। जब तक हमारे भीतर राग-द्वेष रूपी बीज पड़ा हुआ है तब तक हम सुख की अनुभूति नहीं कर पाएँगे।

मान-सम्मान में सुख नहीं

03 मार्च 2024, समता भवन, निकुंभ। प्रात:काल से ही श्रावक-श्राविकाओं के पाँव स्थानक की ओर गतिशील हो रहे थे। चूँकि आज आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम के अंतर्गत रविवारीय समता शाखा का आयोजन होना था, अत: हर कोई इसमें भाग लेकर धर्माराधना से अपना जीवन धन्य बनाने को आतुर नजर आ रहा था। समता शाखा पश्चात् आचार्य भगवन् ने कृपा वर्षण करते हुए मंगलपाठ फरमाया।

प्रवचन स्थल पर अपार जनमेदिनी से भरपूर धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालु भक्तों के अज्ञान का तिमिर मिटाते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी में देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि **''हमारा प्रेम आत्मा से होना चाहिए, मान-सम्मान, अपमान से नहीं। जो अभिमान से मुक्त है वही सुखी है। जो अभिमान से ग्रस्त है वह दु:खी है। जीवन में एक ही लक्ष्य बनाए कि मान-सम्मान को गलाना है। मान-सम्मान के झूठे प्रभाव के लिए अपने अमूल्य क्षणों को मत गँवाओ। अभिमान के बड़े-बड़े प्रहार भी ध्यान का छोटा-सा नुकसान भी नहीं कर सकते। जिनवाणी सुनने से जितना असर नहीं होता उससे ज्यादा उसे धारण करने से होता है।''**

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बाहर की चीजें बदलती रहेगी, जब तक भीतर सहिष्णुता पैदा नहीं होगी। जो समय मिला है उस समय को सार्थक करेंगे तो महान लाभ प्राप्त होता। संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती प्रस्तुत की। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। बाहर के दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, आगम वाचनी आदि कार्यक्रम हुए। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का निकुंभ गाँव से निकुंभ चौराहा स्थित समता भवन में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। रात्रि में पूज्य संतों के सान्निध्य में प्रभु एवं गुरुभक्ति कार्यक्रम हुआ।

जाग्रत करें भीतर की शक्तियों को

04 मार्च 2024, समता साधना भवन, चिकारड़ा। प्रात: भोर के प्रकटन के साथ ही पंच परमेष्ठी के गुणगान के साथ मंगलमय प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् परम प्रतापी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का सान्निध्यरत संतों के साथ निकुंभ चौराहा से चिकारड़ा में चेतनपुरी स्थित समता साधना भवन में मंगल प्रवेश हुआ। संपूर्ण मार्ग **'भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछें सुख और साता'**, **'बच्चा-बच्चा जहान का, भक्त है गुरु राम का'**, **'नाना गुरु ने क्या दिया, राम दिया भई राम दिया'** आदि जयघोषों से धर्ममय बन गया। समता भवन पहुँचकर यह विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हमारे भीतर अपार शक्ति है। अंदर जो अवरोध हैं, उनको हटाएँ। अपने भीतर की शक्तियों को जगाएँ। हमारी शक्ति का जागरण हमारे स्वयं के जीवन के लिए बहुत ही फलदायी है। हमारा आत्मविश्वास, हमारा**

संकल्प इतना मजबूत होना चाहिए कि हम हमारी बुरी आदतों को बदलने में समर्थ हों। बुरी आदतें हमारे विकास में बाधक हैं। हमारा आत्मविश्वास जगना चाहिए कि हमारे भीतर में अभी वह सामर्थ्य है जिससे प्रतिकूल परिस्थिति में भी हम शांत रह सकते हैं।''

श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम जिस संसार में रचे-पचे हैं उस संसार का कोई सार नहीं है, यह असार है। जितना-जितना ममत्व कम होगा उतनी-उतनी कर्मों की निर्जरा होगी। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तर आदि धार्मिक आयोजन हुए। नवकार महामंत्र के पाँचों पदों की विस्तृत व्याख्या श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाई। संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के आगमन को परम सौभाग्य निरूपित करते हुए अधिकाधिक विराजने की विनती गुरुचरणों में रखी।

सुनने से ही होता है पुण्य व पाप का बोध

05 मार्च 2024। प्रात: मंगल प्रार्थना पश्चात् धर्मसभा का आयोजन किया गया। इस विशाल प्रवचन सभा में सिंहगर्जना के साथ करुणा के सागर आचार्य भगवन् ने भगवान महावीर के अमृतवचनों से जन-जन का मन पावन करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से प्रश्न किया कि तथारूप श्रमण माहन की पर्युपासना करने से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है? भगवान ने प्रत्युत्तर में फरमाया कि सुनने का लाभ होता है। साधु के दर्शन पुण्यकारक होते हैं। साधुओं का योग बड़े पुण्य से प्राप्त होता है। उस पुण्य को हम खो देते हैं। फिर उस संगति का क्या लाभ मिलेगा? जब तक आपने धर्म का शब्द नहीं सुना तब तक आपको सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होगी। सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिए देशना लब्धि की आवश्यकता होती है। जिसने तीर्थंकर देवों या साधु, श्रावक से भी धर्म का शब्द सुन लिया और वह धर्म उसको रुचिकर लगा तो उसको सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाएगी अन्यथा सम्यक्त्व की प्राप्ति होना भी कठिन एवं दुष्कर है। एक ओर हम इसे सौभाग्य मान सकते हैं कि हमें जन्म से जैन धर्म मिला है, किंतु दूसरी तरफ जब विचार करते हैं तो महसूस होता है कि जो चीज मूल में मिल जाती है उसकी कदर नहीं होती। अपनी मेहनत एवं पुरुषार्थ से यदि हम धर्म को प्राप्त करते हैं तो जल्दी से उसको छोड़ नहीं पाते। पैसों की गणित को याद रखते हैं, किंतु धर्म की बात को याद नहीं रख पाते। अपना नाम भूल से भी नहीं भूलते हैं, लेकिन भगवान का नाम याद करना पड़ता है। तथारूप श्रमण भगवान महावीर का नाम व गोत्र सुनना भी बहुत ही पुण्य प्रदान करने वाला है। इससे बहुत से कर्मों की निर्जरा हो जाती है। फिर उनके दर्शन करेंगे, उनकी वाणी सुनने, उनसे ज्ञानचर्चा करने से होने वाले लाभ का तो मूल्यांकन हम कर ही नहीं सकते। सुनने से ही पुण्य और पाप का बंध होता है।''**

श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ऐसी कोई भी जगह नहीं है जहाँ हमने जन्म-मरण, रिश्ता-नाता नहीं किया हो और ये सारे रिश्ते-नाते साथ जाने वाले नहीं है। गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा होगी तो वह हमें तिराने वाली होगी। नहीं तो हम ऐसे ही भटकते रहेंगे।

इस दिवस को सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। 100 से अधिक भाई-बहनों ने पाँच-पाँच सामायिक आराधना करने का लाभ लिया। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में दैनिक धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन हुए। धार्मिक कक्षा में नवकार महामंत्र के महत्त्व पर श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने सुंदर समझाइश दी।

पर्युपासना सिर्फ शरीर से नहीं मन से होती है

06 मार्च 2024। भोर का मंगलमय शुभारंभ प्रार्थना में पंच परमेष्ठी एवं गुरु गुणगान के साथ किया गया। प्रार्थना से जीवन पावन करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में **धम्म सद्धा चालीसा** की पंक्तियों के साथ फरमाया- **''पर्युपासना का अर्थ क्या होता है? 'परि' अर्थात् चारों ओर से। हम अपने आपको इस प्रकार परमात्मा के समीप बैठाएँ कि चारों ओर परमात्मा ही नजर आएँ। दूसरा कोई नजर ही नहीं आना चाहिए। दूसरा कोई क्या कर रहा है इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है। पर्युपासना सिर्फ शरीर से नहीं मुख्यत: मन से होती है। जब हम अवधानपूर्वक मन को निर्ग्रंथ मुनियों की पर्युपासना में लगाते हैं तब हमारी पर्युपासना हो पाएगी। हम भगवान की भक्ति कर रहे होते हैं और भीतर एक लालसा का सिलसिला चलता रहता है। यह प्रवाह हमें कभी भी शांति देने वाला नहीं बनेगा। लालसा, आकांक्षा, तृष्णा, अशांति के हेतु हैं। शांति के लिए परमात्मा में, उपासना में अपने आपको एकमेक बना लें। जो तू है वही परमात्मा है और जो परमात्मा है वही तू है। जब हम पुरुषार्थ करेंगे और शांति के लिए उपासना करेंगे तो समाधि को प्राप्त करने वाले बनेंगे।''**

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समय की कीमत समझो। जो समय मिला है उसे सार्थक करने का प्रयास करो। जो समय की कदर नहीं करता, समय उसकी कदर नहीं करता है।

मंगलवाड़ से समता युवा संघ सहित 50 से अधिक भाई-बहन पदयात्रा कर गुरुदर्शन हेतु उपस्थित हुए। आज के संवर दिवस आयोजन में 104 लोगों ने भाग लिया। ज्ञानचर्चा में जिनशासन के उज्ज्वल जैन इतिहास के गौरव विषय पर श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने बहुत ही सुंदर विवेचना की। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए।

ज्ञान वह जो जीवन में रूपांतरित हो जाए

07 मार्च 2024। भोर के प्रस्फुटन के साथ प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से उपस्थित जनसमुदाय का जीवन धन्य हो गया। आयोजित धर्मसभा में तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''तथारूप श्रमण माहन का अर्थ होता है जैसा साधु का रूप बताया गया है उसी प्रकार का जीवन जीने वाले तथारूप श्रमण माहन होते हैं। तथारूप का अर्थ जैसा जीवन बताया वैसा जीवन जीने वाला तथा कथित का अर्थ है कहा कुछ और हुआ कुछ अलग। सुनने का परिणाम ज्ञान के रूप में होता है। ज्ञान जीवन में रूपांतरित होने वाला होता है। जो ज्ञान जीवन में रूपांतरित हो जाए वह ज्ञान ही अपना है। भगवान कहते हैं कि सुनो और सुनकर जो अपने जीवन के लिए लाभकारी है उसे स्वीकार करो। कुछ बातें सुनने के लिए, जानने के लिए होती हैं। कुछ बातें जानकर छोड़ने योग्य होती है, कुछ स्वीकार करने की होती है। 18 पाप छोड़ने योग्य हैं। भगवान ने 12 व्रत एवं 5 महाव्रत कहे हैं, जो स्वीकार करने योग्य हैं। दूसरों की बढ़ती को देखकर कभी भी ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। आज व्यक्ति दुनिया में जितना खुद को देखकर दु:खी नहीं उतना दूसरों को देखकर दु:खी है। इसने इतना उत्कृष्ट क्यों कर लिया, वह आगे कैसे**

बढ़ गया? तुम को बढ़ना है या घटना है? यदि तुम्हें बढ़ना है तो प्रेरणा लो। सुखी जीवन के लिए यह विचार करें कि मेरे जीवन के लिए हितकर या अहितकर क्या है?''

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार असार है। इसमें हमें सार निकालना है। जीवन धर्म एवं दया का पुष्प खिलाना है। सामूहिक दया दिवस पर 21 घंटे की आराधना में 45 से अधिक दया तप हुए, जिसमें संत महापुरुषों की प्रेरणा से छोटे-छोटे बालकों ने भी दया की। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने '**तप काटे भव-भव का बंधन**' विषय पर मार्मिक चित्रण फरमाया। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी, ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक आयोजन हुए। श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने युवा शिविर में धर्म तत्त्व का बोध कराया।

आत्मा में महात्मा व परमात्मा बनने की शक्ति

08 मार्च 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरु गुणगान के साथ भक्ति की गई। अपने मार्मिक उद्‌बोधन में प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हमारे भीतर इतनी गुंजाइश है कि हम आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बन सकते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो शिव कल्याण की यात्रा कर सकता है। सुनने का लाभ ज्ञान होता है। ज्ञान का लाभ विज्ञान होता है। विज्ञान एक प्रकार से निर्णय करना है कि मेरे हित में क्या है। अहिंसा एवं सत्य में हित है और हिंसा व असत्य में अहित। हम कहते हैं 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की जीत होती है, किंतु हमें सत्य पर विश्वास नहीं होता है। सत्य पर जिनका भरोसा था उनकी नैया पार लग गई। अरणक श्रावक का भरोसा पक्का था। अरणक श्रावक के समान धर्म पर हमारा विश्वास पक्का होना चाहिए। वह विश्वास जिस दिन हमारे भीतर में गहरा उतर जाएगा, उस दिन हमारी दशा व दिशा बदल जाएगी। उस दिन मन में कोई भय नहीं रहेगा। धर्म के लिए जीना व धर्म के लिए मरना सार्थक होता है।**''

श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम अपना समय आगम-अध्ययन और प्रभु भक्ति में लगाएँ। इससे जीवन में बदलाव जरूर आएगा। साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु महकते गुलाब के समान हैं। उनके आयामों को आत्मसात् कर सच्ची गुरुभक्ति का परिचय दें। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की 5 गाथा याद करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने युवा शिविर व श्रावक-श्राविका शिविर में वंदना विधि आदि की जानकारी दी। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र की व्याख्या करते हुए धर्म स्थानक में ध्यान रखने योग्य बातों की जानकारी दी। स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम हुए। आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु विनती लेकर निकुंभ से लगभग 90 भाई-बहन 10 किमी. पैदल चलकर गुरुचरणों में उपस्थित हुए। वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। तत्त्वज्ञ सुश्राविका कंचन देवी सुभाष जी कांकरिया, कोलकाता ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया।

संयम अर्थात् स्वयं का नियंत्रण

09 मार्च 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**प्रत्याख्यान से संयम का लाभ होता है। संयम क्या है? संयम भी आत्मा है, संयम का अर्थ भी आत्मा है। संयम अर्थात् स्वयं का नियंत्रण है। स्वयं का स्वयं पर नियंत्रण होना।**

संयम एक ऐसा नियंत्रण है जिससे अपने मन पर अपना अधिकार जमाने में हम समर्थ हो सकते हैं और यह होगा प्रत्याख्यान से। प्रत्याख्यान से हमारे मन में शक्ति जाग्रत होगी, उससे हमारे मन में ब्रेक लगेगा। जो साधु स्वाद में व खाने-पीने में रहता है, उसके लिए भगवान बताते हैं वह पाप श्रमण कहलाता है। साधु बनने के बाद अपनी मति की मानकर स्वच्छंदता से नहीं चलना है। हमारी मति आगम पर परिक्रमित होनी चाहिए। आगम का नियंत्रण होगा तो मति सही दिशा में चलेगी और यदि हमारी मति आगम से परिक्रमित नहीं होगी तो तर्क पर तर्क निकालने वाली होगी। तर्क से कभी समाधान होने वाला नहीं है। तर्क से तथ्य प्रकट होता है, किंतु तर्क पर नियंत्रण नहीं है तो वह तर्क का तीर कहाँ ले जाकर गिराएगा, इसका कोई पता नहीं है। मन को यदि हम नियंत्रित कर लेंगे तो जैसा हम चाहेंगे वैसा चलेगा।''

● चिकारड़ा की हैप्पी पब्लिक स्कूल व देवनारायण स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए।

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। इस जन्म से हम मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। धर्म आराधना में समय को सार्थक करें। साध्वी श्री जयामि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि सुख-समाधि चाहिए तो वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ना होगा। इसमें इतना सुख मिलेगा जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। हर पक्खी को प्रतिक्रमण करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व ज्ञान बोध करवाया। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

प्रमाद है आत्मा का विस्मरण

10 मार्च, 2024, कैलाश जी अग्रवाल का नोहरा। रविवारीय समता शाखा के अंतर्गत समता आराधना करने हेतु छोटे-बड़े सभी भाई-बहनों का अपूर्व उत्साह बस देखने ही बनता था।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''तथारूप श्रमण माहन की पर्युपासना करने से जीव को क्या फल मिलता है? महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी को फरमाया कि सुनने का लाभ होता है। सुनने से ज्ञान की प्राप्ति होती है, ज्ञान से विज्ञान की प्राप्ति होती है, विज्ञान का फल प्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान का फल संयम। फिर पूछा गया संयम का फल क्या है? संयम का फल है अनास्रव। कर्मों का आना आस्रव है और कर्मों को रोका जाना अनास्रव है। पाँच आस्रव बताए गए हैं- मिथ्वात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग। हमारे भीतर मिथ्वात्व बना रहता है, जो कर्मों को अपनी ओर आकर्षित करता है। अव्रत में व्रत-नियम को स्वीकार नहीं करने से भी कर्मों का आस्रव होता रहता है। प्रमाद आत्मा का भी विस्मरण है। अपने अस्तित्व का बोध नहीं होना, मैं कौन हूँ इसकी पहचान नहीं होना। चौथा कषाय- क्रोध, मान, माया, लोभ के कारण से कर्म बंध होते रहते हैं। पाँचवाँ आस्रव है मन, वचन व काया का योग। ये कर्मों को अपनी ओर खींचते हैं। अपने आपको अनास्रवी बनाने के लिए संयम में उपस्थित होना होता है। संसार में रहते हुए भी अपने आपको अनास्रवी बना सकते हैं। जैसे हम अपनेपन का संबंध जोड़ेंगे तो वहाँ समस्या आएगी, वहाँ पर आस्रव की प्रकृति चालू हो जाएगी।''**

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने **'मेरे प्राणों के आधार, वंदन है बारंबार'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया

कि संसार दु:खों से भरा है। भगवान महावीर के पथ पर चलकर हम सुखी बन सकते हैं। आचार्य भगवन् मार्ग दिखा रहे हैं। हम उस मार्ग पर चलकर ही अपना कल्याण कर सकते हैं।

साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल जाएगी। जीवन में सदैव प्रसन्न रहें। शांति एवं समाधि में रहें। हर परिस्थिति में प्रसन्न रहें।

साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में भूलों को सुधारने और संसार में संयम मार्ग की ओर आगे बढ़ाने में आचार्य भगवन् का सहारा काफी है। संयम शतक में अपना योगदान देकर महापुरुषों के प्रति सच्ची समर्पणा प्रस्तुत करें। उनकी आज्ञा व निर्देश का पालन करें।

आचार्य भगवन् के 2024 चातुर्मास हेतु जावरा, भीलवाड़ा, अहमदाबाद, कानोड़ संघ ने गुरुचरणों में विनतियाँ प्रस्तुत कीं। केसुंदा से 60 किमी. और मोरवन से 10 किमी. पैदल चलकर अनेक श्रद्धालु भाई-बहन चिकारड़ा गुरुदर्शन हेतु उपस्थित हुए।

दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञान चर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने पच्चक्खान की समय अवधि, प्रहर के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

हमें स्वयं पर भरोसा होना चाहिए

11 मार्च, 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**सुख का आकार कैसा होता है? दु:ख का आकार कैसा होता है? सुख-दु:ख का आकार अपने भीतर में बनता है। दु:ख क्या है? सुख क्या है? इसका जो अनुभव है वही हमारी धर्मसाधना की जड़ है। वास्तव में सुख-दु:ख क्या है, इसकी एक समझ है। हम सुख-दु:ख के कारणों को दूर कर पाएँ या न कर पाएँ, लेकिन समझना जरूरी है ताकि हम कभी न कभी दु:ख को दूर कर सकें। क्योंकि एक समझ पैदा होती है तो दुनिया की हजारों नासमझाइश उसे मिटाने के लिए तत्पर होती हैं। बहुत प्रयास करना पड़ता है इस समझ को टिकाए रखने हेतु। हमारी एक कमजोरी है कि हम अपने आपको दूसरों पर बहुत निर्भर रखते हैं। दूसरों के विचारों का हम पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। हमारा भरोसा स्वयं पर है या दूसरों पर? हमें स्वयं को किसी से कंपेयर नहीं करना चाहिए। स्वयं पर निर्भर रहना चाहिए।**''

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कल श्रुत भक्ति दिवस है तो कल हमारा लक्ष्य बने कि हम आचार्यदेव, उपाध्याय भगवन् की भक्ति करें, जिससे हमें ज्ञान की प्राप्ति होगी। अगर गुरुजनों की भक्ति कर ली तो पुस्तकें रटने की आवश्यकता नहीं होगी। हमारा लक्ष्य बने **श्रुत भक्ति दिवस** से जुड़कर अपना जीवन सफल बनाएँ।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि व्यक्ति की इच्छाएँ कभी खत्म नहीं होतीं। इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं। इच्छाओं को सीमित करने से ही शांति मिलती है।

साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा. ने फरमाया कि श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे अध्ययन की चौथी गाथा में भगवान फरमाते हैं कि व्यक्ति अन्यों के लिए अपने बहुत कर्मों को बाँधते हैं, पाप क्रिया में जुड़ते हैं। अन्य के लिए धन का उपार्जन करना है, माता-पिता, बेटा-बेटी सबके लिए कुछ न कुछ करना है। अन्यों के लिए बाँधे गए कर्म जब उदय में आएँगे तो कोई भी उन कर्मों को भोगने में हमारी सहायता नहीं करेगा। स्वयं को ही दु:ख भोगना पड़ेगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्रुतभक्ति दिवस

12 मार्च, 2024। युग निर्माता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का बत्तीसवाँ युवाचार्य पदारोहण दिवस (माघ सुदी 2) एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का पाँचवाँ उपाध्याय पदारोहण दिवस (माघ सुदी 2-3) अत्यंत श्रद्धा, भक्ति, समर्पणा के साथ मनाया गया।

सामूहिक उपवास, संवर के साथ ही सामायिक, स्वाध्याय एवं अन्य धार्मिक आराधना में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''तथारूप श्रमण माहन की वाणी सुनने से क्या लाभ मिलता है? अबोधि से, अज्ञान से, मोह, महत्त्व, अशुभयोग एवं कषायों से हमने कर्मों का बंधन कर लिया है। इसलिए यह प्रक्रिया बताई गई है, जिससे हम कर्मों का नाश करने में सक्षम होंगे। दूध के उफान को रोकने के लिए जिस प्रकार आँच को कम करना या दूध को हिलाते रहने से दूध में उफान नहीं आता, उसी प्रकार दूध को बार-बार हिलाते रहने से उसमें रहा हुआ पानी उड़ता रहता है। हमें भी इसी प्रकार अपने कर्मों को उड़ाते रहना है। भगवान महावीर ने साढ़े बारह वर्षों में 359 दिन पारणे के अलावा शेष दिन तपस्या की। केवल अनशन ही नहीं की अपितु ध्यान, साधना, मौन आदि कई तपस्याएँ कीं, क्योंकि मेरेपन की भावना नहीं थी। 'जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ ना अपना कोय'। उन्होंने 'मैं' को हटा लिया और ममत्व को त्याग दिया। किसी कार्य में जुड़ना एक बात है, लेकिन उसकी मंजिल तक पहुँचना अलग बात है। उसी प्रकार हमने साधना तो अनेक बार की, लेकिन मोह-ममत्व के कारण चरम लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाए। साधु कल्याणमित्र है और सभी को परम सुख का रास्ता दिखाते हैं।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी सिंहगर्जना मे फरमाया कि **''श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र में एक छोटा-सा वाक्य है- श्रुत की आराधना करने से क्या लाभ होता है? उसका छोटा-सा उत्तर है कि जीव क्लेश को प्राप्त नहीं करता है। हमारा मन आशंकाओं से भरा रहता है। हम ज्योतिषियों के पास पहुँचते हैं और टोना-टोटका, कुपात्रदान, हवन-यज्ञ में समय बेकार गंवाते हैं। इससे अच्छा है कि श्रुत की आराधना करो। राग और द्वेष से विमुक्त स्वार्थ से सर्वथा दूर प्रभु की वाणी है। जो सभी संक्लेशों को दूर करती है। जब तनाव है तो शास्त्र खोलकर गाथा का भावपूर्वक उच्चारण करना चाहिए और उसके अर्थ को समझना चाहिए। जब हम भावपूर्वक उन गाथाओं का उच्चारण करेंगे तो दुनिया का कितना भी बड़ा तनाव हो वह दूर हो जाएगा। गणधर भगवान की शब्द रचना में बहुत बड़ी ताकत है, जो हमारे मस्तिष्क को सरल बनाने वाली है।''**

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने **'मेरे प्राणों के आधार, वंदन हो बारंबार'** भक्ति भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि सिंहासन पर बैठना सरल है, लेकिन सिंहासन किसी को सौंपना कठिन है। जहाँ हम सोचना बंद करते हैं वहाँ से महापुरुष सोचना प्रारंभ करते हैं। नाना गुरु ने राम गुरु में गजब की साधना देखी। यह पद उनको दिया जाता है जिनकी नजर मुक्ति पथ पर हो। उनको अनायास ही यह पद मिल जाता है। नहीं चाहने वाले को सब कुछ मिल जाता है और चाहने वाले को कुछ नहीं मिल पाता है। राम गुरु ने जब उपाध्याय पद दिया तब किसी को कुछ भी मालूम नहीं था। साधना करनी हो तो उत्सुकता से परे हो जाओ।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर जिनशासन में सूर्य-चंद्रमा की तरह सुशोभित हैं। उनकी कृपा हम सब पर बनी रहे। शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु के थोड़े-से गुण भी हमारे भीतर आ जाएँ तो सच्ची आराधना होगी। आप दोनों महापुरुष अपनी यात्रा में बहुत आगे निकल चुके हैं। हम गुरु को अपने भीतर कैसे रमाएँ? जब हमारे अंदर समर्पण का दीपक जलता है तो सही मायने में सच्ची आराधना हो पाती है। जब अहंकार की चट्टानें टूट जाएगी बस वहीं से गुरु की आराधना शुरू हो जाएगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा. ने फरमाया कि क्या गजब थे नाना गुरु! उन्होंने गुरुवर राम एवं राजेश मुनि को विशिष्टता से घड़ दिया। आज हमें ऐसा लगता है कि एक माता हैं तो दूसरे पिता के समान हैं। जब से पाट पर विराजे हैं तब से न किसी के साथ राग न किसी के साथ द्वेष। दोनों महापुरुषों की सूर्य से भी बढ़कर तेज किरणें संघ को नित नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर रही हैं। ये महाव्रतों की सुंदर आराधना करते हैं और करवाते हैं।

स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् के चरणों में अधिकाधिक विराजने की विनती की। महेश नाहटा ने द्वय महापुरुषों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। वर्ष में एक शास्त्र हिंदी अर्थ सहित पढ़ने का नियम एवं छत्तीस वंदना व अन्य त्याग-प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने ग्रहण किए। उपवास, बेला, तेला, अठाई आदि के भी प्रत्याख्यान हुए।

मोह के कारण भटक रही है आत्मा

13 मार्च 2024, मंगलवाड़। सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-13 का चेतनपुरी चिकारड़ा से 12 किमी. विहार कर समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। संपूर्ण मार्ग में राह के दोनों ओर जैन-जैनेतर श्रद्धालुगण दिव्य विभूति महापुरुषों की एक झलक देखकर आत्मतृप्त हो रहे थे। जय-जयकारों से संपूर्ण मार्ग धर्म के वातावरण में रंग गया। मंगल प्रवेश यात्रा समता भवन पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा में आचार्य भगवन् के पदार्पण से हर्षातिरेक जनमेदिनी की उपस्थिति में दयानिधान कृपानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में भगवान महावीर की अमृतवाणी का सिंचन करते हुए फरमाया कि **''सिद्ध भगवान की स्तुति सर्वमंगल है। पापों का नाश करने वाली है। हर वक्त यदि याद रहे तो पापकर्म के बंध से बच सकते हैं। जैसा सिद्ध का स्वरूप है वैसा ही हमारी आत्मा का स्वरूप है। सिद्ध भगवान कर्म नहीं, काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं। वैसा ही मेरा स्वरूप है। मोह के कारण हमारी आत्मा संसार में भटक रही है। प्रत्येक साधक का लक्ष्य होना चाहिए कि सुसाधुत्व का पालन करके सिद्धत्व भाव को प्राप्त करे। भावना भवनाशिनी होती है। अंतर्मन से भावना भाएँ कि मंगलवाड़ होली चातुर्मास के प्रसंग पर हम धर्म-ध्यान, त्याग-तप करने का लक्ष्य बना लें।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दोपहर में धार्मिक कक्षा में सचित्त-अचित्त का विवेक, शुद्ध वंदना विधि आदि की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

दिगंबर जैन समाज के भैरूलाल जी बसंतीलाल जी बलाला, पूर्व विधायक ललित जी ओस्तवाल ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। परम गुरुभक्त लक्ष्मीलाल जी बोहरा, उदयपुर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

कर्म ही जीवन का संचालक

14 मार्च 2024। प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति से जन-जन सराबोर हो गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जीवन का नियंत्रक कौन होता है? यह चिंतन का विषय है। वातावरण और संगति के अनुसार ही व्यक्ति का जीवन चलता है और जीवन बनता है। व्यक्ति का विकास नहीं होने पर वह अज्ञानतावश भाग्य या किस्मत को उत्तरदायी ठहराता है, जबकि भाग्य या किस्मत उत्तरदायी नहीं हैं। कर्मों के अनुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास एवं विनाश होता है। दुर्भाग्यशाली व्यक्ति भाग्य पर विश्वास करता है। आलसी व्यक्ति सहयोग की अपेक्षा करता है और जीवन में पीछे की ओर देखता है। पुरुषार्थी व्यक्ति अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करते हुए जीवन में आगे बढ़ता रहता है। जैसे गोताखोर समुद्र के भीतर गहराई में छिपे बहुमूल्य रत्नों की खोज करता है उसी भाँति पुरुषार्थी अपने भीतर छिपी हुई रहस्यमय शक्तियों को आत्मनिर्भरता के गुण से प्राप्त कर लेता है। तीर्थंकरों के गर्भ में आते ही उनकी माताएँ 14 महास्वप्न देखती हैं तथा माता के स्वभाव में बदलाव आने लग जाता है। आराधना एवं खोज-अनुसंधान से ही सृष्टि में नवनिर्माण, परिवर्द्धन, परिवर्तन संभव हो पाता है।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने **'जो जिनवर के गुण गाता है वो भवसागर तिर जाता है'** गीत गाते हुए फरमाया कि हम कपड़े बदलते हैं, मकान बदलते हैं, वाहन बदलते हैं, लेकिन अपने आपको नहीं बदलते हैं। गलत खान-पान एवं संसार में आसक्ति के कारण जीवन भटक रहा है। आदर्श श्रावक एवं आदर्श साधु बनें।

भदेसर में नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का आज छठा दिन चल रहा था। संथारे की अनुमोदना स्वरूप लोगों ने भिन्न-भिन्न त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

भौतिक सुविधाओं में सुख मात्र कल्पना

15 मार्च 2024, समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रात: मंगल प्रार्थना में पंच परमेष्ठी का गुणगान किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतवाणी में उपस्थित गुरुभक्तों का जीवन पावन करते हुए फरमाया कि ''**धर्म श्रद्धा से जीव को क्या फल मिलता है? संसारी आत्मा भौतिक सुविधाओं में ही सुख मानती है, जबकि इंद्रियों का सुख आत्मा का सुख नहीं होता है और स्थायी भी नहीं रहता है। आने वाला अगला क्षण किस रूप में रहेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता है। जैसे कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के राजतिलक की तैयारी हो चुकी थी, लेकिन क्षणभर में ही वनवास हो गया। राजा हरिश्चंद्र, रानी तारामती एवं बेटे की क्या दशा बन गई! राजा श्मशान में काम करने लगा। अनुरक्ति जब विरक्ति में बदलती है तो देव गति मिलती है। अग्नि से भी अधिक कठोर मन की भावना होती है। जीव-अजीव का अज्ञानी व्यक्ति धर्म क्रिया नहीं करके कर्मों का बंधन करता है। पाप कर्मों का संचय करता हुआ मिथ्यात्वी जीव कभी भी देवलोक में नहीं जा सकता अर्थात् सम्यक्त्वी जीव ही देवलोक में जाएगा। किए गए कर्मों का फल कर्ता को ही भुगतना पड़ता है। समभाव से ही कर्मों पर आक्रमण करना है। बिना किसी को दोष दिए राम ने समभाव से अयोध्या छोड़ दी। समभाव से अपने कर्मों को काटा। ज्ञानी स्वयं का दोष देखता है, दूसरों का नहीं। हम दु:खी होने के लिए तैयार है तो अवश्य ही दु:खी होंगे। यदि तैयार नहीं हैं तो दुनिया की कोई भी ताकत हमें दु:खी नहीं कर सकती।**''

श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार के कार्य का अंत नहीं है। किसी के रहने या नहीं रहने से

कोई भी काम रुकने वाला नहीं है। मेरे बिना काम नहीं चलेगा यह सब भ्रम है। सभी जीव अपनी पुण्यवाणी लेकर आते हैं। आत्मकल्याण के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ें। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री समता श्री जी म.सा., साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

'घर-घर धोवन, हर घर धोवन' की प्रेरणा से प्रतिदिन कम से कम एक गिलास धोवन पानी पीने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। नवदीक्षिता संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का आज सातवाँ दिन गतिमान था, जिस पर 7 नवकार गिनने, 7 लोगस्स, 8 णमोत्थु णं आदि धर्माराधना का नियम कई लोगों ने लिया।

मेवाड़ क्षेत्र महापुरुषों के चरणरज से निरंतर पावन-पवित्र हो रहा है। आगामी चातुर्मास हेतु देश के विभिन्न संघों की विनतियाँ श्रीचरणों में प्रस्तुत हो रही हैं। अब देखना है कि सौभाग्य का सितारा किस संघ का चमकता है। 26 मार्च को मंगलवाड़ में आगामी चातुर्मासिक घोषणा संभावित है। (चूंकि इस अंक में 15 मार्च तक के ही समाचार संकलित किए गए हैं, अत: चातुर्मासिक घोषणा का विवरण आगामी अंक में समाहित किया जाएगा।)

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

अठाई तेला	श्री गगन मुनि जी म.सा. साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा.	**5 उपवास**	श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा.

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	जीवन जी कंचन जी सोनी-निकुंभ, सुधा जी अग्रवाल-निकुंभ, सागरमल जी कला बाई लोढ़ा, शांतिलाल जी कोठारी, महेंद्र जी-भादसोड़ा, शांतिलाल जी नाहर-भादसोड़ा, तेजमल जी शकुंतला जी धम्माणी-जावरा, राजेंद्र जी मुणत-रतलाम, मदनलाल जी नलवाया
उपवास	**31 -** अजय जी दक-कानोड़ **9 -** प्रहलाद जी लोढ़ा-चिकारड़ा **8 -** दिलीप जी धींग, चिकारड़ा

-महेश नाहटा

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे व्हाट्सएप्प नं. 9799061990 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं अथवा QR Code स्कैन कर अपनी जानकारी Google Form द्वारा भरकर हमें भिजवाने का कष्ट करें।

-श्रमणोपासक टीम

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को '**महत्तम शिखर**' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनके जीवन का चित्रण किया जाएगा। यह चित्रण आगामी 12 माह श्रमणोपासक के समाचार अंकों में प्रकाशित किया जाएगा, जिसमें आचार्यदेव का पूरा जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन होगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रकाशित किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि इस अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

********** दृढ़निश्चयी, दृढ़संयमी आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. **********

राजस्थान की तपोभूमि मरुधरा में करणी माता के मंदिर से प्रख्यात ग्राम देशनोक। मूल गोत्र भंसाली से जुड़े भूरा कुल के यहाँ पर अनेक घर हैं। इन्हीं में से एक सद्गृहस्थ नेमीचंद जी भूरा की धर्मसहायिका धर्मपरायण रत्नकुक्षिधारिणी माँ गवरा देवी के द्वितीय सुपुत्र का जन्म हुआ। चैत्र मास का शुक्ल पक्ष, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम दशरथनंदन राम, हमारे प्रभु तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर, महाबलशाली अंजना पुत्र हनुमान का जन्म हुआ, वही पक्ष इस युग की एक दिव्य विभूति को जन्म देकर पुन: जगत् प्रसिद्ध हो जाएगा, यह बात उस समय केवलियों के अतिरिक्त कौन जानने वाला था! तिथि भी वह कि जब चौदहवीं का चाँद हो और वर्ष भी ऐसा कि जो काम पिछले सैकड़ों वर्षों में नहीं हुआ। ऐसे एक आचार्य के नेतृत्व की धर्मध्वजा को विशाल स्थानकवासी समाज के महल पर प्रतिष्ठित करने वाला हो। ऐसे संवत् 2009 की चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को शुभ मुहूर्त्त में जब लग्नेश सूर्य उच्चाभिलाषी था, गुरु भाग्य स्थान पर चमक रहा था, भाग्येश मंगल पराक्रम स्थान पर पराक्रमी दृष्टि से भाग्य एवं कर्म को एक साथ देख रहा था, मानो भाग्य एवं पुरुषार्थ के श्रेष्ठ समन्वय को प्रतिष्ठापित कर रहा हो। सिंह का केतु लग्न पर राजध्वज के समान फहरा रहा था। उच्च का शुक्र नीच भंग राजयोग का निर्माण कर रहा था। उस शुभ मुहूर्त्त में सिंह के समान तेजस्वी बालक ने जन्म लेकर अपने कुल, वंश, ग्राम एवं धर्म संघ को यशस्वी बना दिया।

********** प्रश्नावली. **********

एक शब्द में उत्तर देवें -

प्रश्न 1. आचार्यश्री का जन्म स्थान? .....

प्रश्न 2. आचार्यश्री का कुल? .....

प्रश्न 3. बालक किसके समान तेजस्वी था? .....

प्रश्न 4. चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में कितनी विभूतियों का जन्म हुआ? .....

प्रश्न 5. आचार्यश्री की माता का नाम? .....

प्रश्न 6. आचार्यश्री के पिता का नाम? .....

प्रश्न 7. आचार्यश्री का जन्म कौनसे पक्ष में हुआ? .....

प्रश्न 8. उच्च शुक्र किसका योग बना रहा था? .....

प्रश्न 9. आचार्यश्री के जन्म का संवत्? .....

प्रश्न 10. हमारे प्रभु श्रमण भगवान का नाम? .....

उत्तर भिजवाने हेतु

WhatsApp No. : 9314055390

Email : shramanopasak @sadhumargi.com

****

अंतिम तिथि

25 अप्रैल 2024

मेवाड़ अंचल

भदेसर। श्री साधुमार्गी जैन संघ की नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन इस प्रकार किया गया :- संरक्षक- माणकलाल जी खटोड़, पारसमल जी मोदी, शांतिलाल जी रूंगलेचा, हिम्मतलाल जी नाहर, उदयलाल जी खटोड़, अध्यक्ष- कोमल जी रूंगलेचा, उपाध्यक्ष- रमेशचंद्र जी रूंगलेचा, मंत्री- महेंद्र कुमार खटोड़, सहमंत्री- संजय कुमार जी मोदी, कोषाध्यक्ष- अभय जी सरूपरिया एवं विभिन्न प्रकल्पों के संयोजक मनोनीत किए गए। **-महेंद्र खटोड़**

चित्तौड़गढ़। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ की नवीन कार्यकारिणी में अध्यक्ष- रोशन जी लोढ़ा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष- अशोक जी चंडालिया, महामंत्री- आदित्येंद्र जी सेठिया, कोषाध्यक्ष- शंकर जी सुराणा, उपाध्यक्ष- सुशील जी अब्बाणी, महावीर जी बोरदिया, महेंद्र जी सोनी, मनीष जी मेहता, मंत्री- गौतम जी मारू, नवनीत जी मोदी, दिलीप जी पोखरना, अनिल जी नाहर एवं विभिन्न प्रकल्पों के संयोजक तथा 36 कार्यकारिणी सदस्य सर्वानुमति से मनोनीत किए गए। आचार्य श्री नानेश रामेश ज्ञान विद्यापीठ (समता भवन) में आयोजित कार्यक्रम में संरक्षक शांतिलाल जी जारोली ने नवमनोनीत कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। कार्यक्रम में महिला मंडल एवं समता बहू मंडल का भी शपथ ग्रहण हुआ।

राष्ट्रीय मंत्री जी ने अपने उद्‌बोधन में अक्षय तृतीया पारणा, अभिमोक्षम् शिविर एवं महत्तम शिखर संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि आचार्य श्री रामेश का 20 वर्षों बाद चित्तौड़गढ़ में पुन: पदार्पण हो रहा है।

-बंशीलाल श्रीश्रीमाल

बीकानेर-मारवाड़ अंचल

जोधपुर। श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति का द्विवार्षिक मनोनयन समता भवन में हुआ, जिसमें संघ महामंत्री एवं महिला समिति की राष्ट्रीय मंत्री के मार्गदर्शन में सर्वानुमति से अध्यक्ष मंजू जी चौपड़ा, महामंत्री अनिता जी छाजेड़, उपाध्यक्ष शोभा जी छाजेड़, संगीता जी सांखला सहित विभिन्न प्रवृत्तियों के प्रभारी मनोनीत किए गए। इससे पूर्व वर्तमान अध्यक्ष ने अपने कार्यकाल के दौरान सदस्याओं द्वारा प्राप्त सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति, श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ, बहू मंडल, बालिका मंडल के संयुक्त तत्वावधान में 21 फरवरी को परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 49वाँ दीक्षा दिवस '**महत्तम शिखर वर्ष**' के शुभारंभ के साथ मनाया गया। कमला नेहरू नगर प्रथम विस्तार स्थित समता भवन में समारोह का शुभारंभ हुआ। सामूहिक रूप से 11 नवकार महामंत्र जाप के पश्चात् महत्तम शिखर बैनर का विमोचन राष्ट्रीय मंत्री एवं संघ अध्यक्ष सहित उपस्थित गणमान्यजनों द्वारा किया गया। संघ महामंत्री, बहू मंडल अध्यक्ष एवं महिला समिति की राष्ट्रीय मंत्री सहित अनेक वक्ताओं ने आचार्य श्री रामेश का जीवन परिचय देते हुए गद्य-पद्य में भाव रखे। महिला समिति अध्यक्ष के मार्गदर्शन में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन एवं गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया गया।

समता भवन में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि पूज्य आचार्य श्री रामेश का आज 49वाँ दीक्षा दिवस है।

श्रद्धा और आत्मविश्वास का मेल है। श्रद्धा हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाती है। हमे अपने लक्ष्य और उद्देश्य का निर्धारण करना होगा। महत्तम शिखर के रूप में मनाए जा रहे पूज्य आचार्य श्री रामेश के दीक्षा दिवस की सार्थकता तभी होगी जब हम अपने संपूर्ण सामर्थ्य एवं समर्पण के साथ केंद्रीय संघ द्वारा सुझाए गए धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन उत्साह और उमंग के साथ करेंगे।

उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने एकासन, आयंबिल, उपवास एवं तेले की लड़ी वर्षभर करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर संघ, महिला समिति, समता युवा संघ, बहू मंडल, बालिका मंडल के पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

-सुबोध मिन्नी, सुरेश सांखला

लूणकरणसर। श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में समता भवन में प्रतिदिन धार्मिक क्रियाओं व ज्ञानार्जन का क्रम जारी है। फरवरी माह में समता शाखा, जैन संस्कार पाठशाला, पच्चक्खाण सहित विभिन्न आयोजन हुए। 21 फरवरी को 'महत्तम शिखर महोत्सव' पर सामायिक, मंगलाचरण, रामेश चालीसा, राम गुरु स्तुति, संयम चालीसा, धम्म सद्धा चालीसा, नवपद चालीसा, मंगलकामना, वंदना, अहोभाव आदि के साथ एकासन, उपवास आदि के पच्चक्खाण हुए। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं के साथ बच्चों एवं युवाओं की अच्छी उपस्थिति रही। इस दिवस के पश्चात् भी धर्माराधना का क्रम जारी है। **-ओमप्रकाश बरड़िया**

गंगाशहर-भीनासर। शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 21 फरवरी को महत्तम शिखर महोत्सव शुभारंभ तप-त्याग के साथ किया गया। प्रारंभ में 11 नवकार महामंत्र का जाप किया गया, तत्पश्चात् सामूहिक संयम चालीसा, राम गुरु स्तुति का पाठ हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष ने '**गुरु वचन औषध रूप है**' का वाचन किया। संघ मंत्री ने महत्तम से महत्तम शिखर यात्रा का विवेचन किया एवं पच्चक्खाण करवाए। महत्तम महोत्सव संयोजक ने कार्यक्रम संयोजन किया। महत्तम महोत्सव संयोजिका एवं समता युवा संघ अध्यक्ष द्वारा प्रतियोगिताएँ करवाई गई।

साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. ने अपने उद्बोधन में '**हम सबकी श्रद्धा गुरु के प्रति कैसी होनी चाहिए**' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान फरमाया। महिला मंडल मंत्री ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर एकासन की 10 लड़ियाँ, उपवास की 3 लड़िया, आयंबिल की 1 लड़ी एवं प्रत्येक माह 7 तेले आदि तपस्याएँ प्रारंभ की गई।

-प्रमिला देवी बोथरा

देशनोक। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में 22 दिनों तक धर्म-ध्यान, त्याग-तप का ठाठ लगा रहा। आध्यात्मिक आरोग्यम् के अंतर्गत मार्मिक प्रवचन में आपश्री जी ने फरमाया कि जीवन नैतिकता से बनता है, ईमान से सुशोभित होता है और सत्य से जीवन की प्रतिष्ठा होती है। आज राम-भरत जैसे भाई मिलने कठिन हैं।

आचार्य श्री रामेश का 32वाँ युवाचार्य दिवस एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का 5वाँ उपाध्याय पद दिवस '**श्रुतभक्ति दिवस**' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर दोनों महापुरुषों के गुणगान किए गए। श्री जैन जवाहर मंडल में नवकार महामंत्र का जाप किया गया। वीर माता कमला बाई सांड ने द्वय महापुरुषों के दीर्घायु होने की मंगलकामना की। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भावाभिव्यक्ति दी। एकासनादि के त्याग-प्रत्याख्यान हुए एवं कुछ बहिनों ने रात्रि संवर का लक्ष्य रखा।

श्री साधुमार्गी जैन संघ की नवीन कार्यकारिणी में अध्यक्ष- कन्हैयालाल जी बैद, मंत्री- पानमल जी भूरा, कोषाध्यक्ष- शांतिलाल जी बरड़िया, सह-कोषाध्यक्ष- करणीदान जी बुच्चा, उपाध्यक्ष- महावीर जी सुराणा, इन्द्रचंद जी भूरा, विजय कुमार जी सांड, सहमंत्री- पवन कुमार जी कातेला, निर्मल कुमार जी संचेती एवं प्रवृत्ति संयोजकों व कार्यकारिणी सदस्यों का सर्वानुमति से मनोनयन किया गया। **-आशीष बुच्चा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आचार्य श्री रामेश का 49वाँ दीक्षा दिवस धर्मोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर शासन दीपक श्री लाघव मुनि जी म.सा. न फरमाया कि आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों में से कम से कम एक आयाम लेकर दीक्षा दिवस को सफल बनाएँ।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज का दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण है। आचार्य भगवन् ने आज के दिन अपने कर्मों की निर्जरा के लिए दीक्षा ली और अपनी आत्मा पर लगे मैल को धो दिया।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आज के दिन महापुरुषों से प्रेरणा लेकर हमारे जीवन में जो विषय-कषायों की आग लगी है, उसे संयम लेकर ठंडी करें और साधना के मार्ग पर आगे बढ़ें।

महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 21 फरवरी को 'महत्तम शिखर' का आगाज समता भवन में बैनर विमोचन के साथ हुआ। इस अवसर पर स्थानीय तीनों संघों के पदाधिकारियों सहित गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। महत्तम शिखर के संयोजक ने शिखर महोत्सव के बिंदुओं का विस्तार से विवेचन किया। महत्तम शिखर की शुरुआत राम स्तुति, गुरुवचन, महत्तम शिखर यात्रा, प्रश्नोत्तर व '**सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे**' के सामूहिक संगान से हुई। संघ समर्पणा गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। **-नोरतमल बाबेल**

बजरिया, सवाई माधोपुर। श्री साधुमार्गी जैन संघ की नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन 14 फरवरी को किया गया, जिसमें संरक्षक- बाबूलाल जी जैन, निरंजनलाल जी जैन, अध्यक्ष- उच्छबचंद जी जैन, उपाध्यक्ष- बाबूलाल जी जैन, मंत्री- अशोक कुमार जैन, सहमंत्री- मनोज कुमार जी जैन, कोषाध्यक्ष- पदमचंद जी जैन को सर्वानुमति से मनोनीत किया गया।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का 32वाँ युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का 5वाँ उपाध्याय पदारोहण दिवस 12 मार्च को श्रुतभक्ति दिवस के रूप में मनाया गया। नवकार महामंत्र एवं रामेश चालीसा के सामूहिक गान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् संघ, महिला समिति अध्यक्ष, मंत्री सहित गणमान्यजनों ने गद्य-पद्य में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के गुणगान किए। अंत में वंदना एवं मांगलिक श्रवण के साथ सभा का समापन हुआ। **-अशोक कुमार जैन**

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

खिरकिया। आचार्य श्री रामेश के 49वें दीक्षा दिवस पर महत्तम शिखर वर्ष का शुभारंभ महत्तम शिखर बैनर विमोचन के साथ 21 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर भजन प्रस्तुति के साथ सर्वप्रथम 11 नवकार महामंत्र का जाप किया गया। श्री श्वेतांबर जैन संघ के श्रावक-श्राविकाओं एवं महत्तम महोत्सव के स्थानीय प्रमुखों की उपस्थिति रही। वक्ताओं ने आचार्य श्री रामेश के विभिन्न गुणों के विवेचन के साथ संघ की विविध प्रवृत्तियों की जानकारी दी। सभा में '**अभिमोक्षम्**' शिविर की जानकारी दी गई। रेपिड फायर प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सभा में ऊर्जा का संचार हो गया। सामूहिक रूप से जयवंता-जयवंता गीत, संघ समर्पणा गीत, सामूहिक वंदना, संयम चालीसा एवं जय-जयकारों के साथ राम गुरु स्तुति आदि मधुर स्वरों में गायन किए गए। महत्तम महोत्सव स्थानीय प्रमुख ने सभी का आभार ज्ञापित किया। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। **-आशीष जैन**

✧✧✧✧ छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ✧✧✧✧

मुंगेली। श्री स्थानकवासी साधुमार्गी जैन संघ की सभा का आयोजन 26 फरवरी को पाबूदान जी कोटड़िया के निवास पर किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से इस प्रकार मनोनयन किया गया :- संरक्षक- विजयलाल जी कोटड़िया, जेठमल जी कोटड़िया, पन्नालाल जी कोटड़िया, कन्हैयालाल जी कोटड़िया, ज्ञानचंद जी

लोढ़ा, अध्यक्ष- नरेंद्र जी कोटड़िया, कार्यकारी अध्यक्ष- संदीप जी कोटड़िया, उपाध्यक्ष- संदीप जी कोटड़िया, सचिव- अभिषेक जी लोढ़ा, सह-सचिव- मंगल जी कोटड़िया, कोषाध्यक्ष- राजकुमार जी कोटड़िया, सह-कोषाध्यक्ष- पाबूदान जी कोटड़िया एवं विभिन्न व्यवस्था प्रमुख चुने गए।

समता महिला मंडल के संरक्षक- मग्गी बाई कोटड़िया, इंदिरा बाई कोटड़िया, शायर बाई कोटड़िया, अर्चना बाई कोटड़िया, उर्मिला बाई कोटड़िया, पुष्पा बाई लोढ़ा, अध्यक्ष- संगीता जी कोटड़िया, कार्यकारी अध्यक्ष- ममता जी कोटड़िया, उपाध्यक्ष- शोभा जी कोटड़िया, प्रभा जी कोटड़िया, कोषाध्यक्ष- सरिता जी कोटड़िया, शीला जी कोटड़िया, सचिव- प्रीति जी कोटड़िया, सह-सचिव- श्रेया जी कोटड़िया एवं छह कार्यकारिणी सदस्याओं का मनोनयन सर्वानुमति से किया गया। **-अरुण कोटड़िया**

✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

शिरपुर। महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल का आंचलिक महत्तम महोत्सव समन्वय सम्मेलन 13 फरवरी को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के नेतृत्व में आयोजित किया गया। नवकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के पश्चात् संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी सहित सभी वक्ताओं ने महत्तम शिखर के संबंध में अपने अमूल्य विचार रखते हुए महत्तम शिखर से जन-जन को जोड़ने पर बल दिया। महिला समिति की राष्ट्रीय मंत्री ने कहा कि हमें गुरुदेव के आयामों और महत्तम शिखर के सभी प्रकल्पों को घर-घर तक पहुँचाकर जनकल्याण का अभिनव कार्य करना है। कार्यक्रम में महत्तम महोत्सव के लिए बनाई गई स्थानीय समन्वय टीम के कार्य पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में अंचल की तीनों इकाइयों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, स्थानीय संघों के अध्यक्ष-मंत्रीगण, आंचलिक महत्तम प्रमुख सहित नंदुरबार, धुलिया आदि क्षेत्रों से अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। अंचल के राष्ट्रीय मंत्री ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

-रमेश संकलेचा

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, ✧✧ झारखंड, आंशिक उड़ीसा अंचल ✧✧

रामपुरहाट। स्थानीय संघ एवं सहयोगी इकाइयों के तत्वावधान में 21 फरवरी को महत्तम शिखर वर्ष का शुभारंभ अपूर्व उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम में तीनों इकाइयों के अध्यक्ष, मंत्री सहित पदाधिकारियों व सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। सामूहिक सामायिक एवं पच्चक्खाण आदि हुए। महत्तम शिखर वर्ष में आयंबिल, एकासन, उपवास आदि की लड़ी हेतु महिला समिति सदस्याओं ने नाम लिखवाए। इस अवसर पर रामेश चालीसा, संघ समर्पणा गीत का सामूहिक संगान किया गया। **-सुशील बाँठिया**

✧✧✧✧✧✧✧ पूर्वोत्तर अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

सिलचर। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 49वें दीक्षा दिवस पर 21 फरवरी को 'महत्तम शिखर' का शुभारंभ उत्साह से किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ 11 नवकार महामंत्र के साथ मंगलाचरण से किया गया। संघ अध्यक्ष ने आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के विवेचन के साथ महत्तम शिखर की जानकारी दी। रामगुरु स्तुति, संयम चालीसा, रामेश चालीसा, संघ समर्पणा गीत का सामूहिक संगान किया गया। वीर भ्राता जेठमल जी बैद ने मंगलपाठ सुनाया। सामायिक प्रत्याख्यान के पश्चात् महत्तम शिखर बैनर का विमोचन किया गया। इस विशेष दिवस से संपूर्ण पूर्वोत्तर में तपस्याओं की लड़ी प्रारंभ की गई, जो पूरे वर्ष चलेगी। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत धार्मिक कार्यक्रमों के साथ जीवदया, आरोग्यम्, नि:शुल्क चश्मा वितरण आदि सामाजिक कार्यक्रम हुए। **-विजय कुमार सांड**

वर्ष 2024

सूर्योदय-सूर्यास्त समय सारिणी

माह		बीकानेर		उदयपुर		रतलाम		दिल्ली	
		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	1	7:28	17:52	7:19	17:57	7:11	17:54	7:13	17:36
जनवरी	15	7:29	18:02	7:21	18:07	7:13	18:04	7:15	17:45
फरवरी	1	7:24	18:16	7:17	18:20	7:10	18:16	7:09	17:59
फरवरी	15	7:14	18:27	7:09	18:29	7:02	18:25	6:57	18:10
मार्च	1	7:01	18:37	6:57	18:37	6:51	18:33	6:45	18:21
मार्च	15	6:46	18:45	6:44	18:44	6:38	18:38	6:30	18:29
अप्रेल	1	6:26	18:54	6:26	18:51	6:21	18:45	6:10	18:39
अप्रेल	15	6:11	19:02	6:13	18:57	6:08	18:51	5:55	18:47
मई	1	5:56	19:10	6:00	19:04	5:56	18:57	5:40	18:56
मई	15	5:47	19:11	5:51	19:11	5:48	19:04	5:30	19:05
जून	1	5:40	19:28	5:46	19:20	5:43	19:12	5:23	19:14
जून	15	5:40	19:34	5:46	19:25	5:43	19:17	5:22	19:20
जुलाई	1	5:44	19:37	5:50	19:28	5:47	19:20	5:27	19:23
जुलाई	15	5:50	19:35	5:55	19:26	5:52	19:18	5:33	19:20
अगस्त	1	5:59	19:26	6:03	19:19	5:56	19:11	5:42	19:11
अगस्त	15	6:06	19:15	6:09	19:09	6:06	19:02	5:50	19:00
सितम्बर	1	6:15	18:57	6:16	18:53	6:12	18:47	5:59	18:42
सितम्बर	15	6:22	18:41	6:21	18:39	6:16	18:33	6:06	18:25
अक्टूबर	1	6:29	18:22	6:27	18:21	6:21	18:16	6:14	18:06
अक्टूबर	15	6:37	18:07	6:33	18:08	6:26	18:03	6:22	17:51
नवम्बर	1	6:48	17:52	6:42	17:55	6:35	17:51	6:33	17:35
नवम्बर	15	6:58	17:44	6:51	17:48	6:43	17:44	6:43	17:27
दिसम्बर	1	7:10	17:40	7:02	17:46	6:54	17:43	6:56	17:23
दिसम्बर	15	7:20	17:43	7:11	17:49	7:03	17:46	7:06	17:26

वर्ष 2024

सूर्योदय-सूर्यास्त समय सारिणी

मुम्बई		दुर्ग		चेन्नई		कोलकाता		गुवाहाटी	
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
7:11	18:12	6:42	17:34	6:31	17:53	6:16	17:03	6:10	16:42
7:14	18:20	6:44	17:43	6:35	18:01	6:18	17:12	6:12	16:52
7:12	18:31	6:42	17:54	6:35	18:09	6:15	17:24	6:07	17:05
7:06	18:38	6:35	18:02	6:31	18:14	6:08	17:33	5:58	17:15
6:56	18:44	6:25	18:09	6:25	18:17	5:58	17:39	5:47	17:24
6:47	18:48	6:14	18:14	6:16	18:19	5:45	17:45	5:32	17:31
6:33	18:52	5:58	18:19	6:05	18:20	5:29	17:51	5:14	17:39
6:21	18:55	5:46	18:23	5:56	18:21	5:17	17:57	5:00	17:46
6:11	19:00	5:34	18:29	5:48	18:23	5:04	18:03	4:46	17:54
6:04	19:05	5:27	18:35	5:43	18:27	4:56	18:09	4:36	18:02
6:00	19:12	5:22	18:42	5:41	18:32	4:51	18:17	4:30	18:10
6:01	19:17	5:22	18:47	5:42	18:36	4:51	18:22	4:30	18:16
6:04	19:20	5:26	18:50	5:46	18:39	4:55	18:25	4:34	18:19
6:09	19:19	5:31	18:49	5:50	18:39	5:00	18:24	4:39	18:17
6:15	19:14	5:38	18:43	5:54	18:36	5:07	18:17	4:48	18:10
6:19	19:06	5:43	18:35	5:56	18:30	5:13	18:08	4:55	17:59
6:23	18:53	5:48	18:21	5:57	18:20	5:19	17:54	5:02	17:43
6:26	18:41	5:51	18:08	5:57	18:20	5:23	17:40	5:08	17:27
6:29	18:27	5:55	17:53	5:58	17:59	5:27	17:24	5:15	17:10
6:32	18:16	6:00	17:40	5:59	17:50	5:32	17:11	5:21	16:55
6:38	18:05	6:07	17:29	6:02	17:42	5:40	16:59	5:31	16:41
6:45	18:00	6:15	17:23	6:07	17:3	5:48	16:52	5:41	16:33
6:55	17:59	6:25	17:22	6:15	17:40	5:59	16:51	5:52	16:30
7:03	18:03	6:34	17:25	6:22	17:44	6:08	16:54	6:02	16:33

सौजन्य :- विभिन्न स्रोतों से

पक्खी की टीप

श्री निर्णयसागर पंचांगानुसार

(श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा स्वीकृत)

विक्रम संवत् : 2081, वीर निर्वाण संवत् : 2550-51 — प्रधान कार्यालय- समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.) — **शक संवत् : 1946, ईस्वी सन् : 2024-25**

पक्ष	पक्खी की तिथि	वार	दिनांक	तिथि		पुष्य नक्षत्र दिनांक
				घटी	बढ़ी	
चैत्र सुदी	15	मंगलवार	23-04-24	-	-	16-04-24
वैशाख बदी	14	मंगलवार	07-05-24	7	1	14-05-24
वैशाख सुदी	14	बुधवार	22-05-24	2	8	10-06-24
ज्येष्ठ बदी	15	गुरुवार	06-06-24	10	-	07-07-24
ज्येष्ठ सुदी	14	शुक्रवार	21-06-24	-	11	04-08-24
आषाढ़ बदी	15	शुक्रवार	05-07-24	1 एवं 14	-	31-08-24
आषाढ़ सुदी	14	शनिवार	20-07-24	-	3	27-09-24
श्रावण बदी	15	रविवार	04-08-24	4	-	24-10-24
श्रावण सुदी	15	सोमवार	19-08-24	13	7	21-11-24
भाद्रपद बदी	द्वि. 15	मंगलवार	03-09-24	6	15	18-12-24
भाद्रपद सुदी	14	मंगलवार	17-09-24	-	-	15-01-25
आश्विन बदी	15	बुधवार	02-10-24	1	-	11-02-25
आश्विन सुदी	15	गुरुवार	17-10-24	12	3	10-03-25
कार्तिक बदी	15	शुक्रवार	01-11-24	4	11	**रोहिणी नक्षत्र**
कार्तिक सुदी	15	शुक्रवार	15-11-24	14	-	12-04-24
मार्गशीर्ष बदी	14	शनिवार	30-11-24	-	13	10-05-24
मार्गशीर्ष सुदी	15	रविवार	15-12-24	9	-	06-06-24
पौष बदी	15	सोमवार	30-12-24	-	-	03-07-24
पौष सुदी	15	सोमवार	13-01-25	13	-	31-07-24
माघ बदी	14	मंगलवार	28-01-25	-	5	27-08-24
माघ सुदी	15	बुधवार	12-02-25	5	-	23-09-24
फाल्गुन बदी	14/15	गुरुवार	27-02-25	15	6	20-10-24
फाल्गुन सुदी	14	गुरुवार	13-03-25	-	-	17-11-24
चैत्र बदी	14	शुक्रवार	28-03-25	-	-	14-12-24
						11-01-25
						07-02-25
						06-03-25

नोट :- प्रतिक्रमण में प्रतिदिन 4 लोगस्स, पक्खी के दिन 8 लोगस्स, चौमासी के दिन 12 लोगस्स एवं संवत्सरी महापर्व के दिन 20 लोगस्स का ध्यान करना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण दिवस

आराधना दिवस

1. **नवपद ओली प्रारंभ-** चैत्र सुदी 7, सोमवार, 15-04-24
2. **नवपद ओली पूर्ण-** चैत्र सुदी 15, मंगलवार, 23-04-24
3. **अक्षय तृतीया-** वैशाख सुदी 3, शुक्रवार, 10-05-24
4. **चातुर्मास प्रारंभ-** आषाढ़ सुदी 14, शनिवार, 20-07-24
5. **पर्युषण प्रारंभ-** भाद्रपद बदी 14, रविवार, 01-09-24
6. **संवत्सरी महापर्व-** भाद्रपद सुदी 5, रविवार, 08-09-24
7. **नवपद ओली प्रारंभ-** आश्विन सुदी 6, बुधवार, 09-10-24
8. **नवपद ओली पूर्ण-** आश्विन सुदी 15, गुरुवार, 17-10-24
9. **चातुर्मास पूर्ण-** कार्तिक सुदी 15, शुक्रवार, 15-11-24
10. **फाल्गुनी चातुर्मास-** फाल्गुन सुदी 14, गुरुवार, 13-03-25

शुभ दिवस

1. **भगवान श्री महावीर जयंती-** चैत्र सुदी 13, रविवार, 21-04-24
2. **संघ स्थापना दिवस-** आश्विन सुदी 2, शुक्रवार, 04-10-24
3. **आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की 25वीं पुण्यतिथि एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस-** कार्तिक बदी 3, रविवार, 20-10-24
4. **दीपावली एवं भगवान महावीर निर्वाण-** कार्तिक बदी 15, शुक्रवार, 01-11-24
5. **आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं उपाध्याय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का उपाध्याय पदारोहण दिवस-** फाल्गुनी सुदी 3, रविवार, 02-03-25

अस्वाध्याय संबंधी दिवस

1. **ज्येष्ठ सुदी 14, शुक्रवार, दिनांक 21-06-24** को सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र का योग हो रहा है। उसके बाद मेघगर्जना एवं विद्युत संबंधी अस्वाध्यायिक नहीं रहेगा।
2. **कार्तिक बदी 7, बुधवार, दिनांक 23-10-24** को सूर्य के साथ स्वाति नक्षत्र का योग हो रहा है। उसके बाद मेघगर्जना एवं विद्युत संबंधी अस्वाध्यायिक पुन: चालू हो जाएगी।
3. **चैत्र की पूर्णिमा व अगली (प्रथम) प्रतिपदा दिनांक 23 एवं 24-04-24,** आषाढ़ की पूर्णिमा एवं अगली प्रतिपदा दिनांक 21 एवं 22-07-24, आश्विन की पूर्णिमा एवं अगली प्रतिपदा दिनांक 17 एवं 18-10-24, कार्तिक की पूर्णिमा एवं अगली प्रतिपदा दिनांक 15 एवं 16-11-24। इन दिनों पूर्ण अस्वाध्यायिक रहेगा।

परमागम, रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की विशेष आज्ञा से भदेसर में भव्य जैन भागवती दीक्षा संपन्न

संथारा साधिका मुमुक्षु कस्तूर बाई मोदी बनीं नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा.

भदेसर, 11 मार्च 2024। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की महती कृपा से भदेसर में भव्य जैन भागवती दीक्षा संपन्न हुई। शास्त्रज्ञ आचार्य श्री रामेश की विशेष आज्ञा से शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. के मुखारविंद से वीर माता सुश्राविका कस्तूर बाई धर्मपत्नी वरिष्ठ स्वाध्यायी वीर पिता स्व. श्री शांतिलाल जी मोदी ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर अपना मनोरथ पूर्ण किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. ने 95 वर्षीय सुश्राविका कस्तूर बाई को 09 मार्च 2024, सायं 5:10 बजे तिविहार संथारे के पच्चक्खाण ग्रहण करवाए। तिविहार संथारे के पच्चक्खाण पश्चात् संथारा साधिका जी ने म.सा. से दीक्षा ग्रहण करने के भाव व्यक्त किए। इस पर परिजनों ने भी दीक्षा में अंतराय नहीं देते हुए अनुज्ञा प्रदान की। संथारा साधिका जी के उच्च भाव गुरुचरणों में निवेदित किए गए, जिस पर आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा वर्षण करते हुए दीक्षा हेतु अपनी विशेष आज्ञा प्रदान की।

कृपानिधि आचार्यदेव की विशेष आज्ञा से 11 मार्च 2024 को भव्य दीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रात:काल से ही श्रावक-श्राविकाओं के कदम स्थानक की ओर बढ़ रहे थे। मुमुक्षु बहिन कस्तूर बाई मोदी साधुवेश में सभा के मध्य उपस्थित थीं। सैकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थिति में शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. ने संथारा साधिका मुमुक्षु बहिन कस्तूर बाई से दीक्षा की तैयारी हेतु पूछा तो आपने तुरंत ही संयम पथ प्रदान करने की विनती साध्वीवर्या के चरणों में रखी। इसी क्रम में शासन दीपिका साध्वीश्री जी ने उपस्थित जनसमूह से दीक्षा हेतु आज्ञा चाही तो सभी ने अपने दोनों हाथ खड़े कर दीक्षा की पूर्ण अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया।

दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. ने करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर मुमुक्षु बहिन कस्तूरबाई मोदी को नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण नवदीक्षिता **साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा.** की घोषणा होते ही संपूर्ण पांडाल जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता गीत से गूँज उठा। यह दीक्षा भदेसर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

ज्ञातव्य है कि नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. आचार्य श्री रामेश शासन में समर्पित साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय माता जी हैं। साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. की दीक्षा 28 वर्ष पूर्व भदेसर में ही संपन्न हुई थी। संथारा साधिका जी ने अपने जीवन में पंद्रह, बारह, ग्यारह, अठाई, ओली जी सहित अनेक तप कर गुरुकृपा से जीवन सार्थक बनाया। आपने 80 वर्ष की आयु में 12 की तपस्या कर सभी को गौरव की अनुभूति कराई।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा मध्य प्रदेश अंचल का सघन प्रवास

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति के राष्ट्रीय संयोजक सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति में मध्य प्रदेश अंचल का सघन प्रवास 12 एवं 13 मार्च को संपन्न हुआ। इस दौरान कंजार्ड़ा, झार्ड़ा, पिपलिया मंडी, खाचरोद, नागदा, महीदपुर, गुराड़िया एवं उज्जैन आदि क्षेत्रों के स्थानीय संघों में अभूतपूर्व संघ उन्नयन के प्रयास किए गए।

प्रवासी दल का प्रथम दिवस क्रमश: कंजार्ड़ा, झार्ड़ा एवं पिपलिया मंडी पधारना हुआ, जहाँ आयोजित बैठकों में संघ प्रवृत्तियों एवं विभिन्न आयामों के साथ-साथ महत्तम शिखर महोत्सव के दौरान चल रही गतिविधियों की विवेचना की गई। झार्ड़ा संघ ने संघ आबद्धता हेतु स्वीकृति प्रदान की एवं पिपलिया मंडी संघ सदस्यों ने संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों हेतु रजिस्ट्रेशन फार्म भरे।

रात्रि विश्राम जावरा में करने के पश्चात् प्रवास के द्वितीय दिवस प्रवास टीम का खाचरोद में पधारना हुआ। यहाँ आयोजित संघ बैठक में झमकलाल जी अनिल जी बरखेड़ा वालों द्वारा महत्तम शिखर हेतु अनुदान की घोषणा की गई। इदं में मम हेतु भी सदस्यों ने स्वीकृत प्रदान की। खाचरोद संघ ने संघ आबद्धता हेतु स्वीकृति दी। यहाँ से प्रवासी दल नागदा जंक्शन पहुँचा। यहाँ आयोजित मीटिंग में पदाधिकारियों द्वारा दी जानकारी से प्रेरित होकर निर्मल जी चपलोत ने विहार सेवा सदस्यता हेतु स्वीकृति प्रदान की। पदाधिकारियों द्वारा उनका बहुमान किया गया। नागदा जंक्शन संघ ने केंद्रीय संघ आबद्धता हेतु स्वीकृति दी। प्रवास के अगले क्रम में महीदपुर संघ में हुई सभा में इदं न मम सदस्य बनाए गए एवं प्रवासी दल ने संघ सहयोग हेतु सभी को प्रेरित करते हुए सभी से सहयोग का आह्वान किया।

महीदपुर से प्रवासी दल धर्मपाल क्षेत्र गुराड़िया पहुँचा। यहाँ समता संस्कार पाठशाला के बच्चों के धार्मिक अध्ययन एवं व्यवस्था आदि की जानकारी ली। छोटे-छोटे बच्चों ने सामायिक की पाटियाँ सुनाकर सभी का मन मोह लिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार वितरित किए गए। इसी क्रम में प्रवास का अगला पड़ाव उज्जैन रहा। यहाँ संघ सदस्यों की अच्छी उपस्थिति में आयोजित बैठक में पदाधिकारियों ने संघ प्रवृत्तियों की जानकारियाँ उपस्थित महानुभावों के समक्ष रखी। राजीव जी सूर्या ने इदं न मम में प्रतिवर्ष राशि प्रदान करने की घोषणा की एवं अनेक महानुभावों ने इदं न मम में सहयोग हेतु स्वीकृति फार्म भरे।

सभी प्रवास स्थलों पर इंद्र धनुष-3 पुस्तक के माध्यम से महत्तम शिखर की प्रभावना की गई। राष्ट्रीय महामंत्री जी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्व श्री सरोजबाला जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-सेवा एवं प्रवचन श्रवण का लाभ मिला।

मुख्य उपलब्धियाँ

(1) चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ।
(2) इदं न मम सहित अनेक प्रवृत्तियों के सदस्य बने।
(3) तीन स्थानीय संघों (नागदा जंक्शन, खाचरोद एवं झार्ड़ा) संघ आबद्धता हेतु स्वीकृति दी।
(4) महत्तम शिखर के लिए राशि की घोषणा।
(5) विहार सेवा संयोजन सदस्यता हेतु राशि की घोषणा।

-राष्ट्रीय मंत्री

'नो शॉर्टकट प्लीज!' पर चर्चा का आयोजन

नई दिल्ली में संपन्न विश्व पुस्तक मेला में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की इकाई साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की अनुपम कृति **'नो शॉर्टकट प्लीज!'** पर चर्चा का आयोजन 15 फरवरी 2024 को किया गया। चर्चा करते हुए आशुतोष जी शुक्ल ने कहा कि यह पुस्तक अपनी तरह की अकेली पुस्तक है। इसमें न तो कोई काल्पनिक कहानी है और न ही यह किसी की नकल करने के लिए कहती है। पुस्तक संदेश देती है कि शॉर्टकट से मिली सफलता स्थायी नहीं होती। पुस्तक में एक साधक के जीवन में घटी घटनाओं के माध्यम से सफलता प्राप्ति हेतु आवश्यक बातों का उल्लेख किया गया है और उल्लेख करने वाले स्वयं उच्चकोटि के साधक हैं। प्रत्येक अध्याय में दिए गए चार छोटे-छोटे बिंदु पाठकों को बहुत कुछ देने वाले हैं। अध्याय के अंत में दी गई सूक्तियाँ तो सोने पे सुहागा हैं।

सह-संयोजिका ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता लंबे समय तक टिकी रहे, इसके लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। जिनेंद्र जैन, दिलीप शर्मा एवं ललित बोथरा ने भी पुस्तक में वर्णित विभिन्न घटनाओं पर चर्चा की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली-पंजाब-हरियाणा अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने की। इस अवसर पर दिल्ली संघ एवं समता युवा संघ के अध्यक्ष, मंत्री तथा सदस्य भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम संचालन साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक ने किया।

"संयम हमारी आत्मा को ताकत देने वाला गुण है। वैद्य और डॉक्टर कमजोरी को दूर करने के लिए ताकत की दवा देते हैं वैसे ही संयम आत्मा को ताकत देने वाला है। इच्छाओं के कारण हमारी दशा जर्जरित हो जाती है। जैसे बड़े-बड़े बाँधों का पानी जहाँ टिका रहता है, वह भूमि बंजर हो जाती है उसी प्रकार जिस आत्मा में निरंतर इच्छाओं का पानी बहता रहता है अथवा जमा रहता है, वह आत्मभूमि भी बंजर हो जाती है। फिर धर्म की फसल वहाँ पनप नहीं सकती। परिणामस्वरूप कषायों और विषयों का वहाँ जमावड़ा हो जाया करता है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विविध भेंट मार्फत

01 फरवरी से 29 फरवरी 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –

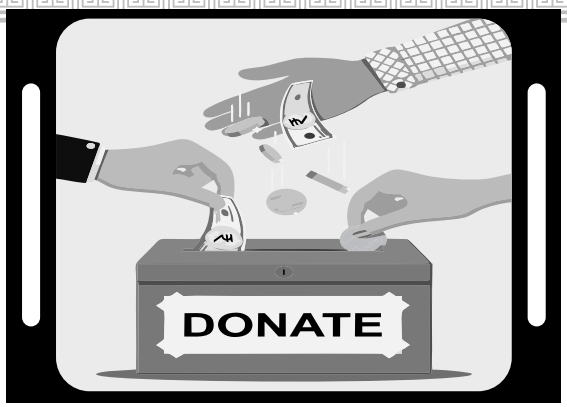

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

7,00,000/– सुजानमल जी किशोर जी कर्णावट, बेंगलुरु

2,50,000/– मदनलाल जी पन्नालाल जी कटारिया, रतलाम

25,000/– उमेश कुमार जी मेहता, सूरत

5,100/– अभिलाषा जी जितेश जी चौरड़िया, दिल्ली

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

समता भवन, हावड़ा

9,50,000/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, हावड़ा

1,51,000/– लालचंद जी डागा, कोलकाता

समता भवन, संगरिया

2,50,000/– जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

1,25,000/– कांतिलाल जी कटारिया, रतलाम

75,000/– मदनलाल जी कटारिया, रतलाम

50,000/– रमेश जी कटारिया, रतलाम

25,000/– चंद्रशेखर जी सुंदरलाल जी खिंदावत, नागदा

25,000/– राजकरण जी बरड़िया, अहमदाबाद

समता भवन, खोर

1,50,000/– जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

75,000/– कांतिलाल जी कटारिया, रतलाम

45,000/– मदनलाल जी कटारिया, रतलाम

30,000/– रमेश जी कटारिया, रतलाम

15,000/– चंद्रशेखर जी सुंदरलाल जी खिंदावत, नागदा

15,000/– राजकरण जी बरड़िया, अहमदाबाद

15,000/– पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़

समता भवन, चिखलाकसा

1,10,000/– जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

समता भवन, धुले

10,000/– जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

दानपेटी योजना

1,50,000/– विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु

31,000/– मनोज जी श्रेणिक जी सिपानी, बेंगलुरु

20,098/– श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, कानोड़

20,000/– जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु

15,500/– भंवरलाल जी पींचा, जोरावरपुरा

15,100/– सुगनचंद जी रेखचंद जी धोका, चेन्नई

10,000/– साहिल जी सिपानी, बेंगलुरु

8,200/– शांतिलाल जी महेश कुमार जी नीरज कुमार जी चोपड़ा, बेंगलुरु

6,100/– अमृतलाल जी पींचा, जोरावरपुरा

5,000/– सोहनी बाई मिश्रीलाल जी मुणोत, बेंगलुरु

5,000/– सुधा जी रामपुरिया, बीकानेर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– शांतिलाल जी

सांड, बेंगलुरु, चंद्रा जी शोभा जी बाबेल, बड़ीसादड़ी, निर्मल जी कोठारी, बोलपुर, शांतिलाल जी सुराणा, बोलपुर, रंजीत जी लुणावत, बोलपुर

1,651/- मोहनलाल जी किशोर कुमार जी चोपड़ा, बेंगलुरु

1,500/- महावीर जी सुराणा, पाँचू

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- चंदा जी पिछोलिया, वडोदरा, कल्याण सिंह जी नागौरी, उदयपुर, बसंतीलाल जी बाफना, भोपालसागर, **पंचकुला से-** नवरतन जी बोथरा, महेंद्र कुमार जी बैद, **बेंगलुरु से**- राजेंद्र कुमार जी मनीष कुमार जी बोथरा, जयंतीलाल जी अरिहंत जी चोपड़ा, महावीरचंद जी चोपड़ा, देवराज जी बसंत कुमार जी चोपड़ा, बसंता बाई लक्ष्मीचंद जी दुधिया, मीठालाल जी दुधिया, अभिषेक कुमार जी बोथरा, आकाश जी बोथरा, **जोरावरपुरा से-** पुखराज जी पींचा, बिमलचंद जी बिनायकिया, ताराचंद जी बिनायकिया, खेतमल जी हनुमानमल जी पींचा, **पाँचू से-** धूड़चंद जी धरमचंद जी बरड़िया, बच्छराज जी सिंगी, जोगराज जी बाँठिया, विनोद कुमार जी मनोज कुमार जी सुराणा, चुन्नीलाल जी बरड़िया, किशनलाल जी धनराज जी डागा, सूरजमल जी बरड़िया, महावीर प्रसाद जी बरड़िया, मेघराज जी बरड़िया, विजयराज जी बरड़िया, चंपालाल जी बरड़िया, जयचंद जी बरड़िया, गणेशमल जी सिंघी, हीरालाल जी बरड़िया

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- डॉ. पी.एम. भंसाली, बेंगलुरु, कनकलता बाई अशोक कुमार जी मूथा, बेंगलुरु, विजय कुमार जी गोलछा, बीकानेर, मनोज कुमार जी भूरा, ज़ीरकपुर, उत्तम कुमार जी भूरा, ज़ीरकपुर

701/- करणीदान जी बोथरा, जोरावरपुरा, 700/- किरणराज जी आशीष जी चोपड़ा, बेंगलुरु, 700/- सोहनलाल जी धारीवाल, बेंगलुरु, 700/- प्रकाशचंद जी बंब, बेंगलुरु, 700/- शंकरलाल जी लोढ़ा, उदयपुर, 650/- ओमप्रकाश जी गोलछा, जोरावरपुरा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- हेमंत जी सुराणा, बोलपुर, मनीष जी कोठारी, बोलपुर, **चंडीगढ़ से**- श्यामलाल जी सेठिया, रामलाल जी सेठिया, हरीश जी हीरावत, **बेंगलुरु से**- प्रदीप कुमार जी गिलुंडिया, गौतमचंद जी शीतल कुमार जी चोपड़ा, निर्मल कुमार जी शैलेष कुमार जी चोपड़ा, **पंचकुला से**- हुलासमल जी सेठिया, संजय जी बोथरा, किशोर जी बोथरा, धीरज कुमार जी बोथरा, किशनलाल जी बोथरा, जेठमल जी बैद, विजयराज जी कातेला, प्रेमचंद जी रामपुरिया, मनोज जी रामपुरिया, राहुल जी रामपुरिया, नरेंद्र जी सेठिया, सुशील जी कातेला, निर्मल जी सेठिया, **जीरकपुर से**- शांतिलाल जी सेठिया, अशोक कुमार जी रांका, सुरेंद्र जी सेठिया, तेजपाल जी बैद, **जोरावरपुरा से**- आसकरण जी पींचा, उगराज जी संचेती, हुलास जी संचेती, भीवराज जी बोहरा, रतनलाल जी चोपड़ा, प्रेमरतन जी गोलछा, प्रकाशचंद जी बोथरा, केसरीचंद जी दुगड़, जेठमल जी दुगड़, **पाँचू से**- अशोक कुमार जी सिंगी, हड़मानमल जी बाँठिया, भंवरलाल जी बैद, मोहनलाल जी बैद, कन्हैयालाल जी बरड़िया, **वडोदरा से**- कमला जी पिछोलिया, भावना जी पिछोलिया, रेशमा जी पिछोलिया, निर्मल जी पिछोलिया, तारा जी पिछोलिया, पूजा जी पिछोलिया, सरोज जी मुणोत, सुनीता जी जैन, सुनीता जी मारू, प्रियंका जी श्रीश्रीमाल, मोनल जी जैन, श्वेता जी भंडारी, जयश्री जी सेठिया, चंद्रकला जी सिंघवी, बीना जी जारोली

इदं न मम

51,000/- ऋषभचंद जी भंसाली, मैसूर

22,000/- किशनलाल जी हेमंत जी महावीर जी मुणोत, चेन्नई

20,400/- इचू देवी बाँठिया, अररिया

15,300/- राजेंद्र जी लुंकड़, जलगाँव

11,000/- प्रेमरतन जी बोहरा, गुड़ी

11,000/- हस्तीमल जी कांकरिया, सेलम

11,000/– कमल जी पिरोदिया, रतलाम
10,500/– नेमीचंद जी बिनायकिया, अररिया
10,200/– विजयराज जी बच्छावत, जनकपुरधाम
10,200/– केवलचंद जी निलेश जी ममता जी पगारिया, जलगाँव
10,000/– मनोहरलाल जी कावड़िया, मुंबई
6,600/– विजय जी संचेती, रायपुर
6,600/– तुलसी बाई गुणधर, जलगाँव
6,600/– माणकलाल जी मुणोत, जलगाँव
6,600/– पन्नालाल जी मुणोत, जलगाँव
6,000/– आकाश जी विकास जी दुगड़, जनकपुर
5,500/– गुप्तदान
5,500/– कन्हैयालाल जी सोमा देवी बैद, गुवाहाटी
5,500/– संपतलाल जी पींचा, जलगाँव
5,500/– हीरालाल जी मुणोत, जलगाँव
5,100/– संपतलाल जी भूरा, गुड़ी
5,100/– चंपालाल जी भूरा, गुड़ी
5,100/– मंजू देवी भूरा, गुड़ी
5,100/– लोकेश जी भूरा, गुड़ी
5,100/– चंद्रा जी शोभा जी बाबेल, बड़ीसादड़ी
5,100/– दिलीप जी पारख, बेंगलुरु
5,100/–आसकरण जी भंवरलाल जी पींचा, जोरावरपुरा
5,100/– मोतीलाल जी मोहनलाल जी मुणोत, जलगाँव
5,100/– करणीदान जी मालू, सूरत
5,100/– मिलापचंद जी बोथरा, सूरत
5,100/– सोमप्रकाश जी नाहटा, सूरत
4,400/– राजमल जी परमार, वापी
4,367/– सज्जनराज जी चौरड़िया, जलगाँव
4,200/– उत्तमचंद जी राजेश जी सिंघी, अंबागढ़ चौकी
4,100/– कमला बाई कोयल जी वया, गिंगला, उदयपुर
3,300/– महेश जी मुणोत, जलगाँव
3,200/– जयश्री जी बच्छावत, सूरत
3,000/– अजीत जी कांकरिया, सूरत
3,000/– कुसुम देवी सेठिया, गंगाशहर
2,400/– बसंतीलाल जी बाफना, भोपालसागर
2,200/– हुलास जी सुराणा, सूरत
2,200/– शुभकरण जी भूरा, सूरत
2,200/– उमेश जी मेहता, सूरत
2,110/– कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– संपतलाल जी मोहनलाल जी गादिया, जबलपुर, शंकरलाल जी लोढ़ा, उदयपुर, कल्याण सिंह जी नागौरी, उदयपुर, **सूरत से–** ऊषा देवी कांकरिया, जयचंद जी डागा, अनिल कुमार जी मूथा, सिद्धार्थ जी वचन जी सुराणा, महावीर जी डागा, महेंद्र जी संपतराज जी भूरा, मनीष जी बच्छराज जी भूरा

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– महावीरचंद जी गुलगुलिया, सिलचर, जितेंद्र जी जसराज जी झाबक, अक्कलकुआं, कुशाल जी नंदलाल जी जैन, जलगाँव, विमल कुमार जी सुगनमल जी जैन, कानवन, **नंदुरबार से–** विपुल कुमार जी रमेशचंद जी देसरड़ा, रविंद्र जी जालमचंद जी भूरा, उज्ज्वला बाई दिलीप कुमार जी कांकरिया, अक्षय कुमार जी प्रेमराज जी कोठारी, प्रशांत कुमार जी रामलाल जी कोटेचा, **सूरत से–** प्रदीप जी गोलछा, अशोक जी सुराणा, राजश्री जी सुराणा, सुनील जी लूणावत, मेहुल जी राजेश जी जैन, प्रकाशचंद जी चोपड़ा, महेंद्र जी दक, जवरीमल जी सुराणा, अनिल जी दुगड़, किशोर जी भूरा, श्रीचंद जी बैद, आनंदमल जी भूरा, गौतमचंद जी बैद, लाभेंद्र जी भंसाली, धर्मेंद्र जी लुणावत, कांतिलाल जी मेहता, राकेश जी नानालाल जी देरासरिया, राकेश कुमार जी श्रीश्रीमाल, दिपेश जी जैन, अरविंद जी आंचलिया, चंद्रकुमार जी सिंघी

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मधु जी शीतल कुमार जी भाणावत, उदयपुर, नरेंद्र जी सेठिया, सूरत, राजेंद्र कुमार जी सुराणा, सूरत, धनराज जी सेठिया, गंगाशहर, राकेश जी सुभाष जी कांकरिया, सूरत

जीवदया

11,111/- भंवरलाल जी तोलाराम जी सुराना, बीकानेर
11,000/- गौतमचंद जी महावीरचंद जी धारीवाल, पुणे
5,100/- चंद्रा जी शोभा जी बाबेल, बड़ीसादड़ी (श्रीमती मनोहर देवी एवं चिमन सिंह जी बाबेल की पुण्यस्मृति में)
5,000/- सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद
5,000/- कमलचंद जी सांड, बीकानेर
2,100/- जयकुमार जी पारख, बीकानेर
2,000/- रोमिका जी नवलखा, बारडोली
1,500/- पियूष जी सरिता जी अहान जी मांडोत, पुणे
1,500/- गुप्तदान
1,500/- गुप्तदान
1,100/- **का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त**- अनिता जी सोनावत, गंगाशहर, सुंदरलाल जी कोचर, बीकानेर (श्री महेंद्र कुमार जी कोचर की पुण्यस्मृति में), सुंदरलाल जी नरेश जी सिपानी, गंगाशहर/बेंगलुरु, त्रिलोकचंद जी धारीवाल, देशनोक (धर्मपत्नी श्रीमती आशा देवी धारीवाल की पुण्यस्मृति में), हीरालाल जी बरड़िया, पांचू, हीरालाल जी बरड़िया, पांचू (श्रीमती आशा देवी धर्मपत्नी त्रिलोकचंद जी धारीवाल की पुण्यस्मृति में)
1,001/- नवीन जी गेलड़ा, बेंगलुरु
999/- मूलचंद जी मुकेश जी छाजेड़, साजा
500/- धर्मचंद जी काकड़िया, खरगौन (पश्चिमी निमाड़)
500/- गुप्तदान, झालरापाटन

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

1,60,000/- सुशील कुमार जी मेहता, ब्यावर
11,000/- हस्तीमल जी कांकरिया, सेलम

समता मिति योजना

5,000/- कृष्ण कुमार जी कन्हैयालाल जी बच्छावत, बीकानेर (वैशाख सुदी छठ श्रीमती किरण देवी पत्नी इंदरचंद जी बच्छावत की पुण्यस्मृति में)

समता प्रसार संघ

27,000/- अशोक कुमार जी गाँधी, इंदौर
11,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, करीमगंज
5,100/- निर्मल जी सिंघवी, इंदौर

समता संस्कार पाठशाला

500/- मोनालिसा जी जैन, रायपुर
500/- गुप्तदान, रायपुर

विहार सेवा

5,500/- गुप्तदान, सिलचर

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

5,000/- गुप्तदान, निम्बाहेड़ा
4,000/- सुशील जी मेहता, ब्यावर

श्रमणोपासक भेंट

50,000/- लीला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री इंदरमल जी सांड, बड़ावदा वाले (आचार्य भगवन् की संयम यात्रा के सुवर्ण दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में)
11,000/- नथमल जी जसकरण जी तातेड़, करीमगंज (अभिषेक जी और प्रेरणा जी का शुभविवाह उत्क्रांति से सम्पन्न होने के उपलक्ष में)
1,100/- शैतानमल जी गाँधी, रतलाम (धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी गाँधी की पुण्यस्मृति में)
500/- सुधीर कुमार जी जैन, बजरिया (विपिन और प्रियंका के शुभविवाह के उपलक्ष में)

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

5,100/- चंद्रा जी शोभा जी बाबेल, बड़ीसादड़ी (श्रीमती सुंदर बाई, हरिसिंह जी बाबेल की पुण्यस्मृति में)
1100/- मंजू देवी सुराणा, गंगाशहर

समता युवा संघ (समता शाखा पुस्तिका प्रकाशन सहयोग)

35,000/- सुरेश कुमार जी दक, मैसूर

:: विशेष ::

जनवरी-फरवरी माह

श्रमणोपासक सदस्यता-14, महिला समिति सदस्यता-23, युवा संघ सदस्यता-52, साहित्य सदस्यता-5

:: 01 अप्रैल 2023 से 29 फरवरी 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	***राशि***	***अन्य विवरण***
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/- प्रतिमाह	UPI विपुल जैन
22.04.23	1,100/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
06.07.23	3,000/-	नकद
20.07.23	1,000/-	UPI पिंकू
26.07.23	1,000/-	UPI प्रियंका
06.09.23	5,500/-	Cheque 403
19.09.23	2,100/-	UPI संजय
04.10.23	3,100/-	UPI मुकुल बोहरा
05.10.23	39,200/-	Ch. No. 732198
11.10.23	2,500/-	UPI ऋषभ
15.10.23	1,100/-	UPI विकास
16.10.23	21,000/-	Ch. No. 732210
30.10.23	2,100/-	UPI स्तुति
07.11.23	3,100/-	नकद
16.11.23	1,100/-	UPI सुशीला
11.12.23	2,500/-	NEFT
16.12.23	2,100/-	UPI कौशल
18.12.23	1,100/-	UPI महावीर
21.12.23	5,100/-	UPI चंचल
30.01.24	1,000/-	UPI गांधी सूर्या
02.02.24	1,111/-	UPI गौरव
06.02.24	11,000/-	UPI समता ट्रेडिंग
18.02.24	2,000/-	UPI ऋषभ जैन
29.02.24	7,000/-	नकद
यूको बैंक		
06.07.23	5,100/-	नकद
11.08.23	26,120/-	नकद
ए.यू. बैंक		
16.08.23	20,600/-	नकद

सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र '**श्रमणोपासक**' का प्रकाशन विगत 61 वर्षों से निरंतर हो रहा है। पाठकों के सहयोग व पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद से हजारों की तादाद में प्रतियाँ पूरे भारतवर्ष में ज्ञानार्जन हेतु पाठकों के पास पहुँचाई जाती हैं। विभिन्न अवसरों पर दी जाने वाली भेंट श्रमणोपासक में कलर और ब्लैक एंड व्हाइट में प्रकाशित की जाती है। समय की आवश्यकता को देखते हुए भेंट दरों में कुछ वृद्धि की गई है, जिसकी जानकारी केंद्रीय कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। 01 अप्रैल 2024 से प्रारंभ होने वाले आगामी वित्तीय वर्ष से नवीन दरें लागू होंगी। आप सभी पाठकों का सहयोग अपेक्षित है।

-श्रमणोपासक टीम

स्मृतिशेष सुश्रावक प्यारचंद जी कदमालिया

जन्म : 03 अक्टूबर 1940 स्वर्गवास : 29 अगस्त 2023 आयु : 84 वर्ष

जिनके शुभ कर्मों से महकता है,
आज भी हमारा घर-आँगन।
उनके स्मरण मात्र से,
दिल सम्मान से भर जाता है।।

परम पूज्य आचार्य श्री नानेश एवं परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामेश के पावन स्मरण से अपने दिन का शुभारंभ करने वाले बम्बोरा निवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक **स्व. श्री प्यारचंद जी कदमालिया** का जीवन गुणों से परिपूर्ण था। प्रतिपल गुरु दर्शन की भावना को संजाए रखकर आप चारित्रशील आत्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहे। धर्माराधना से आपने अपने जीवन को सार्थक कर हम सभी परिजनों को धर्म एवं गुरु समर्पणा का मार्ग दिखाया।

कड़ी मेहनत व उतार-चढ़ाव के बीच आप दृढ़प्रतिज्ञ होकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहे। आप धर्मनिष्ठ व कर्तव्यनिष्ठ सुश्रावक थे। धर्म व समाज के प्रति समर्पित रहते हुए आपने बम्बोरा संघ के कोषाध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दीं। प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण का लक्ष्य रखते हुए रात्रिभोजन व जमींकंद त्याग ग्रहण किया था। आपने अपना जीवन आजीवन नवकारसी के प्रत्याख्यान सहित उपवास, आयंबिल व कई तेले आदि तपस्याओं से सजाया हुआ था। आपका जीव प्रेरणादायी था। आपने आजीवन मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। आपकी धर्मसहायिका मानवता देवी संस्कारों से परिपूर्ण सुश्राविका है। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

श्रद्धावनत

मानवता देवी (धर्मसहायिका), **सुनील-सुनीता, विनोद-कल्पना, पूरण-रीना,**
स्व. राजेश-नीता (पुत्र-पुत्रवधू), **संगीता-जितेंद्र** (पुत्री-दामाद),
शुभम्, विनम्र, आँचल, स्वेच्छा, मोनिष, रक्षित, हर्षल (पौत्र-पौत्री), **भाविनी** (दोहिती),
ससुराल पक्ष : प्रकाश जी अशोक जी मेहता, उदयपुर

राम चमकते भानु समाना

विनम्र श्रद्धांजलि

खाचरोद। सुश्रावक सुभाषचंद्र जी दलाल का आकस्मिक निधन 23 जनवरी हो गया। आप शिक्षाविद्

होने के साथ-साथ सरल, सहज एवं सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी थे। निर्धन बच्चों को शिक्षा का नि:शुल्क दान करने में आप सदैव अग्रणी रहते। आप स्मृतिशेष आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. पर अपूर्व श्रद्धा रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

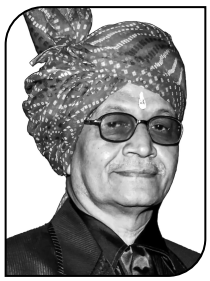

देशनोक। सुश्राविका आशा देवी धर्मपत्नी त्रिलोकचंद जी धारीवाल का 31 जनवरी को देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन 5-6 सामायिक, रामेश चालीसा, नवकार महामंत्र की माला आदि का लक्ष्य रखती थीं। आपके आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

चेन्नई। सुश्रावक दिनेश कुमार जी सुपुत्र ललित कुमार जी कातरेला का 02 फरवरी को 55 वर्ष

की आयु में देहावसान हो गया। आप आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के अनन्य भक्त थे। मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री कातरेला जी अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

अजमेर। सुश्रावक सुरेशचंद जी कोठारी का 18 घंटे संथारा सहित 13 फरवरी को महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यानों से ओत-प्रोत था। आप आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति पूर्ण आस्थावान थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

शहादा। सुश्रावक खुशालचंद जी कोटड़िया का

15 फरवरी को नासिक में निधन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के अनन्य भक्त थे। आप सामायिक व पोरसी के पश्चात् ही आहार ग्रहण करते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। सुश्राविका पाना देवी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचंद जी सिपानी का 21 फरवरी को निधन हो गया।

आप अत्यंत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। प्रतिदिन 9 सामायिक और 21 बार रामेश चालीसा का पाठ करने का लक्ष्य रखती थीं। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

दुर्ग। सुश्राविका कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री सिद्धकरण जी बोथरा का 86 वर्ष की आयु में 24 फरवरी को संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। आप साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय

दादी जी थीं। आपके प्रतिदिन 5-7 सामायिक, रात्रिभोजन व जमीकंद त्याग आदि अनेक नियम थे। आपकी इच्छानुसार मरणोपरांत आपके नेत्र दान किए गए। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति पूर्ण श्रद्धावान थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर। सुश्राविका संपत देवी धर्मपत्नी स्व. श्री सज्जन सिंह जी मेहता का 24 फरवरी को देहावसान

हो गया। आप सरल स्वभावी, गुरु गुणगान रसिक महिला थीं। आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान शासनेश आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा व आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

भीनासर। सुश्राविका मूला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री फूसराज जी सेठिया रामपुरहाट प्रवासी का

05 मार्च को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप नित्य 7 सामायिक सहित धर्म-ध्यान, तप-त्याग का लक्ष्य रखती थीं। आपने आजीवन शीलव्रत एवं अठाई आदि तपों से जीवन सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गंगाशहर। सुश्राविका भंवरी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री धूड़मल जी डागा का 92 वर्ष की आयु में 11 मार्च को

सागारी संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। नियमित 5 सामायिक करने, प्रवचन श्रवण, धर्मचर्चा एवं त्याग-प्रत्याख्यान का लक्ष्य रखती थीं। आपने सहजोड़े पखवाड़ा, अनेक अठाइयाँ, एकासन, आयंबिल आदि से जीवन सजाया हुआ था। आचार्य श्री रामेश शासन में समर्पित साध्वी श्री प्रतिज्ञा श्री जी म.सा. आपकी संसारपक्षीय पड़पौत्री हैं। श्रीमती डागा अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

उदयपुर। सुश्रावक लक्ष्मीलाल जी सुपुत्र घीसूलाल जी बोहरा का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने

आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा., आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. सहित तीन आचार्यों की सेवा-भक्ति का लाभ लिया। आप अत्यंत ही सरल स्वभावी व सादगी से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

साधुमार्गी पब्लिकेशन से जुड़ें

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रवचन, चिंतन, कथा, कहानी एवं अन्य विविध विधाओं पर अब तक लगभग 340 से अधिक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस धार्मिक साहित्य के अध्ययन, पठन एवं मनन से अवश्य ही आपका जीवन परिवर्तित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आप इन साहित्यों के लिए दिए गए QR Code, लिंक https://sadhumargi.com/sangh-activities/sahityikpravartiyan/ **पर जाकर एवं मोबाइल नं. 8209090748 पर कॉल करके संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।**

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

जीवन के बजाय जीना बेहतर हो

हे मानव! यदि तू श्रेष्ठ जीवन का कामी है, आकाँक्षी है तो इस वर्तमान जीवन को ही श्रेष्ठ तरीके से क्यों नहीं जी लेता! तू अपनी दृष्टि को बदल, जिसमें सत्ता-संपत्ति को महत्व दिया जा रहा है। तू जीवन के आनंद की पहचान कर। तू इसी जीवन में वह चीज पा सकता है जिससे तू पूर्ण व तृप्त हो सकता है। वह तृप्ति ऐसी होगी जिसके बाद तुम्हें किसी प्रकार की कोई चाह रह ही नहीं जाएगी। जो प्राप्त है, वहीं तुम्हें पर्याप्त दिखेगा। बस तू एकमात्र ईमान को, सच्चाई को महत्त्व दे।

(ब्रह्माक्षर)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

केसरिया कार्यशाला

फरवरी-मार्च माह की केसरिया कार्यशाला आचार्य भगवन् की आठ संपदाओं में से शरीर संपदा पर आधारित थी, जिसमें 640 श्राविकाओं को आचार्य की शारीरिक विशेषताओं पर उदाहरणों सहित विस्तृत जानकारी दी गई। एक पैर पर खड़ा होना, मार्बल स्पून रेस, सिर पर पुस्तक रखकर शरीर का संतुलन बनाना आदि रोचक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ करवाई गईं। सभी आँचलिक व स्थानीय क्षेत्रों की संयोजिकाओं के अथक पुरुषार्थ से इस बार 10 से अधिक नवीन क्षेत्रों में केसरिया कार्यशाला में अति उत्साह के साथ जुड़े।

नोट : अगली कार्यशाला वचन संपदा पर आधारित रहेगी।

आंचलिक प्रवास रिपोर्ट

1. मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का पुणे, पिंपरी-चिंचवड़ और नवी मुंबई में 24-25 फरवरी को दो दिवसीय प्रवास कार्यक्रम हुआ। प्रवास के प्रथम दिवस पिंपरी-चिंचवड़ मंडल का गठन किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्षा जी ने प्रवास स्थलों पर आयोजित सभाओं में अनुरोध किया कि संघ सदस्यों के बच्चे स्टडी, जॉब या बिजनेस आदि कार्यों से जब भी किसी अन्य स्थान पर जाते हैं तब अपना दायित्व समझकर स्थानीय संघ में इसकी सूचना देवें ताकि वे बच्चे संघ के कार्यों और गतिविधियों में वहाँ भी जुड़ सकें। दोनों स्थानों पर राष्ट्रीय महिला समिति की गतिविधियों, विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उनमें सबकी सहभागिता हेतु आह्वान किया गया। प्रवास के द्वितीय दिवस नवी मुंबई में नई सदस्याओं को जोड़ा गया तथा अधिकाधिक बहनों को समिति से जोड़ने का आह्वान किया गया।

2. राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष, मेवाड़ अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, अंचल संघ-संगठन संयोजिका आदि के नेतृत्व में मेवाड़ अंचल के 13 क्षेत्रों का तीन दिवसीय प्रवास

26-28 फरवरी को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। महिला समिति की विभिन्न योजनाओं एवं प्रवृत्तियों की प्रभावना के साथ-साथ शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 2, शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. आदि ठाणा 9 के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रमुख कार्य : ● प्रवास के दौरान 2 नए प्रतिनिधि क्षेत्रों का गठन एवं प्रवृत्ति संयोजिकाओं की नियुक्ति की गई। ● सांगावास और सारोठ लीड क्षेत्रों का गठन। ● राजाजी का करेड़ा, देवगढ़, भीम, सारोठ व भीलवाड़ा आदि स्थानों पर वीर परिवारों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विशेष रूप से युवतियों व महिलाओं को स्वाध्यायी सेवा देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। ● कई क्षेत्रों में नए अध्यक्ष-मंत्री, कोषाध्यक्ष व प्रवृत्ति संयोजिकाओं की नियुक्ति की गई। महिला समिति की आजीवन सदस्यता के 35 फॉर्म भरवाए गए। स्वागत किट द्वारा 6 नई बहुओं का स्वागत किया गया। परिवारांजलि के 67 स्टीकर्स दिए गए तथा ग्रहित अंजलियों में नई अंजलि बढ़ाने के लिए प्रेरणा की गई एवं संकल्प-सूत्र की 30 पुस्तकें वितरीत की गईं। ● सभी संघों में महत्तम महोत्सव के प्रकल्पों व परीक्षाओं की जानकारी दी गई। तप-त्याग विवेक प्रकल्प के अंतर्गत एकासन, आयंबिल, उपवास और तेले के लिए विशेष प्रभावना की गई। महिला समिति की विभिन्न प्रवृत्तियों की विस्तृत जानकारी दी गई। ● श्रमणोपासक में प्रकाशन हेतु महिला समिति के अंतर्गत हो रहे सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों की जानकारी भिजवाने एवं जैन संस्कार पाठयक्रम, श्रुत आरोहक, कर्म सिद्धांत, थोकड़ा कार्निवल इत्यादि परीक्षाओं में भाग लेने हेतु प्रेरणा की गई। सभी क्षेत्रों में मंडल लगाने, गतिविधियों में भाग लेने, प्रतिक्रमण कंठस्थ करने व धोवन पानी के लिए प्रेरणा करने का प्रमुख ध्येय रहा। प्रवास क्षेत्रों में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी व सदस्याओं का परिचय लिया गया। इस प्रकार तीन दिवसीय प्रवास सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

3. छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के नेतृत्व में राष्ट्रीय मंत्री, कार्यकारिणी सदस्याओं, डौंडी से परिवारांजलि संयोजिका एवं केसरिया कार्यशाला की सह-संयोजिका का एक दिवसीय आंचलिक प्रवास 02 मार्च 2024 को संपन्न हुआ। इस दौरान दुर्ग, कवर्धा, मुंगेली, बेमेतरा, बेरला आदि क्षेत्रों में प्रवास किया गया। इस दौरान शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन एवं सेवा का लाभ मिला। सभी स्थानों पर आयोजित सभाओं में महिला समिति की प्रवृत्तियों एवं महत्तम महोत्सव की जानकारी दी गई एवं स्थानीय जनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। प्रतिक्रमण, स्वाध्याय डायरी, परिज्ञा शिविर, अभिमोक्षम् शिविर एवं आई जैन माई जैन में अपनी बालिकाओं को भेजने के लिए भी प्रेरणा की गई। लगभग सभी क्षेत्रों में वीर परिवारों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बहनों ने केसरिया गणवेश में बहुत ही उत्साह से भाग लिया। मुंगेली में श्रावक वर्ग ने बहुत ही उत्साह से महत्तम महोत्सव की जानकारी ली। कुछ नई सदस्य बनीं।

सामाजिक कार्य

क्र.सं.	क्षेत्र	विवरण
	मेवाड़ अंचल :	
1.	भीम	शांतिनाथ सार्वजनिक गौशाला में गायों को 500 किग्रा. चारा व 58 किग्रा. गुड़ दिया गया। आशापुरा मंदिर में 500 किग्रा. दाना कबूतरों को डाला गया।
2.	भीलवाड़ा	लॉयंस आई अस्पताल में नेत्र शिविर का आयोजन किया गया व 22 मोतियाबिंद रोगियों का सफल ऑपरेशन करवाया गया। श्री पशुपतिनाथ महादेव गौशाला में 1 ट्रक चारा भेंट किया।

3.	प्रतापगढ़	श्री कृष्ण गौशाला में गायों को गुड़ ह घास तथा कबूतरों को चुग्गा दिया गया। दीपेश्वर तालाब पर मछलियों, श्वानों व बंदरों को भोज्य पदार्थ खिलाए गए।
4.	उदयपुर	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुल्तान जी का खेरवाड़ा, झाड़ोल फलसिया में स्वेटर तथा शिक्षण सामग्री का वितरित की गई।
5.	कपासन	ब्राह्मी गौशाला एवं नानेश-रामेश गौशाला में चारा डाला गया।
6.	कानोड़	आदिनाथ गौशाला में 2 क्विंटल लापसी गायों को खिलाई गई।
	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल :	
7.	कडूर	भगवान महावीर गौशाला में ज्वार, बिस्किट, केले, गुड़ व रोटी आदि दिए गए।
	तमिलनाडु अंचल :	
8.	चेन्नई	₹ 9,100/- की धनराशि दान स्वरूप भेंट की गई।
9.	मदुरांतकम्	गौ सेवा कार्य हेतु ₹5,000/- भेंट किए गए।
	मुंबई - गुजरात अंचल -	
10.	मुंबई	₹50,000/- का अनाज वितरित किया गया।
11.	वापी	150 खाद्य किट का वितरण किया गया।
	पूर्वोत्तर अंचल -	
12.	सिलचर	कछार कैंसर हॉस्पिटल में फरवरी माह में 5 यूनिट रक्तदान किया गया।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण -

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	आओ चलें महत्तम शिखर की ओर	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा.
2.	महिला दिशाबोध, Life Changing शिविर	निम्बाहेड़ा	उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा.
6.	कर्म तत्त्व	चिखली	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा श्री जी म.सा.
7.	मोक्ष के 4 द्वार, संथारा, संस्कार-कुसंस्कार, आयुष्य बंध, सचित्त-अचित्त का विवेक, आर्य पद का थोकड़ा, कार्यस्थिति (प्रज्ञापना सूत्र 18वाँ पद)	अंबागढ़ चौकी	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.
8.	गमक का थोकड़ा, जम्बूद्वीप का थोकड़ा, कार्निवल के थोकड़े	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.
9.	जीवधड़ा	देवकर	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.

-:: विशेष ::-

प्रतिलेखना : छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल के **गुंडरदेही व बालोद** स्थित समता भवनों में प्रतिलेखन कार्य हुआ, जहाँ पुस्तकों की यतनापूर्वक प्रतिलेखना की गई।

नवीन महिला मंडल गठन : **असम** - तिताबड़, जोराहट, सोनाई, काबुगंज, नूतन बाज़ार, **नागालैंड** - डिमापुर, **अरुणाचल प्रदेश** - डफरोजा आदि स्थानों पर नवीन मंडल गठित हुआ। सभी स्थानों पर प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई।

।।जय गुरु नाना।। ।।जय महावीर।। ।।जय गुरु राम।।

राम चमकते भानु समाना

केसरिया कार्यशाला

आचार्य की 8 संपदाएं

आचार, श्रुत, आगम सम्मत शरीर से युक्त,
संघ सारथी, सभी के हृदयों में प्रयुक्त।
आपके गुणों को जानने की अभिलाषा हो रही पूर्ण,
वचन संपदा को जानने कार्यशाला में आना होकर केसरिया परिपूर्ण।।

अप्रैल माह

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम व्यक्तित्व : • व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर • हमारा व्यक्तित्व कैसा हो • दिखावे का चक्रव्यूह'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

संपूर्ण राष्ट्र में समता शाखा का भव्य आयोजन

18 फरवरी 2024। महापुरुषों की वाणी शक्ति संपन्न होती है और उनके सूत्रों में जीवन परिवर्तन के गहरे संकेत छिपे होते हैं। लगभग 14 वर्ष पूर्व होली चातुर्मास के पावन अवसर पर विशाखापट्टनम् की पावन धरा से परम पूज्य आचार्य भगवन् ने रविवारीय समता शाखा का उद्घोष प्रदान किया था। तब से अब तक समता युवा संघ इस आयाम को विस्तार प्रदान कर रहा है। इसकी भव्य प्रभावना हेतु समता युवा संघ का प्रत्येक साथी पूर्ण संकल्पित है। 18 फरवरी 2024 (माघ सुदी 9) को आचार्य भगवन् के 50वें सुवर्ण दीक्षा वर्ष शुभारंभ से पूर्व सभी श्रावक-श्राविकाओं व संघ परिवारों ने गुरु भक्ति, श्रद्धा एवं समर्पणा का अद्भुत परिचय देते हुए महत्तम शिखर वर्ष में 601 क्षेत्रों में 19352 सामूहिक समता शाखा की ऐतिहासिक उपस्थिति दर्ज करवाई।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश अंचल में सीतामऊ, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश अंचल में गुरुग्राम, पूर्वोत्तर अंचल में मेहंदीपथार, नगाँव, लामडिंग, मोरीगाँव, काबूगंज, बिजनी और ग्वालपारा, महाराष्ट्र-खानदेश-विदर्भ अंचल में मोलगी, जामनेर, बोरखेड़ा, नगाड, अदावद में समता शाखा प्रारंभ हुई एवं बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान अंचल के बहरामपुर में समता शाखा पुन: प्रारंभ हुई। इन सब को मिलाकर कुल 14 नवीन क्षेत्रों/गाँवों में समता शाखा प्रारंभ हुई एवं 1 क्षेत्र/गाँव में समता शाखा पुन: प्रारंभ हुई। हमारा लक्ष्य और पुरुषार्थ होना चाहिए कि समता शाखा उच्च से उच्चतर की ओर आरोहण करे।

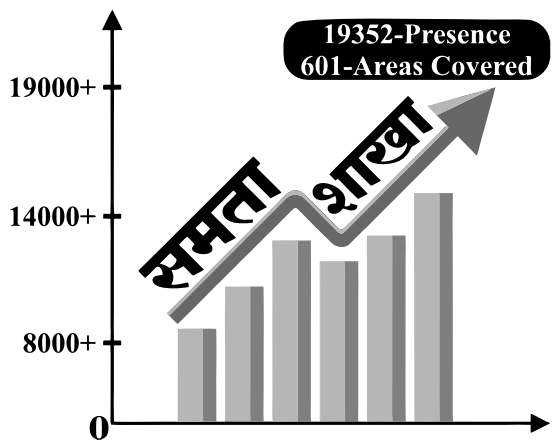

क्र.	अंचल	क्षेत्र उपस्थिति	समता शाखा संघ	क्र.	अंचल	क्षेत्र उपस्थिति	समता शाखा संघ
1.	मेवाड़	3597	94	8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई	2065	33
2.	बीकानेर-मारवाड़	2571	42	9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	1305	59
3.	जयपुर-ब्यावर	1221	24	10.	बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान	767	34
4.	मध्य प्रदेश	2337	78	11.	पूर्वोत्तर	792	34
5.	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	3315	145	12.	दिल्ली, पंजाब, हरियाणा	355	9
6.	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	633	30	13.	अंतरराष्ट्रीय	41	5
7.	तमिलनाडु	353	14		**कुल**	**19352**	**601**

छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल प्रवास

29 फरवरी-03 मार्च 2024। श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने 29 फरवरी को रायपुर से प्रवास का शुभारंभ करते हुए अहिवारा, बेरला, साजा, देवकर, धमधा, दुर्ग, गुंडरदेही, अर्जुंदा, अछोली, संबलपुर, डौंडीलोहारा, दल्लीराजहरा, चिखलाकसा, कुसुमकसा, बालोद, धमतरी, भखारा, गातापार व राजिम में प्रवास किया।

सभी प्रवास स्थलों पर सभा की शुभारंभ नवकार महामंत्र के सामूहिक जाप व युवा साथियों के परस्पर परिचय से हुआ। प्रवासी दल ने संगठन की प्रभावना करते हुए अहिवारा में समता युवा संघ तथा बेरला व चिखलाकसा में समता युवा शाखा का नवगठन किया। धमधा, गुंडरदेही, अर्जुंदा, राजिम और भखारा में सर्वसम्मति से नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन हुआ।

दुर्ग के तीन मुमुक्षुओं का उनके निवास स्थलों पर अभिनंदन किया गया। प्रवासी दल ने सभी संघों में समता शाखा, उत्क्रान्ति, महत्तम महोत्सव, तरुण-शक्ति, धार्मिक प्रतियोगिताओं, सामाजिक कार्यक्रम, व्यसनमुक्ति, संगठन, विहार सेवा, अन्नदान, श्रुत भक्ति दिवस व ग्लोबल कार्ड सहित अनेक प्रवृत्तियों के साथ महत्तम महोत्सव के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ में होने वाले '**अभिमोक्षम्**' शिविर की भी प्रभावना की गई।

प्रवासी दल ने ज्ञानार्जन में 'ALL IS WELL' के अंतर्गत युवाओं को प्रतिक्रमण कंठस्थ करने की विशेष प्रेरणा दी। महत्तम महोत्सव के प्रकल्प प्रतिक्रमण याद करने हेतु अनेक फॉर्म भरे गए। सभी संघों में प्रवासी दल का आत्मीय स्वागत किया गया। युवा साथियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई तथा संघ-विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया।

इस दौरान प्रवास नियमावली का पूर्ण रूप से पालन किया गया। आतिथ्य सत्कार और सुंदर व्यवस्था के लिए सभी संघों का आभार प्रकट किया गया।

प्रवास के दौरान शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपिका श्री रजत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-11 के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

-राष्ट्रीय मंत्री, छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल

उत्क्रान्ति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रान्ति की आभा सर्वत्र फैल रही है। अनेक परिवार, संघ और ग्राम आचार्य भगवन् के इंगित इशारों को शिरोधार्य करते हुए उत्क्रान्ति नियमों से अपने जीवन को सजा रहे हैं। समाजजन न केवल उत्क्रान्ति के नियमों को ग्रहण कर रहे हैं अपितु पूरे मनोयोग से पालना भी कर रहे हैं। ऐसे अनेक परिवार हैं, जिन्होंने अपने यहाँ हो रहे मांगलिक कार्यक्रम उत्क्रान्ति नियमों से सुसंपन्न कर स्वयं व संघ का गौरव बढ़ाया है। आप सभी निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं। पूरे भारतवर्ष में उत्क्रान्ति कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त हो रही है, जो इस प्रकार है -

1. रासीसर निवासी भीलवाड़ा प्रवासी अभिषेक जी-निकिता जी लालानी की सुपुत्री का नामकरण कार्यक्रम 09 जनवरी को संपन्न हुआ।
2. छोटीसादड़ी निवासी अशोक कुमार जी अमित जी लोकेश जी डूंगरवाल परिवार का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 22 जनवरी को संपन्न हुआ।
3. चित्तौड़गढ़ निवासी मधु जी-राजेंद्र कुमार जी सेठिया की सुपुत्री मेघा एवं बड़ीसादड़ी निवासी इंदु

जी-अनिल कुमार जी डांगी के सुपुत्र भाविक का विवाहोत्सव 22 जनवरी को संपन्न हुआ।

4. उदयपुर निवासी मुंबई प्रवासी संतोष कुमार जी सहलोत के सुपुत्र निखिल का सगाई समारोह डूंगला निवासी विनोद जी दाणी के सुपुत्री खुशबु के साथ 25 जनवरी को संपन्न हुआ।
5. नोखा निवासी नारायण जी नाहटा के सुपुत्र नितेश का शुभविवाह सिलचर निवासी संजय जी की सुपुत्री वैशाली के साथ 28 जनवरी को संपन्न हुआ।
6. उदयपुर निवासी महावीर जी भाणावत के सुपुत्र मनीष का शुभविवाह उदयपुर निवासी रमेश जी चौधरी की सुपुत्री नेहा के साथ 30 जनवरी को संपन्न हुआ।
7. नोखा निवासी रतनलाल जी मरोठी की सुपुत्री एकता का शुभविवाह नोखागाँव निवासी जेठमल जी श्यामसुखा के सुपुत्र अनिल के साथ 30 जनवरी को संपन्न हुआ।
8. नोखा निवासी हनुमानमल जी पारख की सुपुत्री दिव्या का शुभविवाह झझू निवासी गुवाहाटी प्रवासी राजकुमार जी सेठिया के सुपुत्र अभित के साथ 31 जनवरी को संपन्न हुआ।
9. बड़ीसादड़ी निवासी मनोज जी-संगीता जी मेहता की 25वीं वैवाहिक वर्षगाँठ पर कार्यक्रम 04 फरवरी को संपन्न हुआ।
10. नोखा निवासी वीर भ्राता मोहनलाल जी गोलछा के सुपौत्र मुदित का सगाई समारोह गंगाशहर निवासी जिनेंद्र जी बोथरा की सुपुत्री सिमरन के साथ 05 फरवरी को संपन्न हुआ।
11. नोखा निवासी सुनील जी आँचलिया की सुपुत्री शालू का शुभविवाह जोरावरपुरा निवासी मगनमल जी लुणावत के सुपुत्र युगप्रधान के साथ 06 फरवरी को संपन्न हुआ।
12. छोटीसादड़ी निवासी अभय कुमार जी डूंगरवाल का नूतन गृह प्रवेश 11 फरवरी को संपन्न हुआ।
13. रायपुर निवासी शांतिलाल जी-सरिता जी आछा के सुपुत्र शुभम का शुभविवाह महासमुंद निवासी भागचंद जी बुरड़ की सुपुत्री अंजलि के साथ 14 फरवरी को संपन्न हुआ।
14. नोखा निवासी वीर भ्राता धर्मचंद जी बाफना का नूतन गृह-प्रवेश 14 फरवरी को संपन्न हुआ।
15. नोखा निवासी विमल जी आँचलिया के पुत्र अंकित का शुभविवाह नागौर निवासी मद्रास प्रवासी दुलीचंद जी बेताला की सुपुत्री सपना के साथ 14 फरवरी को संपन्न हुआ।
16. बड़ीसादड़ी निवासी रमेश जी-चंदनबाला जी नागौरी के सुपुत्र अभिषेक का शुभविवाह बड़ीसादड़ी निवासी दिनेश जी-सुनीता देवी गादिया की सुपुत्री फाल्गुनी के साथ 17 फरवरी को संपन्न हुआ।
17. देशनोक निवासी जोरवरपुरा प्रवासी वीर पिता मुन्नीलाल जी मेघराज जी साँड की सुपुत्री ज्योति एवं राजेंद्र जी आंचलिया के सुपुत्र सौरभ का शुभविवाह 18 फरवरी को संपन्न हुआ।
18. नोखा निवासी राजेश कुमार जी पारख की सुपुत्री मोहिनी का शुभविवाह नोखा निवासी सुभाष जी भूरा के सुपुत्र अमन के साथ 18 फरवरी को संपन्न हुआ।
19. नोखा निवासी सुभाष जी काँकरिया के पुत्र राहुल का शुभविवाह रावतसर निवासी विमलचंद जी बरड़िया की सुपुत्री नम्रता के साथ 18 फरवरी को संपन्न हुआ।
20. बड़ीसादड़ी निवासी (नवी मुंबई) प्रवासी प्रवीण कुमार जी मनीष कुमार जी का नूतन गृह-प्रवेश 19 फरवरी को संपन्न हुआ।
21. नोखा निवासी वीर भ्राता धनराज जी गोलछा का नूतन गृह-प्रवेश 22 फरवरी को संपन्न हुआ।

आपके क्षेत्र में कहीं पर भी कोई आयोजन उत्क्रांति के अनुसार होता है तो उसकी जानकारी हमारे तक अवश्य भेजें। दी गई जानकारी संघ की पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। उत्क्रांति से संबंधित किसी भी प्रकार की शंका यदि आपके मन में हो तो नि:संकोच आप अपने सवाल हमें भेज सकते हैं। हम आपके सवालों का जल्द ही समाधान करने का प्रयास करेंगे।

-उत्क्रांति राष्ट्रीय संयोजक मो.: 9425939631

मानव सेवा

10-11 फरवरी 2024 को परम पूज्य आचार्य भगवन् के दीक्षा दिवस व महत्तम शिखर वर्ष के शुभारंभ पर समता युवा संघ, कोलकाता द्वारा श्री जैन हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, हावड़ा में स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें नेत्र परीक्षण, चश्मा वितरण, नेत्र ऑपरेशन, ईसीजी, दंत चिकित्सा, बी.पी. एवं शुगर जाँच आदि किए गए। प्रथम दिवस श्री जैन हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में 246 लोगों की जाँच की गई तथा द्वितीय दिवस वॉयस ऑफ बंगाल, हावड़ा में 225 लोगों की जाँच की गई। दोनों दिन 410 चश्मे वितरित किए गए। दंत चिकित्सा में 34 लोगों की जाँच की गई। रक्तचाप और रक्तशर्करा परीक्षण में 375 लोगों की जाँच की गई।

इसी क्रम में 21 फरवरी को झांटी बांध जिला झाड़ग्राम में संचालित इंद्रबनी ग्रामीण नारी शिशु विकास केंद्र (जहाँ 6 से 16 वर्ष के लगभग 50 बच्चे रहते हैं) में अन्नदान कार्यक्रम के अंतर्गत एक माह का राशन दिया गया। सौभाग्य से टाटानगर की दिशा में विहार करते समय शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा. आदि ठाणा का यहाँ पधारना हुआ। आपश्री से प्रेरित हो शिशु विकास केंद्र के बच्चों ने आजीवन माँसाहार त्याग का संकल्प लिया। कार्यक्रम में साधुमार्गी जैन संघ एवं महिला समिति, कोलकाता का पूरा सहयोग मिला। रात्रि संवर में लगभग 21 संवर युवा एवं श्रावकों द्वारा तथा 17 संवर महिलाओं द्वारा किए गए। **-ऋषि बुच्चा**

श्री अ.भा.सा. जैन संघ के अंतर्गत चल रही मुहीम **'घर-घर लगे दानपेटी'** में समता युवा संघ खेतिया द्वारा दानपेटी का घर-घर जा वितरण कर **'होम टू होम और हार्ट टू हार्ट'** का उद्देश्य पूर्ण किया गया। **-मुकेश चोरड़िया**

ଓଓଓ

"कड़ी दो चीजों को जोड़ती है, इसी तरह प्रार्थना भी सच्चे अर्थों में दो तत्त्वों को जोड़ने वाली कड़ी होती है। ये दो तत्त्व हैं- आत्म-तत्त्व और परमात्म-तत्त्व। असल में इन दोनों में तत्त्व-भेद नहीं है, उसे केवल पर्याय भेद ही कह सकते हैं। दोनों तत्त्व मूल रूप में एक ही हैं। आत्मा ही जब अपने समस्त कर्ममैल को धो डालती है, तब वही परमात्मा बन जाती है। एक तत्त्व मैला है तो दूसरा तत्त्व स्वच्छ है। एक दर्पण होता है, धीरे-धीरे उस पर मैल जमता जाता है और इतना मैल जम जाता है कि आकृति दिखाई तो देती है, किंतु कुछ धुँधली दिखाई देती है। कभी इतना भी मैल जम सकता है कि उसके सामने खड़े होने पर उसमें तनिक भी प्रतिछाया दिखाई नहीं दे। जब वह पूर्णत: स्वच्छ होता है तो संभव है कि स्वयं की आति से भी अधिक स्वच्छ प्रतिछाया उसमें दिखाई दे। यही रूपक आत्मा के साथ घटित किया जा सकता है। कर्ममैल के अंतर से आत्मा के मैले और स्वच्छ स्वरूप में अंतर होता है और जब वह पूर्णत: स्वच्छ हो जाता है तो वह स्वरूप परमात्म-स्वरूप में ढल जाता है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के नेश्रायरत सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची

दिनांक : 15-03-2024

1. मेवाड़ अंचल

क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर
1.	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.**	13	समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	दलपत सिंह जी ओस्तवाल 9828967002 भगवतीलाल जी डांगी 9929518772 महेश जी नाहटा 9406201351 7977370892	2.	शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.	3	विवेक सांड समता भवन, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलाल जी पोरवाल 9461273789 सुशील जी नागौरी 9799999595
3.	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा.	2	मुकेश जी वैष्णव का निवास, दौलतपुर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676	4.	शासन दीपक श्री हिमांशु मुनि जी म.सा.	6	समता भवन, शास्त्री नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990
5.	श्री लाघव मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, शास्त्री नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990	6.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले)	5	अरिहंत कंस्ट्रक्शन (संजय जी डूंगरवाल), 395, आई–1 रोड़, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)	मुकेश जी पगारिया 9413286163 प्रकाश जी सुराणा 9414166014
7.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	4	महावीर भवन, मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मनीष जी पोखरना 9929805901 8947006584	8.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले)	6	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेश जी कुदाल 9414683309 तखतमल जी लसोड़ 9166663441
9.	शासन दीपिका साध्वी श्री पुष्पलता श्री जी म.सा.	5	उदय सिंह जी वाघेला का निवास, कापड़ियों का खेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	उदय सिंह जी वाघेला 9928844108	10.	शासन दीपिका साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा.	7	रणजीत जी मोदी का निवास, गीतांजलि कॉलोनी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलाल जी पोरवाल 9461273789 सुशील जी नागौरी 9799999595
11.	शासन दीपिका श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा.	5	समता भवन, भिंडर, उदयपुर (राज.)	रोशनलाल जी वया 9460726958	12.	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले)	3	जैन स्थानक भवन, सुभाष नगर, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत सिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676
13.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा.	4	ऋषभ भवन, वल्लभ नगर, उदयपुर (राज.)	सुरेश जी सुराणा 9460260341	14.	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्श प्रभा श्री जी म.सा.	3	जीवराज जी जाट का निवास, देवरिया, चित्तौड़गढ़ (राज.)	जीवराज जी जाट 9352236897
15.	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा.	16	महावीर भवन मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मनीष जी पोखरना 9929805901 8947006584	16.	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा.	6	कोठारियों की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495

17.	शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, सांवलिया जी मंडफिया, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सूरजमल जी कोठारी 9784151599	18.	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा.	4	पौषधशाला भवन मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मनीष जी पोखरना 9929805901 8947006584
19	शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा.	4	नानालाल जी भूतेड़ा का निवास, शांति नगर, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलाल जी पोरवाल 9461273789 सुशील जी नागौरी 9799999595	20.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा.	8	समता भवन, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	अभय जी मोदी 9057533100 कोमल जी रूंगलेचा 9414777428
21.	शासन दीपिका साध्वी श्री करुणा श्री जी म.सा.	4	समता ट्रेडर्स, देबारी, उदयपुर (राज.)	कांतिलाल जी जैन 7014070510	22.	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा श्री जी म.सा.	4	समता साधना भवन, चिकारड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	पारसमल जी कोठारी 9982520847 सुंदरलाल जी लोढ़ा 9772050840
23.	शासन दीपिका साध्वी श्री विकास श्री जी म.सा.	5	अंबेश भवन, खेमली, उदयपुर (राज.)	राजेंद्र जी जैन, खेमली 9602494679	24.	शासन दीपिका साध्वी श्री पावन श्री जी म.सा.	3	भंवरलाल जी देरासरिया का निवास, देवगढ़, राजसमंद (राज.)	राजेंद्र जी पोखरना 9414786625 9588891558
25.	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, चंगेड़ी, उदयपुर (राज.)	पारस जी कोठारी 9799299101	26.	शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञा श्री जी म.सा.	3	बी–343, मदनलाल जी नागौरी का निवास, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत सिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676
27.	शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणा श्री जी म.सा.	3	जैन उपाश्रय भवन, बड़ी साखथली, प्रतापगढ़ (राज.)	मयूर जी ओस्तवाल 6376427070	28.	साध्वी श्री ऋतु श्री जी म.सा.	3	लहर रिसोर्ट, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सुरेश जी दुग्गड़ 9413045379 मदन जी चंडालिया 9929262606
29.	साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा.	3	फतेह सिंह जी झाला का निवास, हड़मतिया जागीर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	फतेह सिंह जी झाला 8239027815	30.	साध्वी श्री संभाव्य श्री जी म.सा.	3	महावीर भवन मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मनीष जी पोखरना 9929805901 8947006584
31.	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.	4	अशोक जी कोठारी का निवास, डबोक चौराहा, उदयपुर (राज.)	दीपक जी मोगरा 9460507711 अशोक जी कोठारी 9829153573	32.	शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा.	15	भोपाल सिंह जी बाबेल का निवास, शास्त्री नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	भोपाल सिंह जी बाबेल 9829833198
2. बीकानेर-मारवाड़ अंचल									
1.	शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा.	4	जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	2.	शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा.	8	सेठिया कोटड़ी, मरोठी सेठिया मोहल्ला, ठंठेरा बाजार, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178
3.	शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, उदयरामसर, बीकानेर (राज.)	नवरतन जी सिपानी 9351208767	4.	पर्यायज्येष्ठ श्री हेमगिरी जी म.सा.	2	जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	मदनलाल जी लूणिया 9413968297 बाबूलाल जी कांकरिया 9460452789

5.	शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा.	3	जेठाराम जी कूकणा का निवास, कूकणों की ढाणी, जैसलसर, बीकानेर (राज.)	जेठाराम जी कूकणा 9982043871 लिच्छुराम जी कूकणा 8769538487	6.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा श्री जी म.सा.	12	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगड़ी चौक, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178
7.	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा.	4	रूपा जैन भवन, रानी बाजार, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178	8.	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्री जी म.सा.	5	ओसवाल भवन, दुर्गावता बालेसर, जोधपुर (राज.)	प्रकाश जी राय 9784986333
9.	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.	3	ललित जी कूकड़ा का निवास, श्रेयांश नगर, पाली (राज.)	अशोक जी श्रीश्रीमाल 9414120829 ललित जी कूकड़ा 6375127390 9414610121	10.	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा.	4	संपत जी गुलगुलिया का निवास, रामदेव नगर, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
11.	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा श्री जी म.सा.	3	नथमल जी सकलेचा का निवास, गाँधी चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	सुनील जी सकलेचा 9214681297	12.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा.	7	महिला भवन, मरोठी सेठिया मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178
13.	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा.	5	सामायिक स्वाध्याय भवन, सेक्टर–16, जोधपुर (राज.)	भोजराज जी चौपड़ा 8209937380 सुमेर जी छाजेड़ 9636472750	14.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा.	4	निर्मल जी दुग्गड फार्म हाऊस, हरियासर से 6 किमी. आगे, बीकानेर (राज.)	पूनमचंद जी सुराणा 9351092281 आसकरण जी बरड़िया 9461942460
15.	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चिता श्री जी म.सा.	4	नरपत सिंह जी राजपुरोहित का निवास, घेवड़ा, जोधपुर (राज.)	नरपत सिंह जी राजपुरोहित 9602362651	16.	साध्वी श्री मैनासुंदरी श्री जी म.सा.	4	समता भवन, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चौपड़ा 9828426000
17.	शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा.	3	बोथरा निवास, सुराणा मोहल्ला, नई लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	18.	साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा.	3	दलपत सिंह जी राजपुरोहित का निवास, पांचडोलिया, नागौर (राज.)	दलपत सिंह जी राजपुरोहित 7425826551
3. जयपुर-ब्यावर अंचल									
1.	श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा.	5	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477	2.	शासन दीपक श्री चिन्मय मुनि जी म.सा.	3	प्राज्ञ भवन, सरवाड़, केकड़ी (राज.)	विजय जी पोखरना 9414554651
3.	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा.	3	बी–09, इंदरचंद जी लुणावत का निवास, मधुवन कॉलोनी, जैन मंदिर के पास, बरकत नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	4.	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा.	8	कांकरिया डेलान, नयाबास, ब्यावर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477

5.	शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा.	6	वर्धमान भवन, लाल कोठी, कृष्णा नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	6.	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.	4	अनिल जी सोनी का निवास, खवास, केकड़ी (राज.)	अनिल जी सोनी 9929192205
7.	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले)	3	श्रीलाल समता भवन, टोंक (राज.)	सुनील जी बम्ब 9414227645	8.	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा.	4	वर्धमान जैन स्थानक भवन, केकडी (राज.)	रिखब जी सोनी 9928175707
4. मध्य प्रदेश अंचल									
1.	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, कंजार्ड़ा, नीमच (म.प्र.)	दिलीप जी भंडारी 9424079591	2.	शासन दीपक श्री सुमित मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, नौलाईपुरा, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
3.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूर कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. (पिपलिया मंडी)	8	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली न.–2, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547	4.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	3	अमृतलाल जी नलवाया का निवास, नाकोड़ा इंटीरियो के पास, टीचर्स कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
5.	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा.	5	सागर नमकीन वालों का निवास, वेद व्यास कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717	6.	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा.	22	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमार जी तातेड़ 9826033624 ललित जी दुग्गड़ 9827013200
7.	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, मोरवन बाँध, नीमच (म.प्र.)	विमल जी पितलिया 9131942529	8.	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले)	4	अभिषेक जी कांठेड़ का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
9.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा श्री जी म.सा.	4	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717	10.	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा.	4	समता भवन, काटजू नगर, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
11.	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (छत्तीसगढ़ वाले)	3	जैन स्थानक भवन, बाईग्राम, इंदौर (म.प्र.)	मनीष जी शर्मा, बाईग्राम 9479744622	12.	शासन दीपिका साध्वी श्री साधना श्री जी म.सा.	6	समता भवन, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
13.	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला श्री जी म.सा.	5	समता भवन, गाँधी कॉलोनी, जावरा चौपाटी, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी छजलाणी 9424591173 मनीष जी पोखरना 9893482863	14.	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा.	3	प्रदीप जी बोड़ावत का निवास, गाँधी कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345

15.	साध्वी श्री चारित्रप्रभा श्री जी म.सा.	3	साधुमार्गी जैन स्थानक भवन, मनासा रोड़, पिपलिया मंडी, मंदसौर (म.प्र.)	मनोहरलाल जी जैन 9425105061 सुधीर जी चौहान 9406601330	16.	शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, सेंधवा, बड़वानी (म.प्र.)	मितेश जी बोकड़िया 9406834875 राजेंद्र जी जैन 9425089347
17.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, बोतलगंज, मंदसौर (म.प्र.)	नरेंद्र जी मेहता 8435012485	18.	साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा.	3	शिवशंकर जी पाल का निवास, डाक बंगाले के सामने, चंबल (गौतमपुरा रोड़) इंदौर (म.प्र.)	विकास जी मेहता 9993617506 पंकज जी मेहता 9907720321 शिवशंकर जी पाल 8889580297
19.	साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा.	3	राजमल जी पंवार का निवास, कानवन चौपाटी, धार (म.प्र.)	राजमल जी पंवार 9981623599	20.	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा.	4	जैन उपाश्रय भवन, हसनपालिया, रतलाम (म.प्र.)	बंकट जी बाफना 8989897716 मनीष जी पोखरना 9893482863
5. छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल									
1.	शासन दीपक श्री अक्षयमुनि जी म.सा.	2	अशोक जी सुराणा का निवास, श्रीनगर, रायपुर (छ.ग.)	अशोक जी सुराणा 9039090001	2.	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, भानुप्रतापपुर, कांकेर (छ.ग.)	गौतम जी कोटड़िया 8269959791 केवलचंद जी संचेती 7089093677
3.	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.	11	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	राजेंद्र जी श्रीश्रीमाल 9300330075 प्रदीप जी बोथरा 9424119340	4.	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.	4	जैन भवन, साजा, बेमेतरा (छ.ग.)	जितेंद्र जी कोठारी 9406009710
5.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीला श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञा श्री जी म.सा.	7	किशोर जी बैद का निवास, वर्धमान नगर, राजनांदगाँव (छ.ग.)	मदनजी पारख 9425240291 9770352550					
6. कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल									
1.	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.	2	मातोश्री सरोज बेन एवं रमणीकलाल जी संघवी सुधर्मालय, हिमायत नगर, हैदराबाद (तेलंगाना)	विजय जी संघवी 9391012052	2.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा श्री जी म.सा.	4	वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हुबली (कर्ना.)	संजय जी कटारिया 9880538484 प्रकाश जी कटारिया 9448061288
3.	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, मारथहल्ली, बेंगलुरु (कर्ना.)	सुरेश जी बागरेचा मूथा 9341309953					
7. तमिलनाडु अंचल									
1.	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.	3	प्रमोद कुमार जी गोठी का निवास, विल्लीवक्कम, चेन्नई (तमि.)	प्रमोद कुमार जी गोठी 9444060307					

8. मुंबई-गुजरात अंचल									
1.	शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, जैन कंपाउंड, चिंचपोकली, मुंबई (महा.)	गौरव जी जैन 7014404962	2.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	5	जैन उपाश्रय भवन, प्रेम सोसायटी, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुज.)	मोहन जी बोथरा 9825581229 मुकेश जी पिपाड़ा 7984371447
3.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमन प्रभा श्री जी म.सा.	4	रामलाल जी जैन का निवास, रानकुआ, नवसारी (गुज.)	रामलाल जी जैन 7984249316	4.	शासन दीपिका साध्वी श्री पूनिता श्री जी म.सा.	3	प्लेटिनम हाइट्स, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुज.)	मोहन जी बोथरा 9825581229 गणपत जी चोरड़िया 9375826162
9. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल									
1.	शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा.	2	जिला परिषद स्कूल, तावखेड़ा, नंदुरबार (महा.)	कमलेश जी चौपड़ा 9981181008 मयूर जी ओस्तवाल 9422749966	2.	शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा.	2	मंगल भवन, तलोदा, नंदुरबार (महा.)	धनेश जी बोहरा 9423944093
3.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभा श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, शिंदखेड़ा, धुलिया (महा.)	कमलेश जी चौपड़ा 9981181008 मयूर जी ओस्तवाल 9422749966	4.	साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा.	4	ललित जी जैन की पेपर मील, करवंद, धुलिया (महा.)	कोमल सिंह जी राजपूत 8329506790 ललित जी जैन 855099890
5.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.	5	जिग्नेश जी जैन का निवास, मौदा, नागपुर (महा.)	जिग्नेश जी जैन 9890772284 राजेंद्र जी बैद 9960695111	6.	शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा.	3	ललित जी शर्मा का निवास, कोटेचा नगर, बोधवड़, जलगाँव (महा.)	पंकज जी रुणवाल 9422779689
7.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमेरु श्री जी म.सा.	3	दिलीप जी बदरिया का निवास, सालोड़, वर्धा (महा.)	दिलीप जी बदरिया 9359969268	8.	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा.	3	संजू जी पाटिल का निवास, साई समर्थ मेडिकल के पीछे, होल, धुलिया (महा.)	कमलेश जी चौपड़ा 9981181008 मयूर जी ओस्तवाल 9422749966
9.	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.	4	पारख एग्रो परिसर, भांडगाँव, पुणे (महा.)	योगेश जी भटेवरा 8087800035 संजय जी मेहर 9011201488 मनोज जी गांधी 9881734432					
10. बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक उड़ीसा अंचल									
1.	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.	4	सुनील जी जैन का निवास, घाटसीला, सिंहभूम (झार.)	रमेश जी ललवानी 9431340922	2.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.	4	जुट मिल्स, दस दरगाह, जलपाईगुड़ी (प.बं.)	प्रकाश जी गोलछा 9434716068
12. दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल									
1.	शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा.	2	एस.एस. जैन सभा भवन, फरीदकोट, बठिंडा (पंजाब)	पूनमचंद जी सुराणा 9351092281 अवंता कुमार जी जैन 8146546314	2.	शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, कांधला, शामली (उ.प्र.)	वरुण जी जैन 9212942777

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

साहित्य शृंखला उपलब्ध

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के समृद्ध साहित्य विभाग में विभिन्न विधाओं से संबंधित हजारों प्रकाशन उपलब्ध हैं। संघ के साधुमार्गी पब्लिकेशन के अंतर्गत आचार्य श्री रामेश के प्रवचनों पर आधारित शृंखला एवं तत्त्व व थोकड़ों पर आधारित साहित्यों का प्रकाशन भी अनवरत जारी है। इन विशिष्ट साहित्यों के साथ-साथ विदुषी तत्त्वज्ञाता कंचन देवी कांकरिया द्वारा जिज्ञासु पाठकों के ज्ञानार्जन हेतु श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला भाग 1, 2, 3 व एवं श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला केंद्रीय कार्यालय में उपलब्ध हैं। पाठक अपनी रुचि एवं धर्मपिपासा हेतु **मो.नं. 8209090748** पर संपर्क कर मंगवा सकते हैं।

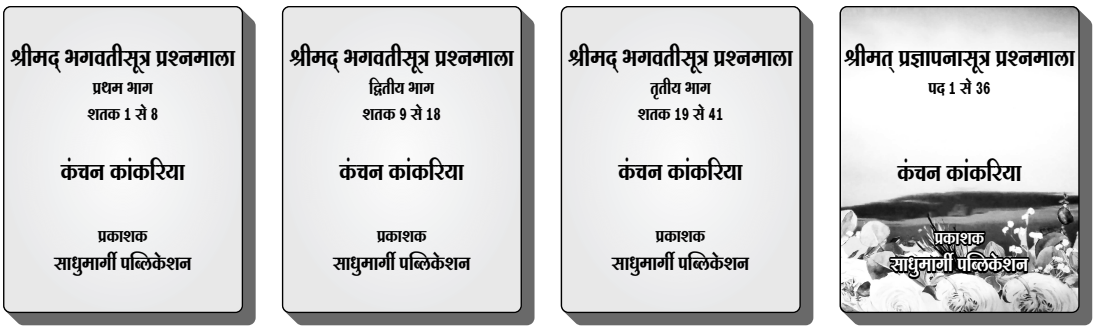

श्रमणोपासक का विवरण

फॉर्म नं. 4 (नियम संख्या 8)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम नागरिकता एवं पता	:	जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए मनोज खंडेलवाल, भारतीय, साक्षी प्रिंटर्स, डी-24, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर-302006 (राज.)
4.	प्रधान संपादक का नाम नागरिकता एवं पता	:	नरेंद्र गाँधी, भारतीय, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)
5.	प्रकाशक का नाम नागरिकता एवं पता	:	नरेंद्र गाँधी, भारतीय, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.) समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, पो. गंगाशहर, जिला बीकानेर (राज.)

मैं **नरेंद्र गाँधी** एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

दिनांक 29 मार्च, 2024 (हस्ता.) नरेंद्र गाँधी

स्मृतिशेष सुश्राविका सूरज बाई देवड़ा

औरंगाबाद (महा.)। सुश्राविका **सूरज बाई उत्तमचंद जी देवड़ा** का 98 वर्ष की आयु में 05 फरवरी 2024 को निधन हो गया। आपने संपूर्ण परिवार को संस्कारों की धरोहर से परिपूर्ण किया। स्वास्थ्य की अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, लेकिन आपने कभी भी अपने व्रत-नियमों को भंग नहीं होने दिया। जीवन के अंतिम पड़ाव में भी आप प्रतिदिन देवसिय-रायसिय प्रतिक्रमण, 4-5 सामायिक, दोपहर में जाप का लक्ष्य रखतीं। आपके आजीवन रात्रिभोजन एवं जमीकंद तथा लगभग 70 वर्षों से कच्चे पानी का त्याग था। अंतिम समय में अस्पताल ले जाने से पूर्व आपने सभी परिजनों को मांगलिक प्रदान की। आपके सरल, सहज स्वभाव एवं उच्च धर्म भावना से संपूर्ण परिवार एक सूत्र में बँधा हुआ है। औरंगाबाद में आप काकीजी के नाम से विख्यात थी। संघ एवं चारित्रात्माओं की सेवा में आपकी सदैव ही उपस्थिति रहती थी। आपने अनेक संस्थाओं से जुड़कर सेवा कार्यों को सर्वोपरि रखा। आप श्री साधुमार्गी जैन महिला मंडल की सदस्य थी।

आप बगड़ी निवासी स्व. श्री अगरचंद जी सुराणा, रायपुर (छ.ग.) की पुत्री एवं स्व. चंपालाल जी, स्व. सोहनलाल जी सुराणा, मनीया बाई तालेड़ा एवं सुंदर बाई वैद्य की बहिन थीं। आचार्य श्री रामेश शासन में समर्पित साध्वी श्री सुविजेता श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय ननद थीं।

आपकी परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. व वर्तमान शासनेश आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा व समर्पणा थी। वर्ष 2016 में आचार्य श्री रामेश का होली चातुर्मास औरंगाबाद संघ को प्राप्त हुआ, जिसका आपने पूर्ण लाभ लिया। आपकी इच्छा थी कि आचार्यदेव का चातुर्मास औरंगाबादवासियों को मिले।

आपकी आत्मा शीघ्र ही अपने चरम लक्ष्य का वरण कर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बने, यही प्रार्थना है। आप अपने पीछे तीन पुत्र, चार पुत्रवधू, दो बेटियों, पौत्र, पौत्रियों, दोहित्रियों से भरा-पूरा शासन एवं गुरु समर्पित संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

श्रद्धावनत

ललित कुमार, चेनराज, डॉ. सुभाऊ, योगेश एवं देवड़ा परिवार

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव 2024 चित्तौड़गढ़ में

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की असीम अनुकंपा से **10 मई 2024** को अक्षय तृतीया पारणा का प्रसंग **चित्तौड़गढ़ संघ** को प्राप्त हुआ है।

सभी स्थानीय संघों एवं वर्षीतप आराधक श्रावक-श्राविकाओं से करबद्ध निवेदन है कि इस पावन अवसर पर पधारकर वर्षीतप पारणा का लाभ लेवें। इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त होना संभावित है। आपके आगमन एवं प्रस्थान की पूर्व सूचना नीचे दिए गए संपर्क सूत्र पर प्रदान कर व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

:: संपर्क सूत्र ::
9414109331
9414110955
9413046409
9829244305

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ संघ
श्री साधुमार्गी जैन समता महिला मंडल
श्री साधुमार्गी जैन समता बहू मंडल
चित्तौड़गढ़ (राज.)

कर्म प्रज्ञप्ति कोर्स

भव्य शुभारंभ

07 अप्रैल 2024

संपत पैलेस, गंगाशहर (बीकानेर)

Foundation Course में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए QR Code को Scan कीजिए।

Steps for Mastering the KARMA Theory

नया सत्र प्रति वर्ष

01 जुलाई से प्रारंभ

विशेष आकर्षण

- कर्म सिद्धांत के गूढ़ रहस्यों का सरल और रोचक अध्यापन
- व्यवस्थित क्रमबद्ध अध्ययन (Systematic Step-by-step Study)
- अध्ययन को Practical जीवन में उपयोगी बनाने का प्रशिक्षण
- Online तथा Offline Classes
- विद्यार्थियों हेतु पुस्तकों की निःशुल्क व्यवस्था
- Karma Pragyapti App पर सभी पुस्तकें उपलब्ध
- समय-समय पर Quiz, Open Book Exam, शिविर आदि का आयोजन
- कोर्स के अनुरूप Certificate एवं Degree

कोर्स संचालक

CENTRE FOR JAIN STUDIES AND CERTIFICATION

तत्त्वावधान : आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान तथा आरुग्गबोहिलाभं

C/o आरुग्गबोहिलाभं, जवाहर विद्यापीठ के पीछे, बाँठिया स्कूल के पास, किसमीदेसर, भीनासर बीकानेर (राज.), 334403 +91-74250-66858 cjsc.connect@gmail.com

॥ जय महावीर ॥

अभिमोक्षम्

10 May to 26 May 2024

1008+ रजिस्ट्रेशन

(संपूर्ण भारत से)

FOR MORE
DETAILS CONTACT
+91 9827344055
+91 7021380109

SCAN NOW!!

1000+ न्यू फ्रेंड्स
पूर्ण आवासीय शिविर
स्नान त्याग व संवर स्वैच्छिक
आवागमन खर्च व सामायिक किट
कंप्लीट डिजिटल डिटॉक्स (मोबाइल त्याग)

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261

helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261